आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन

उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक

डॉ. सुभाष जैन, उज्जैन

प्रमुख सलाहकार

श्री प्रेमजी डूंगरवाल

35, तिलकनगर, इन्दौर

मोबा. नं.94253-13434

संपादकीय कार्यालय

डॉ.सुभाष जैन

46,सखीपुरा,उज्जैन-456001 (म.प्र.)

मोबा. नं.-94250-91012

E-mail-Subash3333@yahoo.co.in

इन्दौर कार्यालय

प्रफुल्लकुमार जैन ''पप्पू''

1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़

इन्दौर-452009 (म.प्र.)

5057087, 5057067

मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O से श्री अभ्युदयफाउण्डेशन, उज्जैन के नाम सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी।

-डॉ.सुभाष जैन

अरिहंत भगवंत की प्राप्ति हो जाने से उद्धार हो ही जाय ऐसा नहीं है। पारस एवं लोहे का संबंध होने में बीच में जो मलमल का पर्दा हो तो क्या लोहा स्वर्ण बनेगा? नहीं। वैसे ही भौतिक पदार्थों की प्राप्ति का आवरण रखकर ही हम अरिहंत परमात्मा को मिले है। इसलिये जीव शिवरूपी-परमात्मा से दूर रहा है।

आर्शीवाददाता

प.पू.मालव भूषण आचार्य श्रीनवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक

प.पूज्य आचार्यश्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन

अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

पंचिंदियाणि कोहं, माणं, मायं तहेव लोहं च।
दुज्जयं चेव अप्पाणं, सव्वमप्पे जिए जियं।।

पांच इन्द्रियों, क्रोध, मान, माया, लोभ और अपनी दुर्जय आत्मा-ये दस शत्रु है। एक आत्मा को जीत लेने पर सब जीत लिए जाते हैं। ***- उत्तरा. सूत्र. 9.36***

पाथेय

हे प्रभु! मेरा विचार शान्त एवं हृदय एकाग्र है। अन्तर ही गहन भक्ति भावना एवं असीम विश्वास से, तुम्हारी ओर मुड़ता हूं और अनुभव करता हूं- कि तुम्हारा प्रेम सर्व सक्षम है और तुम्हारा न्याय पृथ्वी पर करेगा राज्य। अब वह घड़ी समीप है जब आखिरी पर्दा उठेगा और दूर होंगे सब विरोध और उनके स्थान पर शान्ति एवं सामन्जस्य पूर्ण प्रयास का युग होगा आरम्भ। मन में एकाग्रता और हृदय में शांति लिये मैं तुम्हारी और उन्मुख हूं और मेरा पूरा अस्तित्व तुम्हारे समीप्य से हो रहा है रोमांचित। वर दो प्रभु कि मैं सदैव सर्वत्र एवं सकल प्राणियों में, कर सकूं तुम्हारा ही दर्शन, पा सकूं तुम्हारी ही अनुभूति। इस विश्व से नष्ट हो जाएं समस्त हिंसक वृत्तियों और घृणा विद्वेष के अराजक तत्व हो जाए समूल नष्ट। स्वामी सभी के हृदय से दूर हो जाएं समस्त संशय एवं भय के तन्तु द्रोह पराजित हो जाएं और उसके स्थान पर तुम्हारे महान प्रेम का आलोक फैल जाय समस्त भूमंडल में।

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रूपये
आजीवन	1000/- रूपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रूपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रूपये
एक प्रति	10/- रूपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-22 फाल्गुन-चैत्र मार्च 2017 अंक (3)

विषय-सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय	1
2- विषय सूची	2
3- जीवन परिवर्तन का खेल (सम्पादकीय)- डॉ. सुभाष जैन	3
4- मार्गानुसारी के 35 गुण	4
5- गुरूदेव का पुण्य स्मरण : सुनते है दया गुरू की रोज बरसती है। एक बून्द जो मिल जाये, तकदीर बदलती है-डॉ. सुभाष जैन, हे गुरूवर !	5-6
6- श्री कयावन्ना-चरित्रम्-आचार्यश्री जयानंदसूरीश्वरजी म., खाने में सफेद बाल	7-8
7- तीर्थाधिराज शत्रुंजयगिरि के पंद्रहवें उद्धार का अपूर्व इतिहास	9-10
8- एक पूर्व स्मरण : प्रातः 6.01 बजे फोन आया-मैं आपके घर आ रहा हूं, दया धर्म का मूल है	11-12
9- पाप की सजा भारी...! -प.पू.आचार्य श्री अरूणविजयजी म., आत्मा की ज्योति	13-14
10-सागर समुदाय के गौरव.....पूज्यपाद मालवोद्धारक आ.श्री चन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.	15-16
11-धर्म पुरूषार्थ- जैनाचार्य श्री जितरत्नसागरजी 'राजहंस'	17
12-मानव और मानवता का सत्कार है दीक्षा--डॉ.दिलीप धींग	18
13-नवकार मंत्र का प्रभाव...., दया धर्म का मूल है	19-20
14-चोरी हुई आंगी वापिस मिल गई- पू.मुनिश्री जिनचन्द्रविजयजी म.	21-22
15-मैं अमरकुमार- पू.आ.श्री विजयमुक्ति/मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म.	23-25
16-कालचक्र को समझो...!- मुनि विरक्तसागरजी म.	26
17-ज्योतिष और अनुभव-डॉ.राधेश्याम अग्रवाल, दूध और खून	27-28
18-शासन क्या है? उसकी प्रभावना कैसे होगी-? पं.गुणसुंदरविजयजी गणी	29
19-वर्ग पहेली क्रमांक-267	30
20-ज्ञान गंगोत्री कमांक-267 -पंन्यास प्रवर मृदुरत्नसागरजी म.	31
21-जीवन और धर्म- केवलचन्द्र जैन, कलयुगी बेटा-एस.सी.कटारिया	32
22-आगमोद्धारक भविष्य फल-मार्च 2017-अनु दीपक जैन	33
23-शासन समाचार	34-39
24-हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण,सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है	40

संपादकीय

जीवन परिवर्तन का खेल

वर्तमान युग में हम सब लोगों का जीवन किसी न किसी रूप में जटिलताओं में करूरता और कुटिलताओं से ग्रस बन गया है। परम्परागत जीवन प्रणाली में आधुनिकता से जर्बजस्त परिवर्तन और संस्कारहीनता के संकट से हर कोई व्यक्ति संघर्ष करता नजर आता है, समस्त वातावरण, रिश्ते-नाते, आत्मयीता कौसों दूर होकर सिर्फआडम्बकारी रह गये, लगते है। टीवी आदि पर आनेवाले और शहरों में होने वाले बड़े-बड़े धार्मिक आयोजनों में प्रख्यात साधु-संतों, आचार्य भगवंतों के उपदेशों का धर्मग्रंथों का प्रभाव पड़ता दिखाई नहीं देता है, अगर प्रभाव पड़ता तो जीवन शैली में बदलाऊ भी दिखाई देता परन्तु ऐसा कुछ लगता नहीं है बल्कि संस्कारहीनता से ग्रस्त तन-मन पर पाश्चात्य चाल-चलन और तौर तरीकों का गहरा रंग चढ़ते देर नहीं लगती है आश्चर्य होता है यह सब देखकर कि यह सब क्या होता जा रहा है?

समाज के परे लिखे समृद्ध लोगों को कुपथगामी देखकर लगता है कि हमारे द्वारा मूल पर ही प्रहार किया गया है। इसी कारण से माँ-बेटी, पिता-पुत्र सभी अपनी मर्यादा और आस्था के दामन को छिन्न-भिन्न करते नजर आ रहे है, संस्कारों की शोभा का लगता है कि अपहरण हो गया है, इन्सानियता भी झिझक रही है, ऐसा लगता है, हमें संकीर्ण, मानसिकता, स्वार्थ ने अमर्यादित बना दिया है, जब संस्कारों की परवाह नहीं करते है तभी आसुरी और राक्षसी प्रवृत्तियां पनपती है और हमें शैतान बना देती है। संस्कारों को जब हम नजर-अंदाज कर देते है तो उत्प्रेरक वासना जाग्रत करने वाली वेशभूषा, अश्लील आचरण, अनैतिक संबंध हम पर हावी हो जाते है जिसके परिणाम हमेशा ही विपरित आते है, यह सब जानते हुए भी हम संस्कारहीन गलत रास्तों पर आगे बढ़ते रहते हैं।

इस आधुनिक युग में प्रतिदिन नई चीजें, नई तकनीकी, आधुनिक नये विचारों से हम प्रभावित होते रहते हैं, उनके प्रवाह में बह भी जाते है, यह ठीक है कि वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं में नित्य नये आविष्कार होंगे और होते रहते है परन्तु वहां पर मनुष्य का निर्माण नहीं हो सकता है, परमाणु बम बना सकते है लेकिन परमात्मा नहीं बन सकते है, विज्ञान से इस सभ्यता का अंत हो सकता है परन्तु हमें सत्पथ नहीं मिल सकता है, आधुनिकता हमें तोड़ती है, जोड़ती नहीं है, यह कहानी हर घर की है, घर में एक टेलीफोन था तो सब जुड़े हुए थे, मोबाईल ने सबको अलग-अलग करके रख दिया है। इन विषमताओं का असर जब जीवन को टूटने की कगार पर पहुंचा देता तब तक बहुत देर हो चुकी होती है, विश्वास, संकल्प, आस्था, श्रद्धा, सभी का हमारे जीवन से अभाव हो जाने से जीवन सरिता सूख जाती है। इन सबसे कैसे बचे, कैसे हमारे परम्परागत संस्कारों को हम बचाकर रखें? ऐसे क्या प्रयत्न हो आधुनिकता और स्वार्थ से वातावरण से हमारा जीवन आचरण प्रभावित न हो पाये?

ऐसा नहीं है कि उपाय नहीं है हमें सिर्फअपनी जीवन शैली को बदलने की आवश्यकता है। वातावरण के प्रभावों से अपने आपको बचाये रखना होगा, अपनी कुल मर्यादा संस्कार और संस्कृति की सच्चाई को समझकर उस पर चलना होगा न अपने जीवन की आधुनिकता से दूर करना है, न तकनीकी से दूर होना सिर्फ हमें अपने सत्पथ को नहीं छोड़ना है, यह करने पर भी आप जी सकते है और समय के साथ चल भी सकते है। यह कोई मुश्किल काम नहीं है।

मैं आज भी ऐसे लोगों के सम्पर्क में हूं जिनके घर में न टीवी है न फोन है न मोबाईल है और नहीं उन्हें सायकिल चलाना आती है, इन सब के बावजूद उन्होंने उच्च शिक्षा ग्रहण कर उच्च शासकीय पद प्राप्त किया है और उनका जीवन सुखमय व्यतीत हो रहा है, जीवन में कोई अभाव वे महसूस नहीं करते है सिर्फ समाचार पत्र और पत्रिका नियमित वाचन कर संसार की सब घटनाओं से अपने को जोडकर रखे हुए हैं अन्य आधुनिक कहलानेवाले लोगों से उनका ज्ञान कहीं अधिक है, अच्छी अंग्रेजी जानते है, धर्म संस्कार, संस्कृति, परम्परा और आधुनिकता का एक अद्भूत समन्वय उनके जीवन में देखने को मिलता है, अपना कुछ भी नहीं छोड़कर भी उन्होंने अपने जीवन में आधुनिकता से सब कुछ पाकर अपने जीवन को संवारा है। ऐसे हजारों उदाहरण हमारे सामने है।

जैनत्व का एक सशक्त उदाहरण दिखा है जो हमारी ऋषि संत परम्परा का परिचायक है, दीक्षा के दो अतिमूल्यवान अर्थ होते है, एक है शिक्षा प्राप्त करने के लिये अपना संपूर्ण जीवन गुरू आज्ञा में समर्पित कर देना और दूसरा है अपनी इच्छाओं और अभिलाषाओं अत्यधिक सीमित कर भी सुन्दर तरीके से बगैर किसी अभाव और कमी के जीवन जीना। मैंने अनुभव किया है, ऐसे संत मुनि भगवंतों से भेंट हुई है जिनके ज्ञान के सामने अच्छा पढ़ा लिखा भी अनपढ़ लगता है जिनके संस्कारों से समृद्ध जीवन के आगे अरबपति की सम्पदा भी कम लगती है। बहुत विशाल महाभवन के मालिक से उनका भवन किसी भी रूप में छोटा नहीं लगता है, क्योंकि नित्य प्रति की सब सुविधाएं उस महाभवन से कहीं अधिक सुविधाजनक उपके पास है। आप ही बताईये क्या कमी है इस जीवन में? अरे प्राचीनकाल में तो एक मेनका ही थी जिसने महर्षि के जीवन में आग लगाने का काम किया, आज तो चारों ओर मेनका ही मेनका होने के साथ सारा वातावरण वासना, स्वार्थ, हिंसा से भरा हुआ ऐसे में अपने जीवन को बचाकर धर्म की प्रभावना करना और अन्यों को मार्गदर्शन देना निश्चित ही यह जीवन प्रणाली सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि अपने जीवन का समर्पण कर अन्यों के जीवन में प्रकाश फैलाने का काम साधु-संत ही कर सकते है। तो आईये! साधु जीवन से प्रेरणा लेकर हम हमारे जीवन में ऐसा बदलाव लाये जो भूले भटके संस्कार विहीन लोगों के जीवन में परिवर्तन की ज्योति जलाये। इसी आशा से!

- डॉ. सुभाष जैन

मार्गानुसारी के 35 गुण

*आ.श्री विजय जिनोत्तम सूरीश्वरजी म.

अनादिकाल से संसार में भ्रमण करता हुआ आत्मा जब कुछ निर्मल भाव-दशा में प्रवेश कर धर्म मार्ग के सम्मुख आता है, तब उसे मार्गानुसारी कहते है। गृहस्थ को श्रावक की उच्च भूमिका पर चढ़ने से पूर्व मार्गानुसारी होना जरूरी है। तभी तो वह इस मार्ग पर चलकर आगे श्रावक धर्म ग्रहण करने की योग्यता प्राप्त कर सकता है। धर्मबिन्दु प्रकरण में तथा कलिकाल सर्वज्ञ आचार्यश्री हेमचन्द्रसूरिजी म. ने योगशास्त्र में इन गुणों का विशद रूप में वर्णन किया है। संक्षेप में मार्गानुसारी के 35 गुण इस प्रकार है-

1- न्यायसम्पन्न विभव- अनीति, हिंसा आदि क्रूर उपायों को त्याग कर न्याय-नीति तथा मर्यादाओं के अनुसार धनार्जन करने वाला।

2- शिष्टाचार की प्रशंसा- ज्ञान सम्पन्न तथा शील-सदाचार सम्पन्न व्यक्ति शिष्ट कहा जाता है। ऐसे पुरूष जिस प्रकार का आचरण करते है, वही शिष्टाचारी है। इस प्रकार के शिष्टाचार की प्रशंसा करना और यथाशक्य उसका अनुसरण करना।

3- विवाह-मर्यादा का पालन- समाज में विवाह के संबंध में भी कुछ विशेष मर्यादाएं होती हैं। जैसे-अन्य गोत्रीय के साथ विवाह करना तथा जाति, स्वभाव, आयु, आचार, धार्मिक मान्यता, शिक्षा आदि में विषमता तथा विपरीतता न होना।

4- पापभीरू- कुछ पाप ऐसे होते हैं जिनका परिणाम इसी जन्म में प्रत्यक्ष भोगना पड़ता है। जैसे चोरी, परस्त्री-गमन, जुआ, मद्यपान आदि। कम से कम ऐसे घोर पाप कर्मों से डरते रहना चाहिये।

5- प्रसिद्ध देशाचार का पालन- अपनी संस्कृति एवं अपने देश व समाज के अनुरूप खान-पान, वेषभूषा आदि व्यवहार रखना।

6- निन्दा परित्याग- किसी को नीचा दिखाने के लिये किसी की बुराई या निंदा नहीं करना।

7- योग्य घर में निवास- शुभ स्थान पर घन बनाना। उसमें अधिक दरवाजे न हो पास- पड़ोस अच्छा हो आदि बातों का ध्यान रखना।

8- सदाचारी की सेवा- अच्छे और गुणी जनों की संगति करना।

9- माता-पिता की सेवा करना।

10-उपद्रव के स्थान का त्याग- जहां बार-बार दुष्काल आदि आपदाएं आती है। जातीय व धार्मिक उपद्रव/दंगे होते रहते है तथा जहां बीमारी, चोरी, डकैती आदि का भय बना रहता हो, ऐसे स्थान को छोड़ देना चाहिये।

11-निन्दित कार्य नहीं करना- अपने देश, जाति धर्म आदि की दृष्टि में जो कार्य घृणित व निन्दित हो, वह नहीं करना।

12-आय के अनुसार व्यय करना- 'तेते पांव पसारिए जेती लांबी सोड' की नीति का पालन करना।

13- वैभव के अनुसार वेष-भूषा-वेषभूषा में अवस्था तथा अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा व सम्पन्नता आदि का ध्यान रखना।

14-बुद्धि के आठ गुणों का सेवन- शास्त्र सुनना, धारण करना, चिन्तन करना आदि बुद्धि के आठ गुणों को अपनाना।

15-शुश्रूषा- धर्म तथा नीति के वचन सुनने में रूचि रखना।

16-नित्य धर्मकथा सुनाना अथवा सेवा भावना।

17- अजीर्ण (अपच) होने पर उस दिन या एक समय भोजन नहीं करना।

18-धर्म,अर्थ तथा काम- ये त्रिवर्ग है, जीवन में इनका संतुलन बनाये रखना।

19-अतिथि (गृहस्थ) साधार्मिक तथा साधुओं की सेवा करना।

20-कदाग्रह त्याग- असत्य पक्ष का आग्रह नहीं रखना।

21-गुणों व गुणीजनों का पक्ष लेना।

22-जिस देश तथा जिस समय में जाना निषिद्ध हो, तो नहीं जाना।

23-अपनी शक्ति व सामर्थ्य का विचार करके व्यवहार करना।

24-सदाचारी, ज्ञानी तथा वृद्धजनों की सेवा करना।

25-जो अपने ऊपर आश्रित हो, जैसे माता-पिता, पत्नी, संतान, नौकर एवं पशु आदि उनका उचित पालन-पोषण करना।

26-दीर्घदर्शिता।

27-विशेषज्ञता-विवेकशीलता।

28-कृतज्ञता।

29-लोकप्रिय-विनय, मधुरता आदि गुणों से लोकप्रियता बढ़ती है।

30- लज्जालुता-बुरे कामों से बचते रहना।

31-दयालुता।

32-सौम्यदृष्टि।

33-परोपकार करने की भावना।

34-काम,क्रोध,लोभ,अहंकार आदि छह अंतरंग शत्रुओं को छोड़ना।

35-इन्द्रियों को अपने वश में रखना। **- योगशास्त्र, प्रकाश**

* डॉ. सुभाष जैन

सुनते है दया गुरू की रोज बरसती है।
एक बून्द जो मिल जाये, तकदीर बदलती है।।

भारत के भाग्य के अलिखित विधान के निर्माता, जीव जगत की परख तथा हृदय के करूणामय वात्सल्य से समाज को नया विश्वास, नई प्रेरणा, सवंल्य आदर्श प्रदान कर जीवन को सुन्दर बनाने वाले **पूज्यपाद गुरूदेव श्री नवरत्नसागरजी महाराजा** भक्तों के हृदय में निवास करते है। गिरते मानव जीवन मूल्यों के प्रति तथा सांस्कृतिक क्षरण से चिंतित रहने वाले गुरूदेव अक्सर इस बारे में बात नहीं करते थे परन्तु वे इन सब बातों को भलीभांति जानते हैं, बात नहीं करने का कारण भी महत्वपूर्ण है। और वह यह है कि इन प्रपंचपूर्ण चर्चाओं से किसी के प्रति भी कोई अच्छी-बुरी बात मुंह से नहीं निकले किसी के प्रति कुछ बात कहने सुनने पर, सबसे पहले हमारे मन को खराब करना है, इसलिये पूज्यश्री अक्सर तटस्थ भाव से हल्की मुस्कान से अपनी अभिव्यक्ति प्रदान कर देते थे। पूज्यश्री की साधना परमात्मा की तरह निष्काम आराधना और तप जप शक्ति के द्वारा संसारी प्राणियों को दुःखों की दावाग्नि से निकाल सुखों के सागर तक पहुंचाने व सुधारने हेतु सतत प्रयासरत रहे है वे हमारे दग्ध मन को शीतलता प्रदान करने, समता का जल पिला रहे है। पूज्यश्री की करूणामयी आँखों में विश्व वेदना छुपी हुई थी, वे दयामयी अहिंसा को विभिन्न तरीके से अपने जीवन में अपनाने का मार्गदर्शन, प्रेरणा, उपदेश, प्रदान कर विश्व को हिंसा, हत्या, बर्बरता से बचाने का अभय प्रदान करते रहे हैं।

मानव के सच्चे प्रहरी पूज्यश्री एक ऐसे कालजपी संत थे जो इस वय में भी पैदल विहारी होने के साथ १८७ वीं ओली के आराधक रहे है, यही नहीं आपश्री ने कभी भी अपने जीवन में दो समय आहार का उपयोग नहीं किया है। अरे! वर्ष में अधिकांश दिन तो वे आहार ग्रहण ही नहीं करते है। मैं यह कह सकता हूं कि वे अपनी सांसों की सामिधा से साधना के ऊंचे महल बनाते रहे है। यही नहीं पूज्यश्री अपने रक्त की एक-एक बूंद से मानवता की क्यारियों सींच कर संस्कारों, धर्म, साधना के फूल खिलाकर वास्तव में आध्यात्मिक युग का सर्जन करते रहे है।

बेशक! हमें इस बात का गौरव और अभिमान है कि- पूज्य गुरूदेव का जन्म इस युग में हुआ और हमने भी इस युग में जन्म लेकर गुरूदेव का सानिध्य पाया यह निश्चित है कि अगर हम गुरूदेव के सम्पर्क में नहीं आते तो हमारे जीवन की कहानी कुछ और ही होती, हम क्या बनना चाहते है और क्या बन जाते हैं। आज पूज्यश्री के सम्पर्क में आने के बाद यह तो निश्चित है हम वह तो नहीं बने जो गुरूदेव के सम्पर्क में आकर नहीं बनते वे हमारे जीवन निर्माता है। हमें इस बात का भी गर्व है कि आज जैन समाज के पास एक ऐसा पुण्यात्मा संत था जो आध्यात्म में निपुण एवं सामाजिक उत्थान का प्रेरणा स्त्रोत रहा है। आज ऐसा कौन सा व्यक्ति ऐसा है जो एकबार गुरूदेव के आभा मंडल में आने के बाद उनका मुरीद नहीं हो गया है, फिर चाहे वह कोई भी जाति या स्तर का क्यों न हो। वे प्रवचन में और अपने निकट बैठने वाले को अपनी वाणी की अमृत धारा से जब स्नान कराते थे तो व्यक्ति के मन के विकार घुल जाते है। एक बार उनके सम्पर्क में आया व्यक्ति पूज्यश्री को कभी भी भूल नही पाया।

आचार्य गुरूदेव श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा ऐसे आध्यात्म शिल्पी रहे है जिनका शिष्य परिवार जहां भी जाता है वहां धार्मिक आस्था का ज्वार पैदा कर देता हैं। एक माँ जब जन्म देती है तो वह संसार दिखलाती है और जब गुरू जन्म देता है तो वह संसार से पार करा देता है, माँ थपकी देकर सुलाती है तो गुरू भपकी देकर सोये हुए को उठा देते है, गुरू जीवन को सार्थक कर देते है, गुरू का हाथ सर पर रहे तो अनिष्ट से अभय की तसल्ली दिल को होती है, लेखनी से लिखे शास्त्रों को तो समझने की बुद्धि चाहिये लेकिन गुरू तो अंगुली पकड़कर इस जीवन से भी मुक्ति दिलाकर मोक्ष का मार्ग बताते हैं।

हम कई बार बे लगाम होकर बिगड़ी पतंग से उड़ते-रहते है और यह समझते हैं कि सम्पूर्ण आकाश पर मेरा ही अधिकार है, पर जब अपने कर्मों से पतंग जमीन पर आती है तो हमें अहसास होता है कि बिना डोर के पतंग का कोई अस्तित्व नहीं है, यहीं जिन्दगी में गुरू के नहीं होने का अहसास होता है। हमारे जीवन की डोर अगर **आचार्य गुरूदेव श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा** जैसे गुरू के हाथों में होगी तो पतंग हमेशा ऊँचे आकाश में उड़ती रहेगी। कई गुरूभक्तों की डोर थामे आज गुरूदेव उनका जीवन संवारने का काम करते रहे हैं। गुरू चरणों में आने के बाद जीवन सुरक्षित हो जाता है यह अनुभव गुरूदेव के जाने के बाद आज भी होता है।

पूज्य आचार्यश्री के सम्पर्क में आने को मुझे एक जनरेशन के

गेप से अधिक समय हो गया था, मुझे आज भी भायकला मुबंई में पूज्यश्री की आचार्य पदवी का पूर्ण स्मरण है। पूज्यश्री से जुड़ने की, उनके बारे में बात करने की या उनकी कृपा दृष्टि के बारे में जब कोई मुझसे बात करता है तो मेरी आँखों में चमक आ जाती है। मेरे पूरे शरीर में ऊर्जा का संचार हो जाता है। वैसे ऐसा कोई दिन मेरे जीवन में नहीं उगता है जब आचार्यश्री गुरूदेव को मैं याद नहीं करता हूं। विगत २०-२५ साल से मुझे आपश्री की छत्रछाया में जीने का सीखने का सौभाग्य मिलता रहा है। इतने लम्बे अंतराल में मेरे जीवन में अनेक प्रसंग खुश होने और दुःख के उतार-चढ़ाव के बने है परन्तु मैंने हमेशा अपने सिर पर गुरूदेव का वरद्हस्त अनुभव किया है चाहे पूज्यश्री दूर ही क्यों न हो पर आपश्री की निकटता का एहसास हमेशा ही मैने अनुभूत किया है अनेक लोगों ने कई बार पूज्यश्री से मेरे प्रति सामाजिक बैर विरोध भी प्रकट किया पर मैंने कभी भी ऐसी विपरित परिस्थतियों के बीच भी पूज्यश्री के प्रति अपनी सम्पर्क भावना, श्रद्धा-विश्वास को बनाये रखा, मेरी आस्थाओं से मुझे कोई दूर नहीं कर पाया है और न ही गुरूदेव को मुझ से कोई दूर कर सका है।

इतने लम्बे सम्पर्ककाल में मैंने आँखों से देखा तथा उनसे परिचय भी रहा, ऐसे अनेक लोगों को मैंने गुरूदेव से जुड़ते और निकटता बढ़ते हुए देखा पर उनमें से आज कितने ही गुमनामी में चले गये है कितने ही किनारा कर गायब हो चुके है परन्तु मैं आज भी अपनी समर्पण भावना से जुड़कर कार्य करने का प्रयास कर रहा हूं। मेरे जैसे एक साधारण व्यक्ति पर पूज्यश्री की कृपा, अनुकम्पा और मेरे परिवार की हित भावना का मैं व्याख्यान किन शब्दों में करूं? यह तो सभी जानते है कि पूज्य आचार्यश्री करूणावान और वात्सल्य से ओतप्रोत निर्मल मन के संत प्रवर थे। उनकी कृपा सभी पर बरसती रहती रही है, पूज्यश्री परमात्मा के शासन के प्रति १००० प्रतिशत समर्पित एक ऐसे द्रढ इच्छा शक्ति सम्पन्न महासंत थे जो धर्म प्रभावना और जनकल्याण के लिये अपने जीवन के प्रत्येक क्षण का उपयोग कुशलता से करते रहे हैं।

पूज्यश्री किसी भी सामाजिक दबाव-परेशानियों और सामाजिक कुरूतियों को दृढ़ता से नकारते हुए अपना सब मंतव्य देने में तनिक भी संकोच नहीं करते थे, वे पूर्ण आत्मविश्वास के साथ धर्म सम्मन बात के द्धारा लोगों के बीच अपना पक्ष रखकर संतोष प्रदान करते थे, पूज्यश्री के जीवन सूत्र जीवन को चलाने के लिये मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में हमेशा बहुउपयोगी है। पूज्यश्री धर्मपूर्ण जीवन जीने में ही परिवार की सुख-शांति समृद्धि मानते थे पूज्यश्री के जन्मदिवस पर हार्दिक आदराजंलि।

हे गुरूवर!

लगाया जो रंग भक्ति का,
उसे छूटने न देना।
गुरू तेरी याद का दामन,
कभी छूटने न देना।।
हर सांस में तुम और तुम्हारा नाम रहे।
प्रीति की यह डोरी, कभी टूटने न देना।।
श्रद्धा की यह डोरी, कभी टूटने न देना।
बढ़ते रहे कदम सदा तेरे ही इशारे पर।।
गुरूदेव ! तेरी कृपा का सहारा
छूटने न देना।
सच्चे बनें और तरक्की करें हम,
नसीबा हमारी अब रूठने न देना।
देती है धोखा और भूलाती है दुनिया,
भक्ति को अब हमसे लूटने न देना।।
प्रेम का यह रंग हमें रहे सदा याद,
दूर होकर तुमसे यह कभी घटने न देना।
बड़ी मुश्किल से भरकर रखी है
करूणा तुम्हारी....
बड़ी मुश्किल से थामकर रखी है
श्रद्धा-भक्ति तुम्हारी....
कृपा का यह पात्र कभी फूटने न देना।।
लगाया जो रंग भक्ति का,
उसे छूटने न देना।
गुरू तेरी याद का दामन,
कभी छूटने न देना।।
जन्मदिन पर हे गुरूदेव!
आपके श्रीचरणों में
अनंत कोटि प्रणाम....

श्री कयावन्ना-चरित्रम्

✱ आचार्य श्री जयानंदसूरीश्वरजी म.सा.

गतांक से आगे....

इस प्रकार सासु के वचन से वें चारों युवतियां उसके भय से नवनीत के समान मृदुता को प्राप्त हुई धीरे-धीरे बढ़े हुए परिचय और राग-उदय आदि से कयवन्ना नामक उस पुरूष पर दाम्पत्य भाव करने लगी। पाश्चात्य भवितव्य-योग की प्रबलता से यह पुरूष परिपूर्ण तारूण्य-लावण्य रूपी पानी की वापी सदृश उन चारों के साथ भोग को भोगते हुए बारह-मुहूर्त के समान बारह वर्ष व्यतीत किये और उन युवतियों में कयवन्ना के चार पुत्र हुए और बढ़कर इन पुत्रों के लेखन-वाचन आदि में पटुता को प्राप्त होने पर वह वृद्धा मन में सोचने लगी कि मुझे चार योग्य पौत्र के होने पर कैसे-भी राजा मेरे धन-भवन आदि को लेने में समर्थ नहीं होगा, इसलिये यह पुरूष गृह से बाहर ही कर देना चाहिये इस प्रकार विचार कर उनसे कहने लगी कि-

हे वधुओं! जिसके लिये यह पुरूष लाया गया था, वह सिद्ध हो चुका है, अब तुम्हारे पुत्रों के हो जाने पर इस पुरूष की अपेक्षा नहीं है। इस कारण से बारह-वर्ष पूर्व जिस स्थान से यह जैसे लाया गया था, उसी स्थान पर वैसे ही छोड़ दो। तब वे वधुएं कहने लगी कि- हे सासु! आप ऐसा अघटित क्यों कह रही हो? जिसे गृह में लाकर और पति के समान मानती हुई हम पुत्रवती हुई है और धन-गृह की रक्षा की है तथा जिसके साथ बारह-वर्ष पति के समान हमने निर्लज्ज होकर सुख का अनुभव किया है उसे हम अब अधम के समान कैसे छोड़े? इस प्रकार उनके द्वारा कहने पर वह वृद्धा बड़े कोप रूपी आडंबर को दिखाती हुई कहने लगी कि-अरे! क्या इस प्रकार तुम ही मेरी सासुएं बनी हो? जो इसे तुम यहां चिर समय तक रखोगी तो यही सकल धन-भवन आदि का नायक होगा, इसलिये इसे शीघ्र से इस गृह से बाहर निकाल देना चाहिये और वैसे करने में लेशमात्र भी आलम मत करो, किन्तु इसी रात्री में तुम इसे करो। तत्पश्चात उन्होंने हम वैसा ही करेंगी इस प्रकार उस वृद्धा से कहकर और गुप्त रीति से बनाये गये चार लड्डुओं में चार महा-मूल्यवान रत्नों को डालकर और उनको कयवन्ना के उत्तरीये में बांधकर रात्री में गाढ़ निद्रा में मग्न इसे उसी खाट के ऊपर रखकर और उसे उठाकर उसे देवालय में जाकर रखा।

प्रभात के समय देवालय में घंटे के शब्द से कयवन्ना जाग उठा। शीघ्र से उठकर वहां पर बैठे हुए उसने चारों और देखते हुए उसी खाट पर अति-मलीन जीर्ण बिछौनी में पड़े हुए खुद को देखा। उस अवसर पर वह सोचने लगा-क्या यह स्वप्न सत्य है अथवा असत्य है? क्योंकि अब वे मेरी चारों प्रेयसीयां नहीं दिखाई दे रही है और वे चारों शिशु नहीं दिख रहे है! पूर्व में मैं जहाज-व्यापारी के साथ देशान्तर में व्यापार करने के लिये रात्रि में गृह से निकलकर यहां ही सोया था, वह भी झूठ नहीं है किन्तु सत्य ही है, तो जो मुझे चारों युवतियों के साथ सुखानुभूति हुई थी और चिर समय तक चारों पुत्रों के साथ जो आल्हाद हुआ था, क्या मैं इसे स्वप्न समान ही मानूं? नहीं, नहीं जागता कोई मनुष्य स्वप्न में देखा गया नहीं देखता है और जागते मैंने उन स्त्रियों तथा पुत्रों का चिर समय तक लालन किया है, अथवा तो उसे मैं भ्रान्ति कैसे मानूं? इस प्रकार उत्कट कोटि की कल्पना से भ्रान्त हुआ यह कयवन्ना उसे देवालय में अर्चक से पहचाना हुआ अपने गृह में लाया गया और वहां आकर गृह के अंदर प्रवेश करते हुए उसने एक बारह वर्षीय बालक को देखा।

हे वाचकों! यह शिशु कौन है? यह तुम नहीं जानते हो, इसलिये ही मैं इसे निवेदन करता हूं कि-जब यह कयवन्ना विदेश गया था, तब उसकी पत्नी जयश्री गर्भिणी थी, समय होने पर उसने ही पुत्र को जन्म दिया और वह ही आज बारह वर्ष का हुआ है। आये हुए पति को देखकर प्रमोदित हुई वें दोनों पत्नीयों उसके संमुख जाकर सम्मान किया। उस अवसर पर वह बड़े आनंद से निज अनुभव किये हुए अति-अद्भूत वृत्तांत को पत्नीयों के आगे कहने लगा। तब शाला में जाने की इच्छावाले शिशु ने भोजन मांगा, तब कयवन्ना ने गाँठ खोलकर उसे एक लड्डू दिया। उसे लेकर बालक लेखन-शाला में आ गया और मध्यान्ह के अवकाश हो जाने से द्वितीय छात्र के साथ एक स्थान पर बैठकर उस लड्डु को तोड़ डाला, उसके मध्य से एक अमूल्य महारत्न उछलकर और थोड़ी दूरी पर गिर पड़ा। अति-देदीप्यमान उस रत्न को लेकर कोई कान्दविक-शिशु पलायन करने लगा और अपने उस रत्न को लेने के लिये उसके पीछे कयवन्ना का पुत्र भी दौड़ा। कितने ही दूर जाकर उस शिशु ने अपने दुकान में प्रवेश किया, तब उस दुकान में यह रोते हुए खड़ा हुआ और कहीं से आये हलवाई ने उसके कारण को जानकर और अपने पुत्र के हाथ में बहुमूल्य और अलभ्य रत्न को देखकर तथा उसे लेकर गुप्त स्थान में रखकर रोते हुए उस बालक को प्रचुर मिष्टान्न के दान से संतुष्ट किया। इस ओर मध्यान्ह-वेला में कयवन्ना दोनों पत्नीयां सहित खाने की इच्छा से उन मोदकों को तोड़ा, तब उनके मध्य में महा-मूल्यवान तीन रत्नों को देखें पश्चात उन रत्नों को बेचकर विविध बड़े व्यापारों को करते हुए बहुत धन का

अर्जन कर अल्प दिनों में ही महाश्रेष्ठी की पदवी प्राप्त की। अब इस प्रकार सकल ऋद्धिशाली कयवन्ना उन दोनों सुशील पत्नीयों के साथ परम सुख का अनुभव करते हुए सुखपूर्वक को व्यतीत करने लगा।

अब अन्य दिवस राजा श्रेणिक का अति-प्रिय सेचनक नामक हाथी पानी पीने की इच्छा से सरोवर में आया था। उस सरोवर में अंदर प्रवेश करता हुआ सेचनक एक अत्यंत बलवान जल-जन्तु से गाढ़ आक्रांत हुआ। वैसी अवस्थावाले उस सेचनक को देखकर, उसे छुड़ाने के लिये लोगों के द्वारा किये गये सकल भी उपाय व्यर्थ ही हुए। उससे अत्यन्त खेदित होते हुए राजा ने उस नगर में प्रति चौराहें पर ढोल बजवाया कि-जो कोई भी इस सेचनक हाथी को उससे छुड़ायेगा, मैं उसे बहुत धन और अपनी पुत्री दूंगा। यह सुनकर हलवाई सोचने लगा कि जो मेरे द्वारा महा-मूल्यवान रत्न प्राप्त किया गया है, जो उसे इस अवसर पर उपयोग करूं तो मुझे बड़ा ही लाभ होगा। इस प्रकार निश्चय कर और उस रत्न को लेकर तथा वहां आकर उस रत्न को जल में फेंका। उस रत्न के प्रभाव से पानी दूर चला गया। पश्चात उस रत्न को गज के समीप में रखा और उस रत्न के प्रभाव से वहां से पानी के दूर चले जाने पर तत्काल ही इसे छोड़कर वह जल-जन्तु पलायन करने लगा, क्योंकि जलचर प्राणियों के बल जल में ही रहता है, उसके बाद अपाय रहित बना सेचनक अपने स्थान में आया। राजा उसके ऊपर अत्यंत हर्षित हुआ था परन्तु इस आश्चर्य को देखकर कुशाग्र बुद्धिवाले अभयकुमार ने विचार किया कि ऐसे साधारण हलवाई के घर में ऐसा महामूल्यवान रत्न कदापि संभवित नहीं है, जैसे कि मरूभूमि में कल्पवृक्ष के समान किंतु इस रत्न का स्वामी कोई अन्य ही होगा, इस प्रकार सोचकर अन्वेषण करते हुए इसने इस रत्न के नायक अंत कयवन्ना को जाना। इसलिये उसी को राजकन्या दी और बहुत धन आदि भी दिया। उसके बाद यह सर्वत्र कयवन्ना-शाह नाम से प्रख्यात हुआ और सभी पौरवासीयों को मान्य हुआ। रति को भी लज्जित करती हुई तीन प्रेयसीयों के साथ स्वेच्छा से भोग को भोगता हुआ कयवन्ना-शाह अत्यंत प्रमोदित हो रहा था। वहां से लेकर कयवन्ना-शाह की गाढ़-प्रीति भी प्रधान-मंत्री अभयकुमार के साथ अत्यन्त बढ़ने लगी थी।

अब एक दिन कयवन्ना-शाह को पूर्व में हुई अपनी उन चार स्त्रियों की और उतने ही पुत्रों की स्मृति होने लगी थी और उनको देखने के लिये अतिउत्सुकता भी हो रही थी, परन्तु उस भवन में रहते हुए भी बारह-वर्ष गृह से कभी-भी बाहर नहीं किया गया था तथा उस आवास को नहीं जानते हुए उसने समस्त ही अत्यंत श्रेष्ठ मित्र अभयकुमार से कहा, तब अभयकुमार ने इससे इस प्रकार से कहा कि-हे मित्र! तुम धैर्य धारण कर, थोड़े काल की अपेक्षा करो, अवश्य ही मैं शीघ्र से तुमको उन पुत्र-पत्नीयों से मिलाऊंगा। जो कि मैं इसे अतीव दुष्कर जान रहा हूं तो भी किसी उपाय से मैं उसे साधूंगा ही। जैसे कि- उपाय से जो शक्य है, उसे पराक्रमों से नहीं किया जाता। जैसे कि कौएं ने कनक-सूत्र से कृष्ण-सर्प को मार डाला था। उसका उदाहरण इस प्रकार से है कि-

किसी एक वृक्ष पर कौएं दम्पती निवास कर रहा था। उन दोनों के बालकों को वृक्ष के कोटर में स्थित काले सर्प ने खाये थे। उसके बाद पुनः गर्भवती हुई कौवी कहती है कि- हे स्वामी! यह वृक्ष छोड़ जाय! यहां जब तक काला सर्प है तब तक हम दोनों को कभी भी संतान नहीं होगी। तब कौएं ने कहा कि- हे प्रिये! डरो मत! मैंने बार-बार इसका अपराध सहन किया है, अब पुनः क्षमा नहीं करूंगा। तब कौवी ने कहा कि आप इस बलवंत के साथ कैसे विग्रह करने के लिये समर्थ हो? कौव ने कहा- इस चिन्ता से पर्याप्त हुआ। कौवी ने कहा-तो जो कर्त्तव्य है आप उसे कहो। कौवे ने कहा कि- हे प्रिये! यहां निकट सरोवर में सतत राज-कुमार आकर स्नान करता है। स्नान के समय उसके अंग से नीचे उतारें और तीर्थ शिला के ऊपर रखे स्वर्ण-सूत्र को चोंच से पकड़कर और लाकर इस कोटर में धारण कराऊंगा। अब कभी स्वर्ण-सूत्र कोा पत्थर के ऊपर स्थापित कर स्नान करने के लिये राज-पुत्र के जल में प्रवेश करने पर कौएं के द्वारा वह किया गया। अब स्वर्ण-सूत्र के अनुसार प्रवृत्ति करते हुए राज-पुरूषों ने उस कोटर में दिखाई देते काले सर्प को मार डाला। इसलिये ही मैं कह रहा हूं कि उपाय से ही जो संभव है, इत्यादि। (आगे और भी है...!)

खाने में सफेद बाल- *महेश ने दोपहर का खाना खाते-खाते अपनी पत्नी उमा से पूछा कि -आज की रसोई क्या सासु माँ ने बनाई है। उमा ने उसे गरम-गरम चपाती परोसते हुए कहा हाँ-लेकिन मैं आपके टेस्ट व पारखी नजर को मान गई, आखिर आपने मम्मी के गुणवत्ता भरे व्यंजनों को झट से पहचान लिया। नहीं उमा ऐसी तो कोई बात नहीं, महेश ने अपना मुंह बनाते हुए कहा -क्योंकि करीब रोजाना खाने में काला बाल निकलता है, लेकिन आज सफेद निकला है इससे मैं समझ गया कि आज हमारे सासुजी ने खाना बनाया है।*

तीर्थाधिराज शत्रुंजयगिरि के पंद्रहवें उद्धार का अपूर्व इतिहास

गतांक से आगे...!

संघ में सर्वसिद्धांत पारंगत श्री विनयचंद्रसूरी, श्री बृहद्‌गच्छ रूपी आकाश में चंद्र के समान विचरण करनेवाले श्री रत्नाकरसूरी, गौरवयुक्त अंतःकरणवाले श्री देवसूरिगच्छ के श्री पद्‌मचंद्रसूरि, श्री संडेरगच्छ के श्री सुमतिसूरि, भावडागच्छ के आचार्य श्री वीरसूरी, श्री तारागच्छ के श्री सर्वदेवसूरि, ब्राह्मण गच्छ के श्री जगतसूरि, श्री निवृत्तिगच्छ के आम्रदेवसूरि, श्री नाणकगणरूपी आकाश को विभूषित करनेवाले सूर्य समान श्री सिद्धसेन आचार्य बृहद्‌गण के श्री धर्मघोषसूरि, नागेन्द्रगच्छ के श्री प्रभानंदसूरि, हेमसूरि संतानीय पवित्र श्री वज्रसेनसूरि और अन्य कई गच्छों के आचार्य संघपति देशल के साथ संघ में आने को तैयार हो गये थे। चित्रकूट, वालाक, मरू, मालव आदि प्रदेशों में स्थित प्रायः सभी मुनि पधारे थे। श्री सिद्धसूरि सर्वदर्शनी और देशल के साथ चले थे और देशल ने उनका प्रवेश महोत्सव किया था। इस संघ के साथ अन्य संघ, संघपति जैत्र और कृष्ण, हरिपाल, देवपाल, श्रीवत्स कुल के स्थिरदेव के पुत्र लंढक साथ में थे तथा सोनी प्रहलाद, सत्यवचनी उत्तम श्रावक सोढाक, धर्मवीर वीरश्रावक दानेश्वर देवराज आदि गुर्जर भूमि पर जो कोई भी श्रावक थे वे सभी संघ में सम्मिलित हुए थे। उन सभी के आजाने के बाद देशल ने संघ का प्रयाण आगे करवाया। मंडप में स्तंभ की तरह मुख्य जैत्र, कृष्ण, लंढक और हरिपाल ये चार थे। सूबा अलपखान के पास भेंट लेकर समरशाह दरबार में गए। खान के समीप भेट रखी, खान ने संतुष्ट होकर घोड़े के साथ तसरीफदी और समरशाह ने खान से संघ की रक्षा के लिये बात करने पर खान ने दश महावीर संघरक्षा हेतु दिये पश्चात् समरशाह संघनायक पवित्र संघ में मिल गये। संघ में वाद्ययंत्रों के साथ पालखियां घुड़सवार, ऊंट, गाड़ियां आदि थे तथा पैदल दल की तो गिनती ही नहीं थी। आगे देशलशाह, पीछे समरसिंह तथा सहजा का पुत्र सांगणशाह लूणिंगजी का पुत्र सोमजी सहित चल रहे थे। समरसिंह चारों और घोड़े को दौड़कर श्री संघ की सभी प्रकार से जांच कर लेते।

प्रत्येक गांव के संघ और गांव के ठाकुर समरशाह को आया देख दही, दूध आदि की भेंट देते थे तथा देशलशाह ने प्रत्येक स्थान पर दानशाला भी खोल दी थी। इस प्रकार प्रयाण करते हुए संघ शेरीसा तीर्थ आ पहुंचा जहां श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा कायोत्सर्ग मुद्रा में बिराजमान है। धरणेन्द्र से पूजित चरणवाले वे प्रभु आज भी सप्रभाव है जिस प्रतिबिंब को प्रथम सूत्रधार ने अपनी आंखों पर पट्टी बांधकर एक ही रात्रि में देव के आदेश से निर्मित किया था। मंत्र शक्ति से समस्त मनोवांछित प्राप्त करनेवाले श्री नागेन्द्रगण के अधीश्वर श्री देवेन्द्रसूरीजी से सम्मेतगिरि से वीश तीर्थंकरों के बिंबों को और कांतिपुरी में वर्तमान में स्थित तीन तीर्थंकरों (बिंबों) को मंत्र शक्ति से मंगवाया था और इस श्रेष्ठ तीर्थ को श्री देवेन्द्रसूरि ने स्थापित किया था। संघवी देशलशाह ने यहां स्नात्र महापूजा, महोत्सव के साथ ध्वजा अर्पित कर आरती की, समरशाह ने भोजनादि का दान दिया। अष्टान्हिका उत्सव के बाद प्रयाण कर संघ के साथ देशलशाह क्षेत्रपुर (सरखेज) पहुंचे। वहां भी देव भक्ति कर धोलका आए। प्रत्येक गांव नगर में चैत्यपरिपाटी करते हुए, महाध्वजा, पूजा आदि से पुण्य उपार्जन करते हुए संघवी देशलशाह अनुक्रम से पिप्पलालीपुर (पिपराली) आ पहुंचे और वहां से शत्रुंजयगिरि को देख देशलशाह अति हर्षित निमग्न हुए। समरसिंह को आगे कर श्रीसंघ के साथ महाकार्य साधते हुए देशलशाह ने लापशी बनवाकर महोत्सव कर गिरिराज का पूजन किया और याचकों को प्रचुर दान दिया।

दूसरे दिन तीर्थनाथ के दर्शन करने की उत्कंठा से प्रयाण कर शत्रुंजयगिरि के समीप पहुंचे। ललितादेवी (वस्तुपाल की पत्नी) द्वारा बनवाए गए सरोवर के तट पर समरशाह ने श्री संघ का आवास बनवाया। श्री विमलगिरि के दर्शन होने पर अंग-अंग में आनंद नहीं समा रहा था। पर्वतराज को पूजा, प्रणाम किया। देशलशाह ने दूसरे दिन शत्रुंजय पर चढ़ने का विचार किया, इसी मध्य एक व्यक्ति बधाई लेकर आया कि दोलताबाद (देवगिरी) से सहजपाल और खंभात से साहणपाल संघ सहित पधारे है। यह सुनकर समरसिंह अत्यंत प्रसन्न हुए और संघ सहित आगेवानी हेतु गए। बंधु से मिले, भेटकर प्रणाम किया और दोनों भाईयों ने समरसिंह से कहा कि भाई, दूसरे संघपति से मिलो। खंभात के संघ में कई आचार्य तो उन सभी को समरशाह ने वंदन किया। पाताकमंत्री के भाई मंत्री सांगण खंभात से साथ आए थे तथा वंशपरंपरागत संघपतिपद को प्राप्त करनेवाले संघवी लाला भावसार, सं.सिंहभट उत्तम श्रावक और वस्तुपाल के वंश के मंत्री वीजल सहर्ष संघ में आये थे तथा मदन, मोल्हाक, रत्नसिंह आदि असंख्य श्रावक आनंदपूर्वक प्रतिष्ठा प्रसंग में आए थे।

सभी की भक्ति समरशाह ने की और विमलगिरि शिखर पर चढ़ने के लिये सब तैयार हुए। प्रातःकाल में पालीताना शहर के श्री महावीर प्रभु को वंदन कर देशलशाह संघ सहित पर्वत के पास आए। वहां स्थित श्री नेमीनाथ प्रभु को पूजकर श्री सिद्धसेन सूरीजी को हाथ का सहारा देकर देशलशाह ने पर्वत पर चढ़ना प्रारंभ किया। उस समय श्री शत्रुंजय पर्वत वृक्षों, पशु-पक्षियों से और पानी के झरनों द्वारा प्राकृतिक सौंदर्य से भरा हुआ था। देशलशाह ऊपर चढ़कर प्रथम प्रवेश के समय जिसका स्वयं ने उद्धार करवाया था उस भगवान आदिनाथ की माता की प्रतिमा को देखकर वंदन पूजन कर श्री शांतिनाथ चैत्य में गए। वहां पूजा की यहां से श्री आदिनाथ जिन मंदिर जाकर वहां पूजा की। स्वयं द्वार उद्धार की गई कपर्दियक्ष की मूर्ति के दर्शन संघ सहित कर सिंहद्वार पहुंचे। वहां भगवान को देखकर प्रचुर धन की वृष्टि करी। चैत्य के मध्य भाग में प्रवेश कर, स्वयं द्वारा निर्मापित श्री आदिनाथ को वंदन करने हेतु देशल ने भूमि पर लेटकर प्रणाम किया पश्चात युगादिनाथ के समीप आए। भक्ति से आदिनाथ प्रभु के दर्शन किये पश्चात आदिनाथ की लेप्य मूर्ति को पुष्प से पूजा, प्रदक्षिणा की और अनेक अरिहंतों के बिंबों की पूजा की। पश्चात पांडवों की मूर्ति को पूजकर, रायणवृक्ष के नीचे स्थित भगवान के चरणचिन्हों को तथा स्वयं द्वारा बनवाई गई आश्चर्यकारक मयूर मूर्ति को देखकर स्वर्ण, मणि मोती की वृष्टि की। वहां महोत्सव कर याचकों को दान देकर, बावीश तीर्थंकरों को पूजकर, आदिनाथ को प्रणाम कर अपने स्थान पर पुत्र सहित आकर प्रतिष्ठा विधि करने हेतु तत्पर हुआ और प्रतिष्ठा करने का आदेश समरसिंह को दिया। सोरठ और वालाक से भी हजारों व्यक्ति यहां आए थे। माघ महिने की (वि.संवत 1371) शुक्ल त्रयोदशी और रविवार के दिन संघ को एकत्रित किया और श्री सिद्धसेन सूरीजी आदि प्रमुख आचार्यों के साथ समरसिंह और देशल पानी लेने कुंड की ओर गए। वहां दिक्पाल तथा कुंड के अधिपति देव की विधि पूर्वक पूजा की, श्री सूरिद्वारा मंत्रित पानी द्वारा कलश भर सौभाग्यवती स्त्रियों के सिर पर रखवाकर संघ सहित चैत्य में आए। कलश योग्य स्थान पर रखवाकर उन 400 स्त्रियों से सैकड़ें औषधियों के मूलको मंगल गीत गाते हुए पीसवाना प्रारंभ करवाया। सूरिजी ने उन स्त्रियों पर वासक्षेप डाला और औषधियों का चूर्ण तैयार होने पर उसे शराब में डाला गया। जिनालय के चारों और नौ नौ वेदिकाएं बनवाई गई, उनके चारों ओर ज्वारे उगाए गए। रंगमंडप के मध्यभाग में प्रभु के सन्मुख नंदावर्त पट्ट रखने हेतु एक हाथ ऊंची चौकोर विशाल वेदिका बनवाई और उस पर चार स्तंभोंवाला स्वर्ण कलशयक्त विविध वस्त्रों और केले के स्तंभ से सुशोभित मंडप बनवाया, उसके समीप मुख्य चैत्य हेतु बनवाया गया। ध्वजदंड प्रतिष्ठा के लिये स्थापित किया। मुख्य चैत्य के आसपास के चैत्यों की प्रतिष्ठा करने हेतु सुंदर ऊंची वालुका युक्त समूल कुश सहित वेदिका बनवाई। द्वार पर आम के पत्तों की बंदनवार बांधी गई। सूरीजी महाराज ने गोरोचन, केसर, कर्पूर और कस्तुरी आदि मुख्य द्रव्यों द्वारा प्रथम चंदन का लेप कर नंदावर्त का पट्ट लिखा।

जब पानी से भरी हुए कुंड में ज्योतिष की घटिकाएं पानी से भर जाने पर तल में डूबने लगी, तब प्रतिष्ठा का समय जानकर सूरिमहाराज मुख्य जिनमंदिर में आए, उस समय अन्य आचार्य भी प्रतिष्ठा करने हेतु उसकी विधि में सावधान होकर मुख्य चैत्य की प्रतिष्ठ के लिये अपने अपने आसन पर आकर बैठ गये। देशल भी पुत्र सहित स्नान कर विशुद्ध वस्त्र पहनकर ललाट पर चंदन का तिलक कर चैत्य में आए। अन्य श्रावक भी अपने अपने जिनबिंब लेकर उपस्थित हुए। श्री सिद्धसेनसूरीजी अंगुली में स्वर्ण की मुद्रिका और हाथ में कंगन पहनकर दो वस्त्र धारण कर जिनश्वर के सन्मुख खड़े हो गये। जिनेश्वर के दाहिनी दिशा में साहण सहित देशलशाह और बायीं ओर समरसिंह सहित सहजपाल स्नात्र पढ़ने हेतु तैयार हुए। सामन्त और सांगण दोनों भाई चँवर सहित जिनेश्वर के पास खड़े हुए। किसी की कुदृष्टि न पड़े इसलिये जिन के कंठ में अरिष्ट रत्न की माला पहनाई। जिनके कर पर रक्षा निमित्त रक्षाबंधन बांधा। प्रतिष्ठा के लिये योग्य समस्त वस्तुएं वहां रख दी गई। मींढल सहित ऋद्धि और वृद्धि नामक ये दो औषधियाँ जिनके हाथ पर बांधी और गुरू ने देशल आदि श्रावकों के हाथ पर मींढल सहित कसुंबी मंगलसूत्र बांधा। इसके बाद सिद्धसेनसूरीजी ने स्नात्रक से स्नान का प्रारंभ करवाया और श्री आदिजिन का स्नात्र सूरीजी ने स्वयं करवाया।

(आगे और भी है....) साभार : आनंद कल्याण

✽ शिष्य बननेवाले को सर्वप्रथम अपने अस्तित्व को भूल जाना होता है। स्वयं के अस्तित्व को भूल जाना सहज नहीं है। स्वयं की इच्छाओं का विसर्जन गुरू इच्छा में कर देना-यही स्वयं के अस्तित्व को भूल जाना है।

एक पूर्व स्मरण

प्रात: ६.०१ बजे फोन आया-मैं आपके घर आ रहा हूं

अपने जीवन के महान पुण्यकृत्यों से एवं चरित्र की उज्जवलता के साथ आदर्श जीवन के प्रणेता वात्सल्य और त्याग की प्रतिमूर्ति पू.गुरूदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराज 20 तीर्थंकर परमात्मा की निर्वाण कल्याणक भूमि पर यशस्वी चातुर्मास सम्पन्न कर पुनः मालवा की ओर पधारने के लिये विहार में है। नागपुर श्रीसंघ ने आपश्री के चरित्र,आचरण,त्याग और अध्यात्म के दर्शन पाकर अपने को धन्य माना। यहां से पूज्यश्री विहार करते हुए मुलताई पधारे। श्रीसंघ ने पूज्यश्री की उनकी गरिमा के साथ गौरवपूर्ण अगवानी की। यहां आपश्री के दर्शन वंदन के लिये बैतुल श्रीसंघ आया था। पूज्यश्री का बैतुल आने का कार्यक्रम तैय हो ही गया था। आपश्री प्रथम बार बैतुल पधार रहे थे। यह तो सत्य था परन्तु आपश्री की त्याग तपस्या और आध्यात्मिक जीवन से बैतुल संघ पूर्व से ही परिचित ही था क्योंकि यहां लम्बे समय से अधिकांश परिवार में आगमोद्धारक मासिक आती है। मुझसे चर्चा में बैतुल के धर्मिष्ठों ने भी यही कहा कि- आगमोद्धारक वाले गुरूदेव आ रहे है, यह हमारा सौभाग्य है। पूज्य गुरूदेवश्री के तेजोदीप्ति पूर्ण श्रीमुख के दर्शन के लिये बैतुल श्रीसंघ बेसब्री से प्रतिक्षारत था, आगमोद्धारक से गहराई जुड़ी बहनें श्रीमती सुशीला डागा, श्रीमती किरण मरोठी और श्रीमती मीना बोथरा आदि को पूज्यश्री के आगमन की सूचना से मैं अवगत करा चुका था। सभी ने यही कहा कि- हम पूज्यश्री के जीवन से तो अच्छी तरह से परिचित है, आगमोद्धारक में उनके बारे में बहुत पढ़ा है, अब प्रत्यक्ष दर्शन वंदन चर्चा का लाभ हमें प्राप्त होगा। हमें अच्छा लग रहा है कि पूज्यश्री बैतुल पधार रहे है।

भारत की वसुंधरा पर 20 वीं शताब्दी में भारत की संस्कृति,सभ्यता में जैन अवदान के रूपमें गुरूवर श्री नवरत्न सागर सूरीजी महाराज का जीवन हमेशा स्मरणीय रहेगा। संयम त्याग और विनम्रता की मूरत पूज्यश्री आध्यात्मिक क्षितिज के एक ऐसे नवरत्न है जिन्होंने अपने सम्पर्क में आने वाले धर्मिष्ठों की जीवनशैली,विचारधारा और जीवन जीने के ढंग को बदलकर उनके जीवन में आशाभरी नवज्योत प्रज्जवलित कर दी है। लोगों के जीवन खुशहाली, सच्चाई, आनंद की तेजस्वीता प्रकाशित हो इस भाव से आपश्री जैन संस्कृति की आध्यात्मिकता धरोहर को जन-जन तक पहुंचाने के लिये 68 वर्ष की आयु में भी पैदल विहार कर लोगों को जाग्रत कर रहे है।

आपश्री के 14 फरवरी को बैतुल पहुंचने पर श्रीसंघ ने जोरदार अगवानी की। प्रवचन संघ पूजा आदि के आयोजन हुए, पूज्यश्री की सादगीपूर्ण जीवन चर्या को देखकर सभी आनंद का अनुभव कर रहे थे। शनैः शनैः सभी का परिचय पूज्यश्री के साथ हो गया। युग प्रवर्तक पूज्याचार्यश्री के तपस्या से दीप्त आभापूर्ण श्रीमुख तथा तेजस्वीता से दमकते उन्नत ललाट के साथ त्याग तपस्या की उछालें लेती उत्ताल तरंगों का नवरत्नसागर देखकर सभी भावविभोर थे। निर्विकारी, निग्रंथ, निर्विकल्प वीतरागी गुरूदेव के आर्शीवाद पाने के साथ वात्सल्यमयी सुधादृष्टि से सभी असीम श्रद्धा के भाव से भरे हुए थे।

श्रवण संस्कृति के उन्नायक पूज्यश्री के बैतुल प्रवास पर श्रीमती मीना बोथरा ने हमारे **युवा प्रवर्तक पूज्य उपाध्याय प्रवर (उस समय) श्री विश्वरत्नसागरजी म.सा.** से एक आग्रहभरी विनंती करते हुए कहाकि महाराज साहब। आप जब विहार कर पधारे तो हमारे घर भी आपश्री पधारे, यह हमारी विनंती है। पूज्य उपाध्यायश्री ने मीना बहन के आग्रह पर विचार करने को कहा पर निश्चित आयेंगे यह नहीं कहा समय पर देखेंगे। ठीक है साहब! आप पधारे तो कृपा होगी। यहां आकर बात समाप्त हो गई। 15 फरवरी को भी बोथरा परिवार के सभी सदस्य पूज्यश्री के दर्शन वंदन के लिये गये। श्रीमती मीना बोथरा ने फोन पर चर्चा कर मुझे कहा कि हम पूज्यश्री से इतनी जल्दी और इतने अधिक जुड़ गये कि यह लगता था कि बहुत पहले से परिस्थिति है। श्री बोथराजी तो कभी किसी संत के पास जाते नहीं थे क्योंकि उनके पूर्व के अनुभव से वे संतों से दूर ही रहते थे किन्तु पूज्यश्री के व्यक्तित्व और वक्तव्य में तो ऐसे बंधे कि पूज्यश्री के दर्शन पाकर अपने को धन्य मानते है। पूज्यश्री से निवेदन कर हम सभी लोग घर पर आ गये थे। प्रातःकाल पूज्यश्री का विहार था हम सब उस रात्री में गहरी नींद में सो गये थे। प्रातः पूज्यश्री के आगमन की संभावना क्षणिक थी।

अचानक प्रातःकाल शुभ लग्नांश वेला में 6.01 बजे मेरा मोबाईल बज उठा। श्रीमती मीना बोथरा ने मुझे बतलाया कि- मोबाईल पर मुझे गुरूदेव की आवाज सुनाई दी कि हम आपके घर आ रहे है। मुझे आश्चर्य हुआ ऐसे कैसे हो सकता है, मैंने तो अपना मोबाईल नम्बर किसी को दिया ही नहीं है फिर पूज्यश्री तो मोबाईल का उपयोग करते ही नहीं है। तो फिर मोबाईल पर पूज्यश्री की यह

आवाज मैं आपके घर आ रहा हूं? घोर आश्चर्य के साथ मैंने बोथराजी को आवाज दी कि नीचे घर का दरवाजा खोल देवें आचार्यश्री आवेंगे। वे भी आश्चर्य के साथ नीचे गये और दरवाजा जैसा ही खोला सामने मुनिश्री आदर्शरत्न सागरजी म.सा.खड़े थे, हमने वंदन किया तो वे बोले- पूज्यश्री आपके घर पधार रहे है। यह सब इतनी तेज और आश्चर्यचकित करने वाला था कि गुरूदेव के प्रति हमारा मन आदर भाव से भर गया। कुछ ही समय में पूज्यश्री घर पधारे। हमने यथोचित सम्मान के साथ अगवानी की।

पूज्यश्री ने हमसे जमीकंद के पच्चखाण के लिये कहा तो श्रीमती मीना बोथरा ने कहा- साहेबजी अभी एक वर्ष के लिये दे देवें। आगे बाद में देखेंगे। हमारे जीवन में प्रथम बार किसी गुरूदेव से पच्चखाण के लिये दोनों पुत्र वधुओं, बोथराजी सभी ने पच्चखाण लिये। श्रद्धेय गुरूदेव सौम्यता और सहजता की प्रभावना कर नवीन क्षितिज को छूने के लिये अपने कदम आगे बढ़ाते हुए आशीर्वाद की वर्षा कर आगे बढ़ गये। पूज्यश्री के निर्गमन के बाद एक ओर अद्‌भूत प्रसंग से मेरे बड़े बेटे धीरज ने बतलाया कि- आज सुबह पांच बजे पूज्य गुरूदेव मेरे स्वप्न में आये थे, वे घर पर आये तो मैंने दूध से पूज्यश्री चरण पखाले। मैं उनके चरण दूध से पखाल रहा था कि पूज्यश्री के आने की आवाज सुनकर मैं भी जाग्रत हो गया।

16 फरवरी को प्रातःकाल की शुभ लग्नांश वेला का मंगल समय पूज्यश्री के आगमन से बोथरा परिवार के लिये जीवन में सूर्य की पहली किरणों जैसा मंगल प्रकाश प्रदान कर गया, एक न भूलने वाली सुविस्मरणीय यादें पूज्यश्री के साथ जुड़ गई। पाद प्रक्षालन के अद्‌भूत अनुभव के बीच कर्म निर्जरा की भावभूमि तैयार कर गुरू विनय वंदना का स्वर्णिम अवसर प्रदान कर पूज्यश्री तो बैतुल से विहार कर गये परन्तु आजीवन अपने गुरूत्व के एहसानों की छत से पूरा बोथरा परिवार आच्छादित हो गया है। आपका मंगल कृपाभाव हम पर सदा बना रहे, इसी भावना से पूज्य गुरूदेवश्री के चरणों में जन्म दिवस पर हमारा शत-शत वंदन...!

✻ भीष्म पितामह ने राजकुमारों को शिक्षा दीक्षा के लिये एक जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराई थी। पांडवों ने उनमें से शालीनता सहयोग का मार्ग चुना, कौरवों ने उद्दंडता और द्धेष का। दोनों ने मार्ग के अनुसार गति पाई। भगवान श्रीकृष्ण ने दोनों को चुनाव का समान अधिकार दिया था। एक ने साधन-वैभव सेना की चाह की, दूसरे ने मार्गदर्शन की। जो मार्ग चुना गया, उसी के अनुरूप गति मिली।

दया धर्म का मूल है

महाराष्ट्र के सन्त एकनाथजी के यहां श्राद्ध था। खीर-हलवा आदि पकवान बने थे। उनकी मीठी सुगन्ध के कारण एक महार् अस्पृश्य दम्पत्ति वहां आ पहुंचा। उनके साथ एक छोटा बालक भी था। वह अपनी माता से बोले, माँ! यहां तो बढ़िया पकवान बने है और मुझे जोरों से भूख लगी है। माँ ने कहा- पर बेटा, हमारे भाग्य में पकवान कहा है ? ये तो ब्राह्मणों के लिये होंगे। हमें तो बचा-खुचा ही मिलेगा।

ये शब्द सुनते ही एकनाथजी का हृदय द्रवित हो उठा। उन्होंने सोचा, हरिजन हरि के भक्त होते हैं और सबका शरीर भगवान का मंदिर है। यदि इन्हें ही भोग लगाया जाए, तो क्या वह भगवान को भोग लगाना नहीं होगा? और उन्होंने पत्नी से उस दम्पत्ति को भोजन परोसने के लिये कहा। पत्नी गिरिजाबाई पति के समान ही धर्मपरायणा थी। उसने महार दम्पत्ति को पेटभर भोजन परोसा और पान-सुपारी देकर उन्हें विदा किया।

एकनाथजी ने अपनी पत्नी से उस स्थान पर जल छिड़कने और दूसरा भोजन बनाने के लिए कहा, किन्तु महार-दम्पत्ति द्धारा भोजन करने की बात जब ब्राह्मणों को मालूम हुई, तो उन्होंने भोजन करना अस्वीकार कर दिया। एकनाथजी ने उन्हें बताया कि उन्होंने उस महार-दम्पत्ति को भूखे होने के कारण ही भोजन कराया था। वह भोजन उच्छिष्ट हो जाने के कारण अब उन्होंने दूसरा भोजन बनाया है, किन्तु काफी अनुनय-विनय करने पर भी ब्राह्मण न माने और भोजन का बहिष्कार कर दिया। एकनाथजी बड़े दुःखी हुए कि ब्राह्मण बिना भोजन किये ही चले गये। तब उनके एक संबंधी ने उनसे कहा, आपने यह भोजन तो पितरों के लिये बनाया था, न कि ब्राह्मणों के लिए, इसलिये आप क्यों दुःखी होते है? आप अपने पितरों को ही सीधें क्यों आमंत्रित नहीं करते? बात एकनाथजी को जच गई और उन्होंने पत्नी से पत्तल लगाने के लिये कहा। भोजन परोसे जाने पर उन्होंने पितरों से आगतम् कहा और लोगों को यह देख आश्चर्य हुआ कि उनके पितर सूर्यनारायण, चक्रपाणि और भानुदास वहां आ गये और उन्होंने अपने-अपने आसन पर बैठाकर भोजन किया तथा तृप्त हो एवं आर्शीवाद दे वे अंतर्धान हो गये। यह बात जब उन ब्राह्मणों को मालूम हुई तो उन्हें अपने किये पर पश्चाताप हुआ और उन्होंने एकनाथजी से क्षमा मांगी।

पाप की सजा भारी...!

✽ प.पू.आचार्यश्री अरूणविजयजी म.सा.

गतांक से आगे...!

अभिमान से नुकसान-

कषाय से कभी फायदा हो यह संभव ही नहीं है। सर्वथा नुकसान कारक है इसमें अंशमात्र भी शंका नहीं। मान विनय रोकता है। स्पष्ट ही कहा कि-माने विनय न आवे रे.... विनय बिना विद्या नहीं.... तो किम समकित पावे रे। रे जीव मान न कीजिए। मान की सज्झाय में इन शब्दों पर ध्यान दीजिये.... मान विनयगुण का अवरोधक है। यह विनय को आने नहीं देता और बिना विनय के विद्या कैसे प्राप्त होगी? मान-अभिमान से तो ज्ञान आता नहीं है.... और ज्ञान हो तो भी मान से चला जाता है और विद्या ही नहीं है तो सम्यक्त्व कहां से पाएंगे। इस तरह एक कदम गिरने से सारी सीढ़ि पर गिरते ही जाते हैं। अभिमानी नए.... नए ज्ञान की प्राप्ति से वंचित रहता है। एक कहावत कहती है कि- **'जाण आगल अजाण रहीए, आग आगल पाणी'** जानकार के सामने तो अन्जान ही रहना अच्छा है और आग के आगे जैसे पानी बनकर रहने में फायदा है वैसे नम्रता में फायदा है। अभिमानी का गर्व दिवा स्वप्न जैसा है। वह अपने आप ही अपने विषय में अपने को बड़ा मान बैठता है। मैं ऐसा हूं, मैं वैसा हूं। बस मेरे से बड़ा और है ही कौन...! अरे भाई! आप अपने आपको जो भी कुछ मान लो लेकिन अपने ही विषय में आपकी धारणा शायद झूठी भी हो.... आप कैसे है यह न्याय तो हमें दूसरों की दृष्टि में देखना पड़ेगा। हम दूसरों की नजर में कैसे हैं? जैसे हम दर्पण में देखने जाते हैं। वैसे ही समाज आपका दर्पण है। समाज की दृष्टि में आपका स्वरूप कैसा है इस पर आपके स्वरूप का आधार है। अपने आप अपने को कुछ मान लेना यह गलत धारणा है। इसमें अहं की मात्रा स्पष्ट दिखाई देती है। कइयों को सत्ता का अभिमान कितना रहता है? सत्ता के नशे में अंध-भदान्ध कई बार हजार गुना अधिक नुकसान कर देता है। सत्ता बड़ा ऊंचा पद है यह पचाना नहीं आया तो अजीर्ण हो जाता है। भोजन का अजीर्ण तो शायद 1-2 दिन ही पेट में दर्द खड़ा करेगा परन्तु सत्ता का अजीर्ण तो हजारों को मार देगा। राज्य के अच्छे अच्छे बड़े पद पर बैठे हुए राजा-मंत्री और सामंतों ने कईयों को मौत के घाट उतार दिया। धरती पर से उनका अस्तित्व ही मिटा दिया.... नाम शेष भी नहीं रहा।

अपनी यश-कीर्ति-प्रतिष्ठा के बढ़ने में भी हमको संभालना चाहिये कि हमारे में कहीं मान अभिमान बढ़ न जाए। मान अनेक गुणों का घातक है। यह गंभीरता.... धीरजता को भी आने नहीं देता। परिणाम स्वरूप मान कषाय मनुष्य को उच्छृंखल उद्धत बना देता है जो मान को भी अपनी मर्यादा के वश में नहीं रख सकता.... उसकी तो हालत और खराब हो जाती है। सोचिए स्त्रियां यदि अभिमान करने बैठे तो क्या परिणाम आएगा। अरे भाई.... मान भी कौन कर सकता है? दूध पचाने की शक्ति नहीं है वहां दूधपाक-रबड़ी तो कहां से पचेगी? उसको भी पचाने की शक्ति चाहिए। इस तरह मान को भी पचाने की शक्ति चाहिये। इस तरह मान को भी पचाने की शक्ति चाहिये। सभी मान को पचा भी नहीं पाते.... वहां महाअनर्थ होता है। यदि आप अच्छे गंभीर गुणवान है तो मान आपको ज्यादा नहीं सताएगा। गंभीरता का गुण आत्म रक्षक है। पहले से गंभीरता है वह अपने को मिले हुए धन-संपत्ति-ऐश्वर्य भी पचा सकता है। वरना थोड़ा मिलने पर भी ज्यादा अभिमान करने वाले गिर जाते है। एक गरीब को 5 लाख की लॉटरी लगी। वह 5 लाख सुनते ही इतना हर्ष में आ गया। अरे वाह.... वाह.... 5 लाख क्या कमाल हो गई.... इस तरह उछलते नाचते वह दो दिन में पागल हो गया। संभाल नहीं पाया।

अभिमान कौन ज्यादा करता है?

सम्पूर्णकुम्भो न करोति शब्दमधों घटो घोषमुपैति नूनम्।
विद्वान कुलीनो न करोति गर्व, गुणैर्विहीना वहु जल्पयन्त।।

कहते है कि पूरा भरा हुआ घड़ा न ही छलकता। ध्वनि नहीं होती लेकिन घड़ा यदि आधा ही भरा है तो वह ध्वनि (शब्द) करता है। पानी छलकता है। इसी तरह विद्वान कुलीन ज्ञानी अभिमान नहीं करता। लेकिन गुणरहित अल्पज्ञानी-अज्ञानी ही ज्यादा बोलता है। कहा भी है कि- "A Little Knowledg is more dongerous" अधूरा ज्ञान खतरनाक होता है। अल्पज्ञ और अज्ञानी यदि मान-अभिमान ज्यादा करता है, ज्यादा बोलता है तो वह ज्यादा नुकसान भी करता है। यदि आपके पास थोड़ा है और आप ज्यादा अभिमान करते है तो हमेशा यह सोचिए कि हे जीव! तेरे पास तो क्या है? इस जगत में सबसे ज्यादा प्रत्येक वस्तु यदि किसी को चरम सीमा में मिली हो तो वह तीर्थंकर महापुरूषों को मिली है ज्ञान, तप, रूप, जाति, कुल, बल, ऐश्वर्य आदि जगत की सभी वस्तुएं उत्कृष्ट रूप में उनको मिली है लेकिन फिर भी कभी भी अंश मात्र भी अभिमान का

नाम नहीं लिया। कभी भी किसी भी तीर्थंकर के जीवन चरित्र में आप देख लीजिये अंशमात्र भी मान नहीं मिलेगा। हमको भी यह सोचना है कि.... हमको अपने पुण्य वश जो भी मिला है उससे भी ज्यादा हजारों को मिला है फिर तू क्यों अभिमान करता है? हे जीव अभी भी समझ कहा है।

बलिभ्यो बलिनः सन्ति, वादिभ्यः सन्ति वादिनः।
षनिभ्यो धनिनः सन्ति, तस्माद्दर्प त्यजेद् बुधः।।

बलवान को भी कभी अधिक बलशाली मिल जाता है। वादि-वादि को भी कभी सिर का वादी मिल जाता है और धनवान से भी ज्यादा धनवान सामने मिल जाता है। कभी सामने सामने भीड़ भी जाते हैं। शेर के सिर पर सव्वाशेर जब मिलता है तब हमारे मान का पारा उतर जाता है। इस तरह स्पर्द्धा में आकर अपमान से अपने मान को कम करना इसकी अपेक्षा तो पहले ही अभिमान न करना क्या बुरा है? अतः बुद्धिमान की बुद्धिमत्ता इसी में है कि वह मान न करें।

स्वाभिमान से जीना अच्छा है- तो क्या हम अपमान से जीए? नहीं.... अभिमान न रखने का यह नहीं है कि.... आप अपमान से जीएं नहीं यह भी कहने का तात्पर्य नहीं है अभिमान खराब है। स्वाभिमान अच्छा है। आत्मगौरव अच्छा है। स्वामिभमान Self-Respect या स्वव्यक्तित्व स्थापन Inbividuolity से जीना अच्छा है। ये अच्छे है। अभिमान खराब है। मनुष्य के विकास के लिये उसकी इज्जत के लिये स्वाभिमान तो जरूर चाहिए। अपमान से या अपमानित होते हुए तो न जीए लेकिन साथ-साथ....अपमान करते हुए भी न जीएं। इसका भी ध्यान अवश्य रखना चाहिये। यदि आप किसी का अभिमान करते हैं तो आपका अपमान अवश्य होगा।

एक व्यक्ति के घर रात को मेहमान आया, उस समय घर में खाने को कुछ नहीं बचा था। उस व्यक्ति ने पड़ोसी का द्वार खटखटाया, लेकिन पड़ोसी ने बिछौने पर पड़े-पड़े ही कहा- इस आधी रात के समय परेशान न करो, मैं नहीं उठ सकता। वह व्यक्ति भी अड़कर खड़ा हो गया, बोला- मैं तुम्हें चैन से नहीं सोने दूंगा, मेहमान के लिये रोटी तो देनी होगी। अंत में इसके आग्रह के सामने पड़ोसी को किवाड़ खोलने ही पड़े । इसी प्रकार सच्चे आग्रह से भगवान का द्वार खटखटाएँ तो वे अवश्य खोलेंगे।

किसमें शक्ति ज्यादा है?-

अभिमान करने में शक्ति ज्यादा है? या अपमान सहन करने में शक्ति ज्यादा चाहिये? कौन महान है? सीधा न्याय देखिए.... अभिमान करने वाला महान है या अपमान सहन करने वाला महान है? अभिमान करने में क्या शक्ति चाहिए? एक मिनट में हो जाएगा। लेकिन अपमान को सहन करने में बहुत लम्बा समय लगेगा। अतः अपमान सहन करने वाला महान है। बड़ा है। जैसे-''क्षमा वीरस्य भूषणं'' कहा है उसी तरह सहन करना साधक है।

अभिमान कषाय से कैसे बचें?-

''माणं मद्दवया जिणे'' -श्री वीर प्रभु ने फरमाया कि मृदुता-नम्रता से मान कषाय को जीतना चाहिये। मानों आज हम सर्वथा मान-अभिमान न भी जीत सकें तो भी कम तो करना ही चाहिये। मानमुक्ति ही प्रशस्य है। हम सभी निरभिमानी बनें।

(आगे और भी है...!)

आत्मा की ज्योति

महर्षि याज्ञवलक्य के पास राजा जनक बैठे थे, बोले- महर्षि! मेरे मन में एक शंका है, कृपया उसका निवारण करें। हम जो देखते है, वह किसकी ज्योत से देखते है? महर्षि ने कहा- यह क्या बच्चोंवाली बात करते है आप? प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि हम जो देखते है, यह सूर्य की ज्योति के कारण देखते हैं। जनक ने पुनः प्रश्न किया-मगर जब सूर्य अस्त हो जाता है, तब हम किसके प्रकाश से देखते हैं? महर्षि ने उत्तर दिया, चन्द्रमा के प्रकाश से! ,जनक का अगला प्रश्न था, जब सूर्य न हो, चन्द्रमा न हो, तारे-नक्षत्र न हों और अमावस्या की बादलों से भरी घोर अंधेरी रात हो, तब?

महर्षि बोले, तब हम शब्दों की ज्योति से देखते है। कल्पना करें- विस्तृत वन है, घनघोर अंधेरा है। एक पथिक मार्ग भूल गया है, वह आवाज देता है, मुझे मार्ग दिखाओ! तब दूर खड़ा एक व्यक्ति इन शब्दों को सुनकर कहता है, इधर जाओ, मैं मार्ग में खड़ा हूं और पहला शब्दों के प्रकाश से उस व्यक्ति के पास पहुंच जाता है। जनक ने पूछा- महर्षि! जब शब्द भी न हो, तब हम किस ज्योति से देखते है? महर्षि बोले- तब हम आत्मा की ज्योति से देखते है। आत्मा की ज्योति से ही सारे कार्य होते हैं। और यह आत्मा क्या है? राजा जनक ने प्रश्न किया। महर्षि ने उत्तर दिया- **यो०र्य विज्ञानमयः प्राणेषु हद्यन्तर्ज्योति पुरूषः।** अर्थात् यह जो विशेष ज्ञान से भरपूर है, जीवन और ज्योति से भरपूर है, जो हृदय में जीवन है, अन्तःकरण में ज्योति है और सारे शरीर में विद्यमान है, वहीं आत्मा है।

पूज्यपाद मालवोद्धारक आचार्य
श्री चन्द्रसागर सूरीश्वरजी महाराजा

सागर समुदाय के गौरव वे आज भी है, यह अहसास होता है

महापुरूषों का जीवन विविध घटनाओं से, गौरवमयी गाथाओं से प्रेरयादायक प्रसंगों से आवृत्त होता है, वे घटनाओं का सृजन नहीं करने अपितु उनसे घटनाएं सहज रूप से सर्जिन हो जाती है। पूज्यश्री ने जब तक इस धरा पर विचरण किया तब तक आप श्रमण संघ नायक के रूप में ख्यातिवान बने रहे जो शासन के नायक होते हैं, शासन प्रभावक होते है, उनके चले जाने के बाद भी उनकी उपस्थिति का अहसास होता रहता है। परम पूज्यपाद मालवोद्धारक श्री चन्द्रसागर सूरीश्वरजी महाराजा भी एक ऐसे महापुरूष थे जिन्होंने निर्मल अखंड और अप्रमत्त संयम की साधना के द्धारा जैन जगत को कृतार्थ कर दिया है।

मैंने भगवान के बारे में बहुत सुना है परन्तु परमात्मा को देखा नहीं है लेकिन इस जगत के लोगों का उद्धार जिन महार्षियों ने दिया है वे भी परमात्मा से कम नहीं है। पूज्यश्री की साधुता का प्रभाव सम्पूर्ण भारत में अनुभूत किया जाता है। महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, बिहार आदि प्रांतों में तो जब चारों ओर आवागमन, खानपान और सुरक्षा की विकट स्थितियां थी तब आपश्री ने पैदल विहार के द्धारा शासन प्रभावना की जो मिसाल स्थापित की है वह आज भी हमारे सामने उनके जीवन के उपकारों को सिद्ध करती है।

जैन शासन में गुरू की बड़ी महिमा है, इसीलिये तो गुरूतत्व को बीच में बैठाया है। देव-गुरू-धर्म अर्थात् गुरू-देव और धर्म दोनों की उपलब्धि करवाते हैं। पूज्यपाद मालवोद्धारकश्री आचार्य श्री चंद्रसागर सूरीश्वरजी महाराजा ने अपने जीवनकाल में शासन प्रभावना करते हुए धर्मिष्ठों को देव के निकट लाने और धर्म से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य किया है, आपश्री के श्रमणत्व का प्रभाव इसीलिये जैन-जैनेत्तर सभी लोगों में पू.मालवोद्धारकश्री ने अपनी वात्सल्यभरी साधुता का प्रभाव उन सभी स्थानों पर आज भी अनुभूत किया जाता है। जहां पर आपश्री का विचरण हुआ। आपश्री उन सभी संघों में शुभ वृत्ति और प्रवृत्ति का मंगलमय मार्गदर्शन करने वाले चन्द्ररत्न है। पूज्य आचार्यश्री का आगमन उज्जैन में प्रथम बार होने के बाद आपश्री अपने अंतिम दिनों तक उज्जैन से जुड़ेरहे श्रीपाल मैयणा सुन्दरी की आराधना स्थली उज्जैन को जैन जगत प्रसिद्धि दिलवाने का मंगल कार्य आपश्री के द्धारा ही हुआ। आपश्री ने ही यहां का उद्धार कार्य करवाकर श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी की स्थापना की, पेढ़ी की स्थापना से लेकर संपूर्ण विकास भी आपश्री के द्धारा ही कड़ी मेहनत, मार्गदर्शन से हो पाया।

पूज्यपाद आगमोद्धारक श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा से मिली शिक्षा-दीक्षा ने आपको अनेक विषयों में पारंगत बना दिया था। आगमशास्त्र ज्ञान-ज्योतिष्यमान-तंत्र-मंत्र-यंत्र-वास्तु शिल्प-मंदिर निर्माण मुहूर्त-ऐसा कौन सा क्षेत्र था जिसमें आपश्री को महारत हासिल नहीं थी। श्री ऋषभदेव परमात्मा के द्धारा प्रस्थापित श्रमण संस्कृति के संवाहक शासन प्रभावक विश्व वंदनीय पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री सागरानंद सूरीश्वरजी महाराजा के द्धारा आरंभ किये गये पाक्षिक श्री सिद्धचक्र का कई वर्षों तक एक प्रकार से सम्पादन तथा प्रुफ आदि का कार्य देखते हुए गुरू के द्धारा दी गई जवाबदारी को बखूबी आपने निभाया, यही नहीं गुरूदेवश्री के चले जाने के बाद आपश्री ने श्री सिद्धचक्र को मासिक प्रकाशन के साथ प्रकाशित किया। आपश्री की जोरदार ज्ञानाराधना का परिणाम ही है कि आपश्री ने उज्जैन स्थित श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी पर ज्ञान भंडार की स्थापना की आज इस ज्ञान भंडार में १८००० से अधिक नायब पुस्तकों का संग्रह है, यही नहीं आपश्री के द्धारा यहां हस्तलिखित लगभग ३५०० प्रतों का अमूल्य संग्रह किया गया है जो बहुमूल्य है, आपके द्धारा संग्रहित सभी ग्रंथों पर आपके नाम की सील भी अंकित की गई है। इनमें से अनेक ग्रंथ आज अप्राप्त होने से अमूल्य हो गये है। आज इन सभी ग्रंथों का यह बहुमूल्य संग्रह पूज्यश्री की जीवंत उपस्थिति को अनुभव करवाता है। उज्जैन में आपश्री के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष व्यतीत हुए है, यहां रहते हुए आपश्री ने सम्पूर्ण मालवा में जैन धर्म की प्रभावना के महवत्वपूर्ण कार्य किये। मालवा में आपश्री का आगमन पूज्य वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री मनोहरश्रीजी म.सा.के आमंत्रण पर हुआ था इसके बाद तो आपश्री की अमृत निश्रा में पूज्य साध्वीवर्याश्री के साथ अनेक महत्वपूर्ण शासन प्रभावक कार्य हुए। पूज्यश्री का निरंतर आगमन उज्जैन होता रहता है। आपश्री के जीवन से जुड़े अनेक प्रसंग है जो आपश्री के प्रभुत्व और प्रभाव को आज भी बतलाता है। मैं यहां आपके उज्जैन आगमन पर घटित एक घटना का उल्लेख करने के साथ यह बतलाना चाहूंगा कि वे कितने दूर दृष्टा थे।

अकबर कुंआ में बच्चा गिर गयाः-

यह घटना कब घटित हुई थी इसके वर्ष सन् तारीख की जानकारी उपलब्ध नहीं है, पता नहीं क्यों नहीं इसे लिखित में लिया गया। मैंने भी इसे पूज्यपादश्री के सम्पर्कवाले वरिष्ठ श्रावकों के मुख से सुना था। पूज्यश्री उज्जैन एक महोत्सव के प्रसंग पर पधारे थे, खाराकुआ स्थित उपाश्रय में महोत्सव के आयोजन के दौरान पूज्यश्री के प्रवचन चल रहे थे। उपाश्रय श्रावक-श्राविकाओं से खचाखच भरा हुआ था। अनेक छोटे बच्चे भी अपने माता-पिता के साथ आये हुए थे और इधर-उधर खेल-कूद कर रहे थे, उपाश्रय के सामने अकबर बिल्डिंग थी जो आज समाप्त होकर मैदान पड़ा है, उस समय बिल्डिंग में साध्वीयांजी को ठहराया जाता था साथ ही यहां पाठशाला भी लगती थी। आज भी वहां कुआ है तो उस दिन पूज्यश्री के प्रवचन चल रहे थे। तभी अचानक प्रवचन हाल में खबर आई कि एक बच्चा अकबर कुआ में गिर गया है, पाट से पूज्यश्री ने भी इस बात को सुना लगा लोग एकदम उठने लगे, तब आचार्यश्री ने सबको शांत रहते हुए बैठने का कहा- सब बैठ जाए कोई चिंता की बात नहीं, कुछ लोग जाओ बच्चे को कुए से निकाल लाओ, लोगों ने जाकर देखा, बच्चे को खरोंच तक नहीं आई थी, बस वह बाहर निकलने के लिये प्रयासरत था, लोगों ने किसी तरह से उसे तुरन्त बाहर निकाल लिया। कुए में बच्चा गिरा और उसे जरा भी चोंट नहीं आई। आचार्यश्री ने शांत रहने को सबसे कहा, यह बड़े आश्चर्य की बात थी, लगता है गुरूदेव ने अपनी दूर दृष्टि से सब जान लिया था। इससे आपश्री के अध्यात्मिक प्रभाव-शक्ति का आंकलन किया जा सकता है।

वे आज भी है, इसको पहचानें-

श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी खाराकुआ मंदिर के प्रवेश द्वार से जैसे ही हम मंदिरजी में प्रवेश करते है, प्रवेश के बाद सीढ़ियां चढ़ते ही सामने उपाश्रय का दरवाजा है जहां से उपाश्रय में प्रवेश किया जा सकता है। यह बहुत महत्वपूर्ण दरवाजा है, यहां से ही शायद पूज्य गुरूदेवश्री आदि साधु-साध्वी उपाश्रय से प्रवेश करते रहे है, इस दरवाजे की बड़ी विशेषता है क्योंकि इस दरवाजे को बैठकर या दरवाजे के पास सोकर टोकना नहीं चाहिये, क्योंकि यह प्रवेश द्वार आज भी जीवंत है, अगर कोई इसको रोकने का प्रयास करता हे अथवा अंजाने में दरवाजे के पास बैठकर, सोचकर आने-जाने में बांधा बनता है तो उसको तुरन्त ही पता चल जाता है कि मेरे यहां बैठने-सोने से किसी को आने जाने में परेशानी हो रही है, या वह नहीं चाहता है कि इस दरवाजे से अन्दर आने से किसी को कोई रूकावट आये, बाहर आये।

एक बार इस दरवाजे के पास बिल्कुल जहां पल्ले लगे है, एक कर्मचारी सो गया, मंदिर में महोत्सव में काम के लिये आया है तो वह सो गया, मंदिरजी के मुनीमजी ने उससे कहा- भैय्या। यहां से हट जा दरवाजे को मत रोक, उधर धर्मशाला के बरामदें में सोजा। वह नहीं माना, बोलने लगा-यहां कोई आ तो नहीं रहा है? मैं तो सोऊंगा। मुनीमजी ने अधिक बात नहीं की, बहस में नहीं पड़े, और अपने काम में लग गये। कुछ ही देर बाद वह कर्मचारी अचानक बहकी-बहकी बातें करने लगा। ऐसा लगा कि उसे कोई पागलपन का दौरा आ गया है, बोलने लगा- मुझे यहां सोने नहीं देते है, परेशान करते है और गेट के यहां बैठ गया उसे समझा बुझाकर धर्मशाला के बरामदें में सुला दिया। रात को अच्छ तरह से सोया, सुबह अच्छा दिख रहा था। मुनीमजी ने उससे पूछा-रात को क्या हो गया था? बोलने लगा- उसे यहां पता नहीं कैसा-कैसा लग रहा है। मेरा दिमाग फिर गया था वह तो मैं जब उधर बरामदें में सोया तो मुझे वहां तुरन्त ही नींद आ गई। यह है पूज्यपादश्री के द्वारा लगाई गई इस बगीया की पुण्य भूमि की मंगलता। यहां अनेक विवाद होने के बाद सब काम अंत में अच्छी तरह से सम्पन्न हो जाते हैं और यहां की गरिमा बनी रहती है। यह गुरूदेव का ही पुण्यप्रताप है कि मालवा में धर्म करनेवालों की संख्या में वृद्धि हुई और लोगों को परमात्मा की आज्ञा के अनुरूप धर्म क्रिया करने की समझ हुई। मुझे तो यह लगता है कि सर्वगुण सम्पन्न पूज्यपादश्री ने इस धराया जन्म नहीं लिया होता तो मालवा के लोगों को धर्म का मार्ग कौन बतलाता? कुछ लोग इतिहास से प्रेरणा लेकर अपने जीवन का निर्माण करते है तो कुछ लोगों के जीवन से प्रेरणा लेकर इतिहास स्वयं ही निर्मित हो जाता है। श्रमण संघ के महानायक पूज्यश्री का हम पर वरदहस्त बना रहे आपश्री का मंगल आर्शीवाद हमें मिलता रहेगा। यही शुभभाव।

✻ सात वर्षीय बालक को माँ पीटे जा रही थी। पड़ोस की महिला ने उसे बचाया। माँ कह रही थी कि यह मंदिर में से चढ़ैत्री के आम और पैसे चुराकर लाया है। महिला ने पूछा- बेटा! तुम तो अच्छे बालक हो, चोरी तो गंदे बच्चे करते हैं। तुमने ऐसा क्यों किया?

बालक बोला- माँ भी तो रोज ऊपर वाले चाचाजी के दूध में से आधा दूध निकाल कर पानी मिला देती हैं और हमसे कहती है कि उन्हें बताना मत।

बच्चों के निर्माण में घर का वातावरण बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

धर्म पुरूषार्थ

✱ जैनाचार्यश्री जितरत्नसागरसूरीजी 'राजहंस'

> ***मुख्य धर्मशासन प्रायः उत्सर्ग अपवादमय पांच व्यवहारों में समा जाता है। इसके द्धारा शाश्वत धर्म का पालन शक्य बन सकता है। आगम व्यवहार, श्रुतव्यवहार, धारणा व्यवहार, आज्ञा व्यवहार एवं जित व्यवहार इन पांचों व्यवहार के उत्सर्ग एवं अपवाद अलग-अलग होते है । बिन बन्धारणीय संघ नहीं है एवं बिन बंधारणीय प्रवृत्ति कितनी भी अच्छी या उच्च क्यों न हो फिर भी वह धार्मिक प्रवृत्ति के रूप में मान्य नहीं होती है।***

पांच अंग पच्चीस भेद-

शाश्वत धर्म अंग की मुख्यतः होती है तब अन्य चारों अंग गौण होते है। अतः अन्य चारों अंगों को भी धर्म कह सकते है। शासन रूप धर्म, संचालन रूप धर्म, शास्त्र बोधरूप धर्म, सात क्षेत्ररूप धर्म, ऐसे धर्म के पांच प्रकार है।

शासन की मुख्यता होने से अन्य चार गौणता से शासन कहलाते है। क्योंकि प्रत्येक अंग शासन के नियमानुसार उपयोग में आते है। शासन निरपेक्ष एक्य की महत्ता नहीं है।

जब श्रमण प्रधान चतुर्विध संघ की मुख्यता हो तक अन्य चारों की गौणता होती है और वे चारों संघ संचालन के नीचे होने से उन्हें भी संघ कहा जा सकता है। जैसे कि प्रवचन का अर्थ तो मुख्यतया उपदेश होता है परन्तु ''प्रवचन संघ वखाणीएजी'' में प्रवचन का अर्थ संघ किया है, यह तो सभी जानते ही है।

जब शास्त्रों की मुख्यता होती है तब अन्य चारों की गौणता रहती है। उन चारों का समावेश गौणतया शास्त्रों में हो ही जाता है। अतः अन्य चारों को शास्त्र भी कहा जा सकता है।

इसी तरह पांचों द्रव्यों की सात क्षेत्रों की मुख्यता के समय अन्य चारों गौण होते है। उन चारों को उस समय गौणतया द्रव्य सम्पत्ति कही जा सकती है। जैसे कि देव-गुरू में भी वह देवगुरू है। शास्त्रों ज्ञान द्रव्य है। साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका रूप द्रव्य संघ है। उसके उपकरणों का धार्मिक कार्यों में उपयोग धर्म रूप है अथवा वे उपकरण द्रव्य सम्पत्ति रूप है।

इस तरह मुख्य गौणता से पच्चीस भेद होते हैं। पांच आचार रूप शाश्वत धर्म मोक्ष का निर्वाण का शिव का उपाय है।

मोक्ष के लिये ज्ञान वह ज्ञानाचार है।

मोक्ष का ध्येय रखकर उसके उपाय तरफ वफादारी रखनी उसकी सार सम्भार रखनी, उसके विरोधी वातावरण से दूर रहना यह दर्शनाचार है।

मोक्ष के लिये पांच महाव्रत, पांच अणुव्रत, बारह व्रत, क्षमादि गुणों में विकास, पांच समिति, तीन गुप्ति आदि का पालन चारित्राचार है।

मोक्ष के लिये उपरोक्त तीनों में द्रढ्ता तथा कट्टरता पूर्वक तीनों आचारों का पालन तथा त्याग द्धारा संयम को मजबूत बनाना तपाचार है।

मन, वचन, काया की शक्ति अन्य स्थलों से रोककर उपरोक्त चारों आचारों में केन्द्रित करना वीर्याचार है।

दर्शनाचार में शासन एवं संघ की शिस्तता का समावेश होता है।

चारित्राचार में धार्मिक सम्पत्ति के रक्षण आदि का समावेश होता है।

वीर्याचार तो प्रत्येक प्रवृत्ति में होना आवश्यक है। पांचों आचार में असमाविष्ट प्रवृत्ति धार्मिक प्रवृत्ति या धर्म नहीं है।

शासन में धार्मिक, सामाजिक, राजकीय, आर्थिक व्यक्तिगत, पारिवारिक, प्रजाकीय आदि सभी प्रकार की व्यवस्था का समावेश है। उसमें मुख्यतः धर्म शासन की है और अन्य शासन उसके अंग-प्रत्यंगभूत है। इसी तरह सभी धर्म के शासनतंत्र भी मुख्य धर्मशासन का अनुसरण करते हैं। मुख्य धर्मशासन प्रायः उत्सर्ग-अपवादमय पांच व्यवहारों में समा जाता है। इसके द्धारा शाश्वत धर्म का पालन शक्य बन जाता है।

आगम व्यवहार, श्रुत व्यवहार, धारणा व्यवहार, आज्ञा व्यवहार एवं जितव्यवहार इन पांचों व्यवहार के उत्सर्ग एवं अपवाद भिन्न-भिन्न है। बिन बंधारणीय संघ संघ नहीं है एवं बिन बन्धारणीय प्रवृत्तियां कितनी भी अच्छी या उच्च क्यों न हो उन्हें धार्मिक प्रवृत्ति या धर्म नहीं कहा जा सकता है।

मानव और मानवता का सत्कार है दीक्षा

✱ डॉ. दिलीप धींग, चैन्नई

जैन संस्कृति श्रमण संस्कृति कहलाती है। श्रमण का अर्थ होता है साधु। 'श्रमण' या 'साधु' शब्द के अंतर्गत श्रमणियों अथवा साध्वियां भी सम्मिलित मानी जाती है। तीर्थंकर अपनी देशना में सर्वप्रथम श्रुत धर्म और चारित्र धर्म का प्रतिपादन करते है। चारित्र धर्म दो प्रकार का होता है- आगार धर्म और अनगार धर्म। आगार धर्म के अंतर्गत श्रावक जीवन और अनगार धर्म के अंतर्गत श्रमण जीवन की साधना की जाती है। मनुष्य जीवन का परम लक्ष्य संसार परिभ्रमण को समाप्त करके मोक्ष प्राप्त करना है। इस परम लक्ष्य की शीघ्र प्राप्ति सुनिश्चित करने हेतु श्रमण जीवन को श्रेष्ठर बताया गया है। श्रमण जीवन में एक और आत्मकल्याण का अनुत्तर लक्ष्य होता है, दूसरी ओर श्रमण जीवन के माध्यम से समाज में नैतिक मूल्यों की स्थापना और आध्यात्मिक वातावरण का निर्माण होता है। ऐसे वंदनीय श्रमण जीवन की शुरूआत दीक्षा से होती है।

जैन धर्म में दीक्षा को एक बहुत बड़ा सत्संकल्प तथा संयम में पराक्रम माना जाता है। प्रबल वैराग्यभाव साधक के अंतर्मन और नवीन जीवन का शुभारंभ दीक्षा है। आजीवन संयममय जीवन का संकल्प दीक्षा है, इसलिये दीक्षा ग्रहण करने को संयम ग्रहण करना भी कहा जाता है। उत्तराध्ययन सूत्र में कहा गया है कि लाखों का दान करने की अपेक्षा संयम-ग्रहण अधिक श्रेष्ठ है। इस कथन से संयम की अचिंत्य महिमा का पता चलता है। वस्तुतः संयम के माध्यम से साधक अनन्त दान और अनन्त दया करता है, जिसका आकलन साधारण बुद्धि से प्रायः संभव नहीं हो पाता है। संयम के महत्व के कारण ही श्रावक (गृहस्थ) के तीन मनोरथों में दूसरा मनोरथ दीक्षा की भावना भी है।

दीक्षा एक अखण्ड ज्योतिर्मय अन्तर्यात्रा है, अन्तर्मुखी साधना है। दीक्षा में साधक असत्य से सत्य की ओर नश्वरता से अमरत्व की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर तथा विषमता से समता की ओर अग्रसर होता है। सम्यक् ज्ञान के सद्‌भाव और अज्ञान के अभाव का नाम दीक्षा है। दीक्षा में साधक अपने आप पर शासन करता है। तप-त्याग और धर्म-ध्यान के विश्वविद्यालय में प्रवेश का नाम दीक्षा है। आत्म-साधना के चरम सोपान पर पहुंचाने की साधना का नाम दीक्षा है। दीक्षा में साधक अशुभ का बहिष्कार करता है, शुभ का सत्कार करता है और शुद्ध की ओर अग्रसर होता है।

जैन दीक्षा में जात-पात का कोई बंधन नहीं है। कोई भी योग्य मुमुक्षु दीक्षा ग्रहण करके आत्मसाधना कर सकता है। जैन आगम और इतिहास साक्षी है कि हर कालखण्ड में सभी जातियों के व्यक्तियों ने जैन दीक्षा ली। इसी प्रकार एक ओर साधारण परिवार के व्यक्तियों ने दीक्षा ली तो दूसरी ओर विपुल सम्पदा के स्वामी श्रेष्ठियों, श्रेष्ठिपुत्रों, राजाओं और राजकुमारों ने भी दीक्षा लेकर आत्मकल्याण किया। कल्प के अनुसार जो पहले दीक्षा लेता है, वह ज्येष्ठ होता है, चाहे वह उम्र में छोटा हो या सांसारिक जीवन में साधारण हैसियतवाला ही क्यों न हो। भेदभाव से परे योग्यता पर आधारित जैन दीक्षा की परम्परा ने मानव और मानवता का सत्कार किया और गौरव बढ़ाया है। दीक्षा लेकर और साधना करके अनेक साधारण व्यक्तियों ने असाधारण ऊंचाईयां हासिल की है।

आज के जमाने में शिक्षा की चर्चा तो बहुत होती है लेकिन दीक्षा (उत्तम चरित्र) की चर्चा कम होती है। शिक्षा से जानकारियां बढ़ती है तो दीक्षा से जीवन संस्कारित होता है तथा जीवन में विवेक और आत्मानुशासन बढ़ता है। दीक्षा एक ऐसी साधना है, जिससे शिक्षा सार्थक हो उठती है। मैंने मेरी एक कविता में इस बात को इस प्रकार गूंथा है-

मुनि बनना तो है ही दीक्षा, श्रावक बनना भी दीक्षा है।
असंयम का वर्जन करना, सद्‌गुण-अर्जन दीक्षा है।
दीक्षा पल-पल विवेक रखना, दीक्षा आत्म-समीक्षा है।
सार्थक जो शिक्षा को कर दे, उसका आशय दीक्षा है।

जैनाचार के अनुसार सम्यक्त्व का ग्रहण श्रावकाचार की दीक्षा ही है। अतः श्रेष्ठ श्रावक बनना भी दीक्षा है। हम यदि मुनि या श्रमण नहीं बन सकते हैं तो दीक्षा कार्यक्रमों, तीर्थंकरों के दीक्षा-कल्याणक अथवा संतों की दीक्षा-जयन्ती के प्रसंग पर श्रेष्ठ श्रावक और नेक इंसान बनने का संकल्प तो ले ही सकते हैं। नियमित सामायिक, स्वाध्याय, ध्यान, त्याग-प्रत्याख्यान तथा निश्छल व नीतिमय जीवन के द्वारा संयम की अनुमोदना की जा सकती है। आओ! हम अपने जीवन में सेवा, साधना और शुचिता के सत्संकल्प करके दीक्षा और दीक्षार्थियों की, संयम तथा संयमियों की सच्ची अनुमोदना करें।

नवकार मंत्र का प्रभाव....

गतांक से आगे....

ठीक एक घंटा बीतते ही उका भगत के कथनानुसार पीछे की दिशा में से, आकाश में से आ रही हो, वैसी मधुर किंतु प्रतापी आवाज आई।

मांग, मांग मांगे वो दूं।

'मेरे सामने हाजिर हो' श्रीकांत ने अब सिंह की तरह गर्जना की। हाजिर होने का क्या काम है? चाहिये वो मांग ले- जवाब आया।

यहां पेश किये गये अर्वाचीन दृष्टांत नवकार महामंत्र के उत्तम आराधक पू.पं.श्री अभयसागरजी म.सा. द्वारा संपादित "महामंत्र ना अजकला" पुस्तक से साभार उद्धृत किये गये हैं।

प्रत्यक्ष हो, मेरे सामने स्वयं आकार खड़े हो, तुम हाजिर न होंगे, तब तक मैं नहीं मांगूगा- श्रीकांत ने कहा। तुम डर से मर जाओगे, मेरा रूप डरावना है। परवाह नहीं। जल जाओगे, मेरे अंगों में से आग निकलती है। फिक्र नहीं।

प्रत्यक्ष देखने का आग्रह छोड़ दो, इसमें तुम्हारा अहित होगा।

आना हो तो आ, नहीं आना हो तो तेरी इच्छा- इतना कहकर श्रीकांत ने पुनः मंत्रोच्चार चालु किया।

बंद करो, मंत्रोच्चार बंद करो। ऊपर से आवाज आई।

तो फिर प्रत्यक्ष हाजिर हो, श्रीकांत ने आज्ञा की।

मुझे आना हो, तो भी मैं नहीं आ सकता- जवाब मिला।

क्यों?

तुम्हारे आसपास जो तेज का गोला दिखाई दे रहा है, उसे पहले मिटा दो। जवाब मिला।

श्रीकांत ने विस्मित होकर देखा, तो कोई अद्‌भूत प्रकाश का गोला उसके आसपास गोल चक्कर काट रहा था उस प्रकाश की बात उका भगत ने श्रीकांत को नहीं कही थी, थोड़ा विचार करने के बाद श्रीकांत ने जवाब दिया- यह प्रकाश का गोला भी तुम्हारी ही माया है, समेट लो।

यह मेरी माया नहीं है।

तो फिर यह क्या है? श्रीकांत ने पूछा।

तुम नवकार मंत्र के आराधक हो? सामने से प्रश्न हुआ।

हाँ, किंतु उससे क्या?

यह महाप्रभावक मंत्र है। इसका यह तेज है। यह मेरे से सहन नहीं होगा, इसे समेट लो, तो मैं हाजिर होऊँ।

यह गोला मैंने नहीं बनाया, इसे समेट लेने का उपाय क्या है?

जीवनभर नवकार मंत्र को याद नहीं करने की प्रतिज्ञा लो। उसी समय यह तेज गोला अदृश्य हो जायेगा। फिर मैं हाजिर हो जाऊंगा। मैं हाजिर होकर तुम्हारी मनोकामना पूर्ण कर दूंगा। प्रतिज्ञा ले लो। इस मंत्र के आराधक के सामने खड़े रहने की मेरी शक्ति नहीं है। तुम प्रतिज्ञा लो। नवकार मंत्र की आराधना, रटना, स्मरण या उच्चारण आज के बाद जिंदगी में तुम नहीं करोगे, ऐसी प्रतिज्ञा, स्वयं नवकार मंत्र की सौगंध लेकर करो।

श्रीकांत अंतरिक्ष में से आ रही यह आवाज सुन रहा था। नवकार मंत्र का उच्चारण नहीं करने की प्रतिज्ञा लेने का वह "मैला देव" उसे कह रहा था। ऐसी प्रतिज्ञा ली जाए तो ही वह तेज पुंज अदृश्य होगा और तो ही वह वहां हाजिर हो सकता था।

श्रीकांत विचारों में डूब गया। "नवकार मंत्र का यह प्रभाव?" वह मन ही मन बोल उठा। उसका विचार प्रवाह चालू हो गया। वापिस आवाज आई, तुम्हें सिद्धि चाहिये? नवकार मंत्र का रटन छोड़ देने की प्रतिज्ञा नहीं लो, तब तक मैं प्रत्यक्ष नहीं हो सकता हूं। प्रत्यक्ष हुए बिना यह सिद्धि मैं तुम्हें नहीं दे सकता।

श्रीकांत ने जवाब नहीं दिया।

"जल्दी करो, प्रतिज्ञा ले लो। अद्‌भूत सिद्धि प्राप्त करने का यह अवसर मत जाने दो।"

श्रीकांत चुप ही रहा, उसका मन गद्‌गद हो गया, अहो! नवकार मंत्र का ऐसा, अपूर्व चमत्कार है? अद्‌भूत सिद्धि देने की शक्ति रखने वाला यह देव भी, इसके प्रभाव के सामने, लाचार बन गया है। श्रीकांत के मन में विचारधाराएं चल पड़ीं।

मैं कैसा मूर्ख! महामुर्ख! नमस्कार महामंत्र का रटन मैं बचपन से करता आया हूं, फिर भी इसके प्रभाव से अनजान ही रहा और ऐसी एक तुच्छ लौकिक शक्ति प्राप्त करने के लिये मैंने ऐसा भीषण पुरूषार्थ किया। श्रीकांत का अंतर रो पड़ा।

प्रतिज्ञा लो, प्रतिज्ञा लो, जल्दी करो। हाथ में आए अवसर को जाने मत दो, जिन्दगी भर पछताओगे।- ऊपर से फिर आवाज आई।

श्रीकांत का मौन नहीं टूटा। प्रतिज्ञा ले लूं, तो जन्म-जन्मांतर में पछताना ही मेरे भाग्य में रहेगा। वह विचार कर रहा था।

विचार मत करो, आया हुआ मौका दुबारा नहीं मिलेगा-पुनः आवाज आई।

किंतु श्रीकांत का लक्ष्य तो अब नवकार मंत्र में ही स्थिर हो गया था। ऐसा महाप्रभावक मंत्र जिससे यह देव भी डरता है, ऐसे महामंत्र का त्याग करके मुझे क्या प्राप्त करना है?

जन्म-जन्मांतर की तपस्या पर पानी फेरना है? भवो-भव की पुण्याई का अपने हाथ से अग्नि संस्कार करना है? श्रीकांत के अंतर की गहराई में से यह जवाब आया।

नहीं, नहीं, यह तो सोने के बदले पत्थर लेने जैसी बात है, ऐसा कभी नहीं हो सकता। ऐसी एक करोड़ सिद्धियां भी मिलती हों, तो भी मैं नवकार मंत्र के त्याग करने की मूर्खता नहीं कर सकता। श्रीकांत के अन्तःकरण में यह निर्णय हो गया।

तब मैं जाऊं? -उस मैले देव ने पूछा।

श्रीकांत को अब कुछ भी जवाब देने की आवश्यकता नहीं लगी। वह चुप रहा। नवकार मंत्र का जाप वहीं श्मशान में चालू कर दिया।

स्वामी मुझे आज्ञा दो, जाने की अनुज्ञा दो। आपकी आज्ञा जब तक नहीं मिलेगी, तब तक मैं यहां से नहीं जा सकता। कृपा करो, मेरे पर दया करो। चला जा, इतने दो शब्द बोलो। वह देव अब लाचारी दिखा रहा था।

चला जा। श्रीकांत ने आज्ञा दी।

रात भर श्रीकांत वहीं बैठा रहा। नवकार मंत्र का जाप, वह वहां बैठा-बैठा, करता रहा। वहां उसकी आत्मा को समाधिभाव मिल गया। सूर्यनारायण की किरणों ने श्रीकांत के शरीर को स्पर्श किया तब उसने अपने नेत्र खोले।

उसके चारों तरफ पुष्प बिखरे हुए थे। इसके गले में पुष्पों की माला थी। जब वह प्रसन्नचित्तता से वहां से उठकर गांव की ओर चलने लगा तब गगन में से आ रहे दिव्यनाद ने वातावरण को भी प्रफुल्लित बना दिया था।

*** शिष्य के हृदय में गुरू का स्थान हो यह बड़ी बात नहीं है। बड़ी बात तो यह है कि गुरू के हृदय में शिष्य का स्थान हो।**

शासन समाचार

आचार्यश्री का आगमन हुआ

उज्जैन-उज्जैन में श्री अभ्युदय-पुरम् जैन गुरूकुल की संस्थापना करनेवाले मालव मातेन्द्र आचार्य श्री मुक्तिसागरसूरीजी का आगमन हुआ। 19 एवं 20 फरवरी को उज्जैन में स्थिरता के उपरांत आपश्री गुरूकुल पधारे। यहां से आपश्री ने चार्तुमास हेतु बैंगलोर की ओर प्रस्थान किया।

सात मुमुक्षुओं का दीक्षा महोत्सव

सूरत- पूज्य आचार्य श्री रत्नचंद्र सूरीजी म.सा.की निश्रा में सात मुमुक्षुओं का दीक्षा प्रसंग से जिनशासन की भव्य प्रभावना हुई। गुरू राम शताब्दी महोत्सव के अंतर्गत सम्पन्न हुए दीक्षा महोत्सव का जोरदार जमा, अहमदाबाद में आपश्री की निश्रा में श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनालय की प्रतिष्ठा भी सम्पन्न हुई। आपश्री का आगामी चार्तुमास मालदास स्ट्रीट, उदयपुर में निश्चित हुआ है।

श्री शांतिनाथ मंदिर में ध्वजा चढ़ाई गई

महिदपुर- आंचलिया परिवार के द्वारा श्री शांतिनाथ रथ मंदिर में पूज्य आचार्य श्री मुक्तिसागरजी म.सा. एवं साध्वी श्री सूर्यकांताश्रीजी म.सा. की निश्रा में ध्वजा चढ़ाई गई। श्री सिद्धचक्र मंडल के द्वारा सत्तरभेदी पूजन पढ़ाई गई। आंचलिया परिवार के द्वारा साधु-साध्वीजी को काबली वोराई गई। संघ की नवकारसी भी हुई।

शिष्य अपने गुरू के दर्शन के लिए घर से चल पड़ा। रास्ते में नदी पड़ी। उसे अपने गुरू पर अपार श्रद्धा थी। नदी उसके मार्ग में बाधक बनना चाहती थी, पर जब वह नदी के किनारे पहुंचा तो अपने गुरू का नाम लेते हुए पानी में कदम रखकर उस पार पहुंच गया। नदी के दूसरे किनारे पर ही तो गुरू की कुटिया थी। गुरू ने अपने शिष्य को बहुत दिनों बाद देखा तो उनकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। शिष्य चरणस्पर्श के लिए नीचे झुका ही था कि उन्होंने बीच से ही उठाकर गले से लगा लिया। शिष्य ने नदी की बात बताई। क्षण भर में ही उनका ध्यान भंग हुआ। उन्होंने सोचा- मेरे नाम में यदि इतनी शक्ति है तो मैं बहुत ही महान और शक्तिशाली हूं। अगले दिन नाव का सहारा न लेकर नदी पार करने के लिये मैं-मैं-मैं कहकर जैसे ही कदम बढ़ाया कि पाँव रखते ही नदी में डूबने लगे और देखते-ही-देखते उनका प्रणांत हो गया।

चोरी हुई आंगी वापिस मिल गई

* पू.मुनिश्री जिनचन्द्रविजयजी म.सा.

हमारे गांव झींझुवाड़ में संवत् 2022 में पूज्य महाभद्र विजयजी म.सा. तथा महासेनविजयजी म.सा.आदि मुनि भगवंतों का चार्तुमास था।

पूज्य महान तपस्वी मुनिराज श्री महाभद्रविजयजी म.सा. व्याख्यान में सुन्दर शैली से उपदेश देते थे और नवकार मंत्र का प्रभाव और आत्मोन्नति के लिये नवकार मंत्र ही परम औषधि है, वगैरह दृष्टांतों द्वारा उपदेश देते थे। पूज्य महासेन विजयजी म.सा. 'नमो अरिहंताण' पद की माला के जाप द्वारा करोड़पति बनवाने का प्रयत्न करते थे, और कम से कम दस माला प्रतिदिन गिनने से तीस वर्ष में करोड़पति (मंत्र जाप के) हो जाओ, ऐसा कहते थे।

इससे मैंने वह जाप शुरू किया। उससे पहले भी मेरी प्रतिदिन एक पक्की नवकार की माला चालु ही थी।

मेरी दीक्षा लेने की भावना कितने ही समय से थी। किन्तु पत्नी एवं पुत्र के साथ लुं तो ज्यादा अच्छा, वैसी भावना थी।

मुझसे पूर्व, मेरे पिताश्री एवं लघु बांधव ने सं. 1990 में दीक्षा ली थी। उसमें पिता बहुत ही आत्महितचिंतक थे। वे संसार में रहकर भी साधु जैसा जीवन जीते थे। उन्होंने 35-46-60-70 उपवासों की उग्र तपस्याएं 50 वर्ष की उम्र में दीक्षा लेने के बावजूद की थी। बीच में ज्ञान प्राप्ति भी चालू थी। ऐसे उत्तम पिता के वारिस होने के कारण सं. 1966 में उनके 70 उपवास के समय हमारे घर के जितने लोग गये थे, उन्होंने मिलकर 70 उपवास करने का सोचा। इस उत्तम विचार से मैंने अट्ठाई की। इससे पूर्व मैंने छट्ठ, अट्ठम भी नहीं की हुई थी। फिर भी अट्ठाई अच्छी हुई। उससे ही तप-जप में वृद्धि हुई।

पिताजी श्री विलासविजयजी म.सा. के आशीर्वाद से हमारे घर में हम चार भाई एवं दो पत्नियाँ और लड़के भी मासक्षमण तक की तपस्याएं कर सके हैं।

लघु बांधव श्री ॐकारविजयजी म.सा. गुरू विनय भक्ति में ओत प्रोत होकर ज्ञान में बहुत ही आगे बढ़गये। वह तत्वज्ञानी और विचक्षण होने से आचार्य पद योग्य हुए और उन्होंने सं. 2010 में आचार्य पद प्राप्त किया।

मेरे बड़े लड़के की 10 वर्ष की उम्र में दीक्षा लेने की भावना हुई। यह भावना समझपूर्वक की है ऐसा जानकर मैंने शिखरजी की यात्रा करवाकर अत्यन्त ठाठपूर्वक घर आंगन में ही महोत्सवपूर्वक दीक्षा दिलायी। वे आज यशोविजयजी म.सा. (हाल आचार्य) के रूप में ज्ञान-ध्यान में आगे बढ़ रहे हैं।

इस प्रकार मेरे परिवार एवं रिश्तेदारों में से कई दीक्षित हुए। माताजी के पिताजी, माता, मौसी का लड़का, भानजी एवं तीन फोई परिवार के साथ दीक्षित हुई हैं। आज न्याय विशारद एवं आगमों के उद्धारक के रूप में कार्य करने वाले पूज्य जम्बू विजयजी म.सा. वर्तमान में शासन उन्नति का कार्य कर रहे हैं। उनके पास विदेशों से पढ़ने के लिये लोग आते हैं। उनका भी उस साल चार्तुमास समी में था।

ऐसे अनेक आलंबनों से मेरी दीक्षा की भावना प्रबल बनी और सं. 2022 में मैं नवाणु यात्रा करने परिवार के साथ गया। पत्नी की बाल्यावस्था से ही दीक्षा की भावना होने के बावजूद माता-पिता की ढील के कारण उत्साह दब गया किन्तु शादी के बाद भी उसका दही बन्द था। उसे हमारे घर के वातावरण में आराधना का सुन्दर वेग मिला जिससे ही छोटे पुत्र जसवन्त को दीक्षा दिलाने में सभी सम्मत हुए थे।

उस समय मेरी दीक्षा की भावना होने के बावजूद छोटा पुत्र महेन्द्र पांच वर्ष का होने के कारण थोड़ा समय रूककर गृहस्थ जीवन में ही हो सके उतनी सुन्दर आराधना मैं करता था।

पुत्र महेन्द्र को भी नवाणु यात्रा के समय विधिपूर्वक एवं भक्ति पूर्वक आराधना से वैराग्य वृद्धि, हुई दीक्षा लेने की भावना हुई। मैट्रिक की पढ़ाई बीच में ही छोड़कर धार्मिक अभ्यास हेतु पाटण रूका और पंच प्रतिक्रमण-प्रकरण-भाष्य आदि का अभ्यास किया। उसने प्रतिदिन प्रतिक्रमण करने का एवं गर्म पानी पीने का प्रारंभ किया।

मेरी दीक्षा संवत् 2023 में तय हुई और उस समय महेन्द्र तथा उसकी माँ की तीव्र इच्छा न होने के कारण उनको छोड़कर मेरी दीक्षा का मुहूर्त निकलवाया। उस समय मेरी एक भत्तीजी की भी भावना थी।

हम दोनों समाज के रिवाज के अनुसार बन्दोले खा रहे थे और अंतिम महिने के दिनों में महेन्द्र एवं उसकी माँ भी हमारे साथ दीक्षा लेने को तैयार हो गई साथ में एक भत्तीजी जो इस साल ही शिखरजी की यात्रा करके आयी थी, उसकी भी हमारे साथ ही दीक्षा लेने की भावना होने से हम पांचों की दीक्षा सं. 2023 माघ सुदि-10 को तय हुई।

एक ही परिवार की पांच दीक्षा होने से गांव में खूब उत्साह था। आमंत्रण पत्रिकाएं गांवों गांव भिजवाई गयी। साथ-साथ में गांववालों ने अपने-अपने सगे-संबंधियों को पत्र लिखे कि, 'ऐसा अनुपम अवसर बार-बार देखने को नहीं मिलता है' और हमको कहते कि-'चाहे जितने मेहमान आये, उनकी व्यवस्था के लिये हम सभी खड़े पैर तैयार हैं।

महोत्सव माघ सुदि-3 से प्रारंभ हुआ। प्रतिदिन पूजा, आंगी एवं भावना होती थी। गायक खूब भक्ति जमाते थे।

पुजारी बसरामभाई ने माघ सुदि-8 के दिन मुझे पूछा कि आज कितनी आंगी करूं? मैंने कहा कि- नीचे मूलनायक भगवान तथा दोनों बड़े जिनबिम्बों की करना। उसने उस प्रकार की। माघ सुदि-9 को वरघोड़ा और सन्मान पत्र का कार्यक्रम था। उस कारण पुजारी ने पूछा कि-आज कितनी आंगी रचाऊं? मैंने कहा-नीचे तीन भगवान और ऊपर मूलनायक भगवान की रचाना।

प्रतिदिन बाकी के सभी जिनबिम्बों को बरक लगाता था। उस प्रकार सभी जिनबिम्बों की अंग रचना करके पुजारी ने नीचे बोर्ड के ऊपर लिखा कि- ऊपर आंगी है, इसलिये दर्शन करने पधारना।

हम सभी वरघोड़े के बाद नवकारसी के कामकाज में लाभ ले रहे थे कि दो आदमी आंगी मुकुट सहित लेकर भाग गये।

उसके बाद एक श्राविका ऊपर दर्शनार्थ गयी और आंगी न देखने पर नीचे आकर पुजारी को कहा कि- तुम लिखते हो कि ऊपर आंगी है। किन्तु आंगी कहां रची है?

पुजारी ने कहा- मैंने रची है, फिर ऐसे कैसे हो सकता है? ऊपर जाकर देखा तो आंगी-मुकुट गायब! तुरन्त नीचे आकर सूचना दी कि- आंगी चोरी हुई है। मुझे समाचार मिलते ही दुःख हुआ कि मेरे कहने से ही आंगी रचाई और गयी तो मेरी जिम्मेदारी है, यह समझकर मैंने बहुत ही भाव पूर्वक नवकार मंत्र का स्मरण किया। फिर गांव के एवं मेरी दीक्षा के प्रसंग को दिमाग में रखकर सोचा कि इस गांव का कोई व्यक्ति ऐसा कार्य नहीं कर सकता, क्योंकि मेरा जीवन इस प्रकार का था। सभी के साथ मेरा प्रेम ऐसा था कि मेरी दीक्षा के समाचार से सभी को दुःख होता था कि अब कैसे होगा। इसलिये मुझे कहते थे कि, आप तो बिना दीक्षा ही, दीक्षा जैसा जीवन जी रहे है फिर किसलिए दीक्षा ले रहे हैं? हमारा क्या होगा?

तब मैं कहता-यदि मैं दीक्षा के बाद प्रमादी बनुं तो कहना कि घर में रहकर भी तीन चार घंटे आराधना करते थे, तो उसे छोड़कर कैसे प्रमादी बने?

अब आंगी के समाचार गांव में फैल गये। पुलिस को बात की और कहा- इस गांव में कोई ऐसा नहीं होगा, किन्तु बाहर से आये गये लोगों की जांच हो तो ज्यादा अच्छा। पुलिस अधिकारी भी समझ गया। तुरन्त गाड़ी मंगवाकर अधिकारी तथा दूसरे तीन-चार आदमी बैठे और बड़े स्टेशनों पर समाचार देने निकले।

उस समय टेलफोन वगैरह की व्यवस्था नहीं थी। आश्चर्य की बात यह हुई कि जो दो आदमी आंगी चुराकर ले गये वह दसाड़ा-चौराहे पर किसी ट्रक द्वारा पहुंच गये थे और उन्हें तत्काल दूसरे किसी गांव भागना था।

पुलिस की गाड़ी को दूसरी गाड़ी समझकर इन दोनों ने हाथ ऊंचाकर रोकने की सूचना दी। पुलिस ने भी ऐसे अनजान लोगों को देखते ही गाड़ी रोक दी। पुलिस को देखते ही एक चोर भागा, दूसरा भागता उसके पहले ही पुलिस ने उसे पकड़ लिया और थैली में देखा तो आंगी-मुकुट थे। तुरन्त ही पुलिस अधिकारी चोर तथा आंगी लेकर आये।

हम प्रतिक्रमण करके आये, वहां समाचार मिले कि आंगी मिल गयी है। यह चमत्कार देखकर सभी आश्चर्य मुग्ध-बन गये।

वास्तव में यह नवकार मंत्र का ही प्रभाव था। यदि आंगी नहीं आयी होती तो दीक्षा की उमंग भंग हो जाती। किन्तु चमत्कार से आंगी आ गयी और उत्साह में और अभिवृद्धि हुई।

इस चमत्कारिक घटना के बीच हमारी दीक्षा अत्यन्त आनन्द-उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुई।

नवकार मंत्र की विशुद्ध आराधना द्वारा सभी आत्म श्रेय साधें, यही मंगल कामना।

जब भगवान बुद्ध आत्मशांति की खोज में गृह त्यागकर निकले और आत्मा की प्राप्ति का मार्ग विभिन्न गुरूजनों से पूछा तो उनके अंतः से आवाज आई, ''तप से अपने भीतर प्रकाश उत्पन्न कर।'' तप और शम से मैं स्वयं ही तत्व को जानूंगा और उसे ग्रहण करूंगा, यह संकल्प उन्होंने लिया और वे आत्मबोध को प्राप्त कर बुद्ध कहलाए।

मैं अमरकुमार

✱ पू.आ.श्री विजयमुक्ति/मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म.

एक कवि ने कहा है- ईश्वर सर्वत्र पहुंच नहीं सकता, इसीलिये उसने माता को सर्जन किया है।

कितनी मधुरता है : 'माँ' शब्द में? शहद, शक्कर और द्राक्ष-इस सभी की मीठास भी माँ शब्द के सामने फिकी लगती है।

''मीठा मधु ने मीठा मेहुला रे लोल
तेथी मीठी ते मारी मात रे
जननीनी जोड़ सखी नवि जड़े रे लोल।''

उपर्युक्त पंक्तियों में गुजराती कवि ने माँ का कितना हृदयस्पर्शी वर्णन किया है?

'मा ते मा बीजा वगडाना वा' इत्यादि गुजराती कहावते भी माँ की ही महिमा बताती है।

ऐसी माँ कभी पुत्र की शत्रु बन सकती है?

पुत्र माताका शत्रु बन सकता है, परन्तु माँ कभी नहीं।

'कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति' पुत्र कुपुत्र हो सकता है, लेकिन माता कुमाता कभी नहीं हो सकती।

परन्तु यह संसार विचित्रताओं का भंडार है। यहां कभी-कभी माता भी कुमाता बन सकती हैं।

अन्यत्र कहां देखने जाएं? मेरी ही बात ले लो। मेरी माता ही मेरी दुश्मन बनी थी। माँ का नाम तो था भद्रा, मगर उसने कभी मेरा भद्र (कल्याण) किया ही नहीं। वह तो सदा मेरे लिये भद्रा (विष्टि) ही बनी रही। चार भाईयों में मैं सबसे छोटा। सामान्य रूप से छोटा पुत्र माँ का सबसे ज्यादा प्रिय होता है, लेकिन मेरे जीवन में विपरीत था। मैं ही सबसे अधिक अप्रिय था। दुनिया से दग्ध हुआ मनुष्य ठण्डक प्राप्त करने के लिए माँ के पास जाता है, लेकिन माँ के हृदय से ही अग्नि प्रज्वलित हो तो? बालक के तो लिए माँ ही विश्रान्ति का अन्तिम स्थान.... किन्तु मेरे लिये तो वह क्लेश का स्थान बनी थी।

हमारा पूरा कुटुम्ब गरीबी में ही फटेहाल रहता था। जीती-जागती गरीबी देखनी हो तो हमारा कुटुम्ब देख लो। गरीबों के साथ क्लेश-झगड़े भी जुड़े हुए होते हैं।

हम ब्राह्मण थे। ब्राह्मण अर्थात् याचक जाति। मांगनेवाला मनुष्य कभी धनवान हो सकता है? एक बार मांगकर खाने की आदत पड़ गई फिर वह निकलती नहीं है। बिना मेहनत मुफ्त का मिलता हो तो मेहनत क्यों करनी? बिना मेहनत हमारा कुटुम्ब आलसी बन गया था। आलस्य हो वहां गरीबी घुस ही जाती है न! हमने ही गरीबी को सामने से आमंत्रण दिया था। आलसी मनुष्य को कभी भी गरीबी के लिए फरियाद करनी ही नहीं चाहिए।

मेरे पिताजी ऋषभदास आलसी होकर पड़े रहते और मेरी माँ भद्रा पूरे दिन झगड़ती रहती, अपशब्द बोला करती।

ऐसे ही ऐसे रोज सुबह से शाम हो जाती। ज्यादातर मैं तो भूखा ही सो जाता। मुझे याद नहीं कि कभी मैंने भरपेट भोजन किया हो।

ढाम.... ढीम....ढीम....ढाम....ढीम.... एक दिन हमारे राजगृह नगर में ढींढोरा पीटाया। हम सभी चौकन्ने हो गये। हमें घोषणा सुनाई दी।

सुनो.... सुनो.... सुनो.... सभी प्रजाजन! सुनो.... आप सभी जानते ही हैं कि महाराजा श्री श्रेणिक नई चित्रशाला बना रहे है, लेकिन उसका दरवाजा बार-बार टूट जाता हैं। इस बारे में ब्राह्मण पंडितों ने राजा को सलाह दी है कि किसी बत्तीस लक्षण युक्त बालक का होम (बलि) करो.... यदि ऐसा बालक जो कोई माता-पिता राजा को देंगे, राजा उन्हें उस बालक के वजन जितना सोना देगा।

इस ढींढोरे को सुनकर मेरे माता-पिता अत्यंत खुश हो गये। मानो लॉटरी लग गई। उन्होंने सोचा : हमारे चार पुत्र है, उसमें से एक दे दे तो? एक का खर्च बचेगा, और उसके अतिरिक्त ढेर सारा सोना भी मिलेगा। इतना सोना हमें इस जनम में कहां देखने मिलनेवाला हैं? यह हमारा अमरिया वैसे भी अप्रिय है, हमें देखने पर भी अच्छा नहीं लगता.... बस.... उसे दे देते है, हमारा और राजा का दोनों का काम हो जायेगा।

ढींढोरा वहीं पर रूकवा दिया गया।

मुझे बलि के रूप में दिया जा रहा हैं यह जानते ही मैं तो कांप उठा, जीते जी जल जाना? वह भी किसी गून्हे के बिना? किस लिए मनुष्य जैसे मनुष्य को अग्नि में होम देना? ये कैसे ब्राह्मण? यह कैसा यज्ञ? यह कैसा राजा? कोई कहनेवाला ही नहीं हैं? ऐसे यज्ञ को धर्म कहा जाता है? इसे धर्म कहा जाये तो अधर्म किसे कहेंगे? मेरे मन में प्रश्नों की झड़ी लगी। परन्तु मेरे प्रश्नों का जवाब देनेवाला कोई नहीं था। जवाब तो क्या? कोई सुनने के लिये भी तैयार नहीं था।

मैं माता-पिता के पास गया और चरणों में मस्तक रखकर कहने लगा- मेहरबानी करके पैसों के लिये मुझे जान से मत मार डालो। पैसा महान है या जीवन महान? बाघिन भी अपने बच्चे को मार नहीं डालती.... माँ! तू माँ होकर यह क्या कर रही हैं? पिताजी आप क्या देख रहे हो? मैं आपका ही अंश हूं। मेरी

हत्या अंशतः क्या आपकी ही हत्या नहीं है?

परन्तु माता-पिता की आंखें सोने से चौंधिया गई थी। मेरे सामने देखने के लिये भी वे तैयार नहीं थे.... वहां बचाने की तो बात ही कहां उठती है? वैसे भी मैं उनको अच्छा नहीं लगता था.... और मुझे देने पर सोना भी मिलनेवाला था। ऐसा मौका वे चूकेंगे? एक पंथ दो काज! बला भी टले सोना भी मिले।

उसके बाद मैं काका, मामा, मौसा, इत्यादि सब स्वजनों के पास गया.... मगर किसी के पेट का पानी भी नहीं हिला। मुझे बचाने कोई आगे न आया। संसार की स्वार्थाधता उसके नग्न स्वरूप में मुझे देखने मिली। सभी सगे-संबंधीओं ने एक ही जवाब दिया- तेरे माता-पिता ही तुझे बेच देते हो वहां हम क्या करें? तुझ पर तेरे माता-पिता का संपूर्ण अधिकार है। तू उनके पास ही जा। काम होगा तो वहीं से होगा। नहीं तो कहीं से भी होनेवाला नहीं है।

सभी ऐसी सलाह देकर छूट गये, परन्तु मेरे माता-पिता को समझाने का प्रयत्न किसी ने नहीं किया।

हमें क्या? मरेगा तो अमर मरेगा.... हमें क्या लेना देना? ऐसे खयालों में डूबे हुए स्वजनों से अधिक अपेक्षा भी क्या रखें?

मुझे पकड़कर राजा के पास ले जाया गया। राजा ने मेरे वजन जितना सोना माता-पिता को दिया.... वे अत्यंत खुश हो गये। उनका काम हो गया।

मैं राजा के चरणों में पड़ा और आजिजी करने लगा- राजन्! आप तो सबके नाथ हो। प्रजा का रक्षण करना आपका काम है। रक्षण के स्थान पर आप भक्षण करेंगे तो प्रजा कहां जायेगी? बाड़(Boundry Border) ही फल खाने लग जायें तो कहां जाए? अर्थात् रक्षक ही भक्षक बन जाए तो कहां जाएँ? पानी में से ही आग लगे तो कहां जाएं? राजन्! आप सामर्थ्यवान है। कैसे भी करके मुझे जीवन-दान कीजिए। मैं जानता हूं कि आप चित्रशाला बनाना चाहते है। तब क्या किसी के रक्त से रंजित हुई आपकी चित्रशाला पवित्र मानी जायेगी? उसके मूल में किसी की भी आहें पड़ी हो तो वह क्या आपके लिये शोभास्पद बात है? एक चित्रशाला तैयार न हुई तो ऐसा क्या काम रूक जानेवाला हैं? कदाचित तैयार हो गई तो कौन-सी शोभा बढ़नेवाली हैं? शोभा तो नहीं बढ़ेगी किन्तु राजन्! सच कहता हूं कि आपकी अपकीर्ति बढ़ेगी। दुनिया कहेगी- यह कैसा क्रूर राजा? एक चित्रशाला के लिए एक निर्दोष बालक की हत्या करवाई। राजन्! संसार की कोई भी निर्जीव वस्तु से भी एक के जीवन का मूल्य अधिक है। कोई भी जड़ पदार्थ किसी के भी जीवन से ज्यादा मूल्यवान नहीं हैं। श्रेष्ठ से श्रेष्ठ महल से भी एक बालक महान है, भले ने वह बदसूरत ही क्यों न हो?

राजा मेरी दलीलें सुनकर दयार्द्र बन गया हो वैसा लगा, परन्तु मैं देख रहा था कि यज्ञ के पुरोहित राजा को इशारों से समझा रहे थे, हुं.... ऐसे दया की नहीं जाती। यह तो ऐसे ही चलता रहता है।

राजा ने मुझे कहा- देख अमर! मैंने तो तुझे सोना देकर खरीद लिया है। इसमें मेरा कोई दोष नहीं है। दोष बेचनेवालों का है, तेरे माता-पिता का है। उन्होंने ही सोने के खातिर तुझे बेचा है। मैं तो जो कर रहा हूं वह न्यायपूर्वक ही कर रहा हूं। मैं चाहता तो तेरे जैसे किसी बालक को जबरदस्ती से भी यहां ला सकता था, परन्तु मेरे हृदय में रही हुई न्यायनिष्ठता मुझे वैसा करने की मंजूरी नहीं दे रही थी। इसमें मेरा कोई अन्याय हो तो मुझे बता।

राजा के सामने मैं ज्यादा तो क्या बोलूं?

मैं मौन हो गया। मुझे विचार पनपा : ये पुरोहित धर्म के नाम से कितने मनुष्यों की इस तरह कतल करते होंगे? कितने बकरे की इसमें बलि दी जाती होगी? बेचारे अबोल प्राणी किसे फरियाद करने जाए? मैं मनुष्य हूं। बोलने में समर्थ हूं। फिर भी मेरी बात कोई सुनता नहीं है वहां बेचारे बकरों की तो कौन सुनेगा? मेरी चले तो यज्ञ के सभी बलिदान तुरन्त ही बन्द करवा दूं! ये सब पुरोहित यज्ञ के नाम से सिर्फ अपनी स्वाद-लालसा पुष्ट कर रहे हैं। मंत्र-संस्कृत बकरों का मांस खाते इन्हें कोई पाप लगता ही नहीं है। इन्होंने अपनी रस-लालसा पोसने के लिये स्वयं ने ही धर्मशास्त्र बना दिये हैं। मेरी चले तो पूरे भारत वर्ष में चलती इन कुप्रथाओं का अन्त ला दूं और करोड़ें निर्दोष प्राणियों को बचा लूं.... परन्तु इस वक्त मैं अपने आप को भी बचा नहीं सकता वहां दूसरों की तो बात ही कहां?

मुझे हृष्ट-पुष्ट भट्टों ने पवित्र पानी से नहलाया, केसर-चन्दन का विलेपन किया और गले में पुष्पमाला पहनाते हुए कहा- वत्स! तू धन्य है। तुझे मृत्यु के बाद सीधा स्वर्ग में स्थान मिलेगा। यज्ञ में तो पुण्य होता है उसे ही बलिदान देने का सौभाग्य प्राप्त होता हैं।

भट्टों की ऐसी मूर्खतापूर्ण वाणी सुनकर मेरा मन बोल उठा- अरे मूर्खों! यदि इस तरह स्वर्ग मिल जाता हो तो तुम्हारे माँ-बापों को भेज दो न? अरे.... तुम स्वयं ही पहुंच जाओ न!

ठीक.... इस समय इन बिचारों पर भी क्या गुस्सा करूं?वे करें भी क्या? इन्हें परम्परा ही ऐसी मिली हैं। अधिकतर लोग परम्परा के ही पूजक होते हैं। गलत परंपरा को चुनौती देनेवाला

तो लाखों में एक होता है। ऐसी अपेक्षा इन भट्टों से कैसे रख सकते हैं? इसका निर्वाह ऐसी परम्पराओं से ही चल रहा है। इसलिये वे तो परंपरा को बराबर पकड़े रहे यह तो स्वाभाविक ही है। परन्तु अब इस सब विचारों को मैं गलत समझने लगा। विचार करने का कोई अर्थ भी नहीं था। क्योंकि अब मेरा अन्त काल मुझे सामने ही दिखाई दे रहा था।

पांच मिनिट में ही आपको मर जाना है तो आप क्या करेंगे? नवकार मंत्र में तल्लीन बन जाए। सच है न? मैं भी नवकार मंत्र में तल्लीन बन गया। आप कहेंगे- किन्तु तुम तो ब्राह्मण थे। गायत्री मंत्र आता हो यह बराबर, परन्तु नवकार कहां से आया?

हां.... तो यह बात तो मैं बताना ही भूल गया। एक बार जब मैं जंगल में लकड़ी काटने गया हुआ था तब मुझे एक जैन मुनि मिले, उन्होंने मुझे नवकार मंत्र सिखाया था। यह नवकार मैं हमेशा गिना करता था। नवकार गिनते ही मेरे सभी क्लेश नष्ट हो जाते थे। मैं अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव करता।

अभी तो मृत्यु सामने दिखाई दे रही थी। इससे मैंने अपना मन नवकार में एकाग्र बना दिया। नवकार के अलावा दूसरा सब भूल गया, अरे.... मृत्यु भी भूल गया।

अब मुझे यज्ञ-कुंड के पास लाया गया। अग्नि कुंड में भड़.... भड़.... करती ज्वाला आकाश को छू रही थी। लेकिन मैं तो निर्भय होकर नवकार में एकाग्र हो गया।

पुरोहितों ने मुझे उठाकर अग्नि-ज्वालाओं में डाल दिया। परन्तु.... यह क्या? नवकार के प्रभाव से अदृश्य रूप में आये हुए देवों ने मुझे सिंहासन पर बिठा दिया। अग्निज्वाला शान्त हो गई। राजा और पुरोहित उल्टे मस्तक जमीन पर पछड़ये। राजा के मुंह से रक्त बहने लगा।

चमत्कार वहां नमस्कार ?

नहीं.... नमस्कार वहां चमत्कार का सर्जन हुआ।

सभा में उपस्थित ब्राह्मण वगेरह मेरे पैरों में पड़ गये और मेरी पूजा करने लगे तथा कहने लगे- महात्मन्! कृपा करो और राजा को होंश में लाओ।

मैंने नवकार से मंत्रित पानी उन पर छिड़का और वे होश में आ गये।

मैंने तब ऐसा नहीं सोचा : जो लोग मुझे मारने तैयार हुए थे उनको ही अब मैं जागृत बनाऊं? भले रहे वे बेहोश। भले हुआ करें रक्त का वमन! बदमाशों को उनके पापों का फल मिला हैं। भले ये भुगते।

नहीं.... नवकार गिननेवाला कभी ऐसे विचार नहीं कर सकता। वह तो सर्व जीवों का, अपने शत्रुओं का भी कल्याण चाहता है। जो सर्वजीवों का मित्र बनता है उसको ही नवकार फलता है। सर्व जीवों के साथ स्नेह का झरना नहीं बहता तब तक नवकार कभी फल नहीं देता। नवकार गिननेवाले कभी इस महत्व की बात को नहीं भूलते।

मेरे पर प्रसन्न हुए श्रेणिक मुझे अपना राज्य देने के लिये तैयार हो गये, तब मैंने कहा- राजन्! मुझे ब्राह्य साम्राज्य नहीं चाहिये, आत्म साम्राज्य चाहिये और उसकी प्राप्ति के लिये मुझे साधु बनना है।

मेरे इस जवाब का लोगों ने तालियों के गड़गड़ट के साथ सत्कार किया। चारों ओर मेरे नाम का जय-जयकार होने लगा किन्तु मुझे इस जय-जयकार में कुछ रस नहीं था। मैं धर्मध्यान में लीन बना। उसमें लीनता बढ़ने से मुझे जातिस्मरण ज्ञान हुआ।

पंच-मुष्ठी से केश-लुंचन कर, साधु-वेष पहनकर मैं साधना करने के लिये गांव बहार स्मशान में जाकर कायोत्सर्ग ध्यान में खड़ा हो गया।

मेरे समाचार सर्वत्र फैल गये थे। मेरे माता-पिता को ऐसे समाचार मिलते ही स्तब्ध हो गये। राजा अब सोना वापस ले लेगा तो? इस डर के मारे सोना अन्दर-अन्दर बांट लिया। बाकी का सोना जमीन में गाड़ दिया। कैसी सोने की माया? अपने पुत्र की महिमा देखकर आनंद होना चाहिये लेकिन यहां दूसरा ही कुछ हो रहा था।

मेरी माँ तो एकदम व्याकुल थीं। रात को नींद भी नहीं आयी। जहां तक अमर जिंदा है, वहां तक मुझे चैन नहीं पड़ेगा- ऐसे भयंकर विचारों के साथ, हाथ में छुरी लेकर वह मेरे पास आ पहुंची। मेरे शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। जिस जननी ने इस देह को जन्म दिया था वही जननी आज टुकड़े-टुकड़ा कर रही थी। संसार में इससे बड़ी कौन-सी विचित्रता हो सकती है?

परन्तु.... टुकड़े-टुकड़े देह के होते है.... आत्मा के कभी टुकड़े होते हैं? मेरी अमर आत्मा बारहवें देवलोक में पहुंच गई।

आज मैं बावीस सागरोपम के आयुष्य वाला देव हूं और मेरी माँ कहां है? वह आप जानते हैं? हाँ.... उसे भी बावीस सागरोपम का ही आयुष्य मिला है। लेकिन देवलोक का नहीं, नरक का.... छट्ठी नरक का।

मेरी हत्या कर खुश होती हुई वह घर की ओर लौट रही थी, उस समय रास्ते में मिली हुई बाघिन ने उसे फाड़कर खा लिया। भयंकर रौद्रध्यान में मृत्यु पाकर वह बेचारी छट्ठी नरक में चली गई। बेचारी मानव-जिंदगी हार गई। मैं उसे दुर्गति से बचा नहीं सका,उसका आज भी मुझे दुःख है।

कालचक्र को समझो...!

✱ मुनि विरक्तसागरजी म.सा.

एक कालचक्र के दो भाग होते है-

1- उत्सर्पिणी काल 2- अवसर्पिणीकाल

1- उत्सर्पिणी काल याने चड़ताकाल 2- अवसर्पिणी काल याने पड़ता (उतरता) काल का पहला आरा उसका नाम ''सुषम-सुषम'' यानि एक का सुख होय, दुःख का नाम नहीं। दूसरा आरा ''सुषम'' यानि सुख किन्तु पहला आरा से कम किंतु दुःख नहीं, तीसरा आरा ''सुषम दुषम यानि सुख ज्यादा और दुःख कम, चौथा आरा ''दुषम सुषम'' यानि दुःख ज्यादा व सुख कम वर्तमान में चल रहा है, पांचवां आरा ''दुषम'' यानि केवल दुःख सुख का नाम नहीं (फिर भी वर्तमान में मानव सुख प्राप्ति के असफल प्रयास में जिन्दगी पूरी कर देता है) और छठा आरा ''दुषम दुषम'' यानि दुःख दुःख ने दुःख यानि छठा आरा महादुखियों/नवकार मंत्र की आराधना के बगैर जिस जीव की मृत्यु होती है व छठा आरा में जनमता है नवकार मंत्र की आराधना करनेवाला छठा आरा में नहीं जन्मता, छठे आरा में जन्मा व्यक्ति नियमा नरक में जाता है। पहले तीसरा आरा युगलियों के होते है। पहले आरे में युगलियों का देहमान 3 गाउ व 3 पल्योपम का आयुष्य दूसरे आरे में युगालियों का देहमान 2 गाऊ का व 2 पल्योपम का आयुष्य तीसरे आरे में युगलियों का देहमान 1 गऊ का व 1 पल्योयम का आयुष्य युगलियों के कमाने की चिन्ता नहीं, सभी आवश्यकतानुसार कल्पवृक्ष पूरी करते है, उनको प्रतिदिन आहार करने की इच्छा नहीं होती, पहले आरे में युगलिये तीन-तीन दिन में दूसरे आरे में 2-2 दिन के अन्तर से आहार लेते है। पहले आरे में एकातरे आहार ग्रहण करते है, पहले तीसरे आरे में वृज ऋषभ नाराथ संघयण होता है यानि शरीर इतना मजबूत होता है कि उनके शरीर पर से हाथी निकल जाए तो भी उनको जरा सी भी चौंट नहीं लगती, दांत बहुत सुंदर होते है, वृद्धावस्था व रोग आते ही नहीं। युगलिये जोड़ में जनमते है और जोड़ से ही मरते है, एक को छींक व दूसरे को बगासी आती है व मृत्यु हो जाती है। आयुष्य के अंतिम छह माह में अगले भव का आयुष्य बांधते है और एक जोड़ने को जन्म देते हैं, पहले आरे में 49 दिन दूसरे आरे में 64 दिन व तीसरे आरे में 79 दिन पालन पौषण करते हैं। भाई-बहिन की तरह जनमते है और वो ही पति पढानं बन जाते है, उनको एक दूसरे के प्रति द्वेष, इर्ष्या बैर जैर नहीं होता मंद कषाय होते है, मन के परिणाम शुद्ध व शुभ होते है, मरकर नियमा देवलोक में जाते हैं। तीसरे आरे के 84 लाख पूर्व तीन वर्ष और साढ़े आठ बाकी रहे तब पहले तीर्थंकर ऋषभदेव भगवान का जन्म हुआ उनका 500 धनुष का देहमान व 84 लाख पूर्व का आयुष्य था, मरूदेवा माता को एक क्रोड़ पूर्व का आयुष्य था भगवान के 100 पुत्र व 2 पुत्री ये सभी मौके में गए, 24 तीर्थंकरों में ऋषभदेव भगवान के तीसरे आरे में व बाकी 23 तीर्थंकर चौथे आरे में हुए, चौथे आरे में जन्में हुए पांचवें आरे में मौके जा सकते हैं किन्तु 5 वें आरे में जन्में हुए मोक्ष नहीं जा सकते। गौतम स्वामी, सुधर्मा स्वामी व जंबुस्वामी ये तीनों चौथे आरे में जन्मे थे और पांचवें आरे मोक्ष गये।

10 कोड़ कोड़ी सागरोपम की एक उप्सर्पिणी व 10 कोड़ कोड़ी सागरोपम की एक अवसर्पिणी दोनों मिलकर 20 कोड़ कोड़ी सागरोपम का एक कालचक्र होता है उसमें केवल 2 कोड़ कोड़ी सागरोपमकाल में धर्म हो सकता है, अवसर्पिणी काल में पहला, दूसरा व तीसरा आरा ये युगलियों का है, इसमें धर्म नहीं होता। तीसरे आरे के अंत में धर्म शुरू होता है। चौथा आरा में पूरा धर्म शासन जयवंत होता है। पांचवें आरे के अंत तक धर्म होता है, अवसर्पिणीकाल की अपेक्षा से छठे आरे में व उत्सर्पिणीकाल की अपेक्षा से पहला व दूसरा आरा में धर्म नहीं होता है, टुंक में 20 कोड़ कोड़ी के कालचक्र में 18 कोड़ कोड़ी का काल युगलिकों का काल 42 हजार वर्ष दुःख के छठा व पहले आरे के बाकी 2 कोड़ कोड़ी सागरोपम से 42 हजार वर्ष कम ऐसे तीर्थंकर पुरूपीत शासनकाल अर्थात धर्मकाल समझना।

भारत क्षेत्र में कुल 32000 देश है उनमें फला 25।। आर्य देश है जहां धर्म होता है। महाविदेह में हमेशा चौथा आरा व अकर्म भूमि क्षेत्रों में सदा एक जैसा काल होता है, अनार्य देशों में धर्म नहीं होता। अपन सबने महान पुण्योदय से मौंधा मानव भव पाया है, भले तीर्थंकर भगवान का वियोग है किन्तु उनकी अमृत मूल्यवाणी व उनके प्रतिनिधि गुरू भगवंत तो हाजिर है ही तो आईये गुरू भगवंतों का सानिध्य स्वीकार करके सम्यगदर्शन, सम्यग् चारित्र की आराधना करके महाविदेह में जन्म लेकर अधूरी रही साधना को पूर्ण करके कर्मों से मूल होकर मोक्ष मार्ग को प्राप्त करें। यही शुभेच्छा!

जिन आत्माओं को जिस समय संसार का वास्तविक स्वरूप ध्यान में रहता है, उस समय उस आत्मा में सम्यग्दर्शन है- ऐसा आगमकार कहते हैं।

ज्योतिष और अनुभव

✱ डॉ. राधेश्याम अग्रवाल

अनन्तकोटि ब्राह्माण्डक परम पिता के अनेकानेक रूपों में एक ज्योतिष भी है। ज्योतिष में जो कुछ भी है, सबमें परमेश्वर ही व्याप्त है। ग्रह-नक्षत्र और कालचक्र सभी उसी के नियंत्रण में है। हमने अपने जीवन में जो कुछ भी अनुभव किया है, उसका ही यहां उल्लेख करेंगे। इसके पूर्व एक सत्य घटना का उल्लेख कर रहे हैं, जिससे इस क्षेत्र में हमारी प्रवृत्ति हुई। हमारे पैतृक निवास महावन जिला मथुरा में एक उदासीन आश्रम है, जिसमें आज से पचास वर्ष पूर्व एक सन्त थे, उनका नाम था-कार्ष्णि हरिनामदास। सन्त बहुत ही उच्च कोटि के थे। मुझे भी उनके दर्शन एवं अल्प सांनिध्य का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनके पास अनेक भक्त आते थे। अपनी-अपनी समस्याएं बताते थे, उन्हें कुछ न बताकर वे यही कहते-बेटा! भगवान् का भजन करो, सब ठीक हो जायेगा।

एक समय की घटना है, मेरे पूज्य पिताजी अत्यधिक परेशानी में थे, काफी समय हो गया, कोई समाधान नहीं निकल पा रहा था। यह घटना हमारे जन्म से पूर्व की है, जो पिताजी ने लगभग 10-12 साल की अवस्था में मुझे सुनायी थी। गांव में कोई अच्छे ज्योतिषी आये है, पिताजी को जैसे ही इस बात का पता लगा, उन्होंने उनकी खोज प्रारंभ कर दी। पता लगा कि वे रमणरेती आश्रम गये हैं। पिताजी दुकान का व्यवसाय करते थे। मध्यान्हकाल में ही दुकान बन्द कर अपने एक मित्र के साथ रमणरेती चले गये। वहां उन्होंने ज्योतिषी महोदय को बहुत खोजा, पर वे कहीं नहीं मिले। भवितव्यता कुछ और ही कराना चाहती थी। रमणरेती में ही पिताजी के गुरू भी थे। सोचा ज्योतिषी तो मिले नहीं, कम से कम गुरूजी के दर्शन तो कर ही लें, यह लाभ क्यों छोड़ जाय। दोनों महाराजश्री की कुटिया में पहुंच गये। दोपहर का समय था, गुरूजी विश्राम कर रहे थे। अचानक असमय पिताजी को आया देख अवाक रह गये। पूज्य पिताजी का नाम श्री शिवचरनलाल था, महाराजश्री 'शिब्बू' कहकर संबोधन करते थे। उठे और बोले.... आज इस समय कैसे आये? नहीं महाराजश्री! नहीं, कोई बात नहीं है, वैसे ही आ गये है। ऐसा लगा जैसे महाराजश्री के सामने चलचित्र की तरह सारी कहानी आ गयी हो। वे कुछ समय के लिये मौन हो गये। आंखें बन्द कर लीं। जैसे ध्यानमुद्रा में पिताजी के जीवन का लेखा-जोखा देख रहे हों। कुछ ही क्षणों के उपरांत उन्होंने नेत्र खोले और अपना मौन तोड़ते हुए गंभीर मुद्रा में बड़े प्यार से बोले- बेटा, शिब्बू! जो नौकरी करते हैं, उन्हें वेतन कब मिलता है, स्वाभाविक उत्तर था, अगले माह की एक तारीख को। महाराजश्री ने तुरन्त कहा- बेटा, ऐसे ही जो पिछले जन्म में कर्म कर आये हो, उनका फल इस जन्म में ही हो तो मिलेगा। ठाकुरजी का भजन करो, सब ठीक हो जायेगा।

जो मन में समस्या थी, बिना ज्योतिषी के एक क्षण में समाधान हो गया। पिताजी घर आ गये। उन्होंने बताया कि उस दिन के बाद मैंने कभी किसी ज्योतिषी या पण्डित से भविष्य के बारे में कुछ नहीं पूछा।

यही वह प्रथम घटना है, जिसने छोटी उम्र में एक सूत्र दे दिया और खोज हुई ज्योतिष की आखिर ज्योतिष है क्या, इससे भविष्य कैसे बताया जाता है। ग्रंथों का संकलन और अध्ययन प्रारंभ हो गया। कुण्डली निर्माण और फलादेश जितना जाना जा सकता था, 15-16 वर्ष की अवस्था तक ही जान लिया, किंतु आज भी अनेक व्यक्तियों के जीवन एवं कुण्डली का अध्ययन करने पर अपने अनुभव के आधार पर यही कहना है-

विधवा ने जो लिख दयी छठी रात्रि के अंक।
राई घटे न तिल बढ़े रहो जीव निशंक।।

बहुतों के जीवन को देखा, अपने-आपको अच्छे-से देखा, पर महाराजश्री के वाक्य आज भी अकाट्य हैं। पूर्व जन्म का भोग्य तो भोगना ही होगा।

हमारी अपनी अनुभूति है कि जिस प्रकार व्यासजी ने सत्रह पुराणों की रचना की, किंतु मन को शान्ति नहीं मिली। जीवन के कल्याण का कोई मार्ग नहीं आया, तब भगवान् के वाड्मय शरीर-श्रीमद् भगवत की रचना हुई, जो आज भी जीवन के भूत भविष्य और वर्तमान का कल्याण कर रही है।

ठीक इसी प्रकार पराम्बा भगवती मां का हृदय जीवन की दशा को देखकर दुखित हुआ तो आशुतोष भगवान् शंकर से प्रश्न कर बैठी-प्रभो! जीव के कल्याण का कुछ साधन बताओ तो भगवान् शंकर के मुख से आगमशास्त्र प्रकट हुए, जो आज भी विभिन्न रूपों में जीव का कल्याण कर रहे हैं। इसी तरह जीव के कल्याण के लिये ज्योतिष भी भगवान् के विग्रह के रूप में कालचक्र की गणना कर मार्ग दर्शक के रूप में सहायक है। ज्योतिष विषय को लेकर अनेक भ्रांतियां है, कुछ इसे मानते है, कुछ नहीं मानते हैं।

ज्योतिषशास्त्र, हम अपने अनुभव से कह सकते हैं कि

नितान्त सत्य है- यह घोषणा हम प्राच्य मनीषियों के आधार पर कह रहे हैं, आज के व्यवसायी समाज के आधार पर नहीं। हमारे देश की मान्यता थी कि राजदरबारों में विशेषज्ञों को रखा जाता था, जैसे- राजगुरू, राजज्योतिषी, राजवैद्य आदि, जो निःस्वार्थ सेवा करते थे। जो राजा ने अपनी प्रसन्नता से दे दिया, वही पर्याप्त था। आज ये सब व्यवसाय बन गये हैं, इसलिये न वैद्य की औषधि कार्य करती है, न ज्योतिषी का ज्ञान कार्य करता है। जीवन में अनेक ज्योतिषियों से संपर्क हुआ, जिनकी वाणी सत्य हुई, हमने खोज की, वे सभी साधक थे अथवा व्यवसायी थे। अपने अनुभव के आधार पर कह सकते हैं कि ज्योतिष बिना साधना के सफल नहीं हैं।

एक अन्य घटना जो सत्य है या असत्य, हम नहीं कह सकते, किंतु व्यावहारिक अवश्य है। यह दृष्टांत के रूप में ली जा सकती है। यह घटना भी बचपन की है। एक वृद्ध कह रहे थे कि कोई पण्डित ज्योतिष-विद्या का अध्ययन कर घर से लौट रहे थे तो मार्ग में कुछ व्यक्तियों ने परीक्षा के तौर पर हाथ में अंगूठी रखकर प्रश्न किया कि बताओ इसमें क्या है, ज्योतिषी महाशय ने अपना गणित लगाना शुरू किया और बोले कि गोल-गोल है, बीच में छेद भी है तो लोगों ने पूछा कि बताओ फिर क्या है, ज्योतिषी को व्यावहारिक ज्ञान तो था नहीं, तुरन्त उनके मुख से निकल पड़- चक्की का पाट।

सभी उपस्थित जन हंसने लगे कि हाथ में चक्की का पाट कैसे आयेगा! यह व्यावहारिक ज्ञान न होने से घटित हुआ। एक ही देश-काल-लग्न में विभिन्न परिवारों में जन्मे जातकों का भविष्य भी व्यावहारिक ज्ञान से ही संभव है, केवल पुस्तकीय ज्ञान से संभव नहीं। जीवन में अनेक घटनाओं एवं अनुभवों का उल्लेख संभव है, किंतु विस्तार के भय से सूक्ष्म में निवेदन प्रस्तुत है-

1- शनि की महादशा, साढ़ेसाती एवं ढैया प्रायः सभी जीवों के जीवन में आती है, जिसके लग्न में जैसा प्रभाव है उसके अनुसार घटित होता भी है। इसे अनेक व्यक्तियों पर अध्ययन किया, इसका प्रभाव न्यूनाधिक अवश्य होता है। इसे धैर्यपूर्वक काटना चाहिये। मानसिक संतुलन नहीं खोना चाहिये। पीपल की पूजा सर्वोत्तम है।

2- कालसर्पयोग भी आजकल चर्चा का विषय है जो पहले नहीं था, न प्राचीन ग्रंथों में इसका स्पष्ट उल्लेख है। इसकी चिन्ता किसी भी परिस्थिति में न करें, क्योंकि जन्मांग में जब प्रत्येक ग्रह का प्रत्येक भाव के अनुसार फलादेश है, तब अलग से इसकी चिंता आवश्यक नहीं। यदि राहु-केतु के साथ कोई अन्य ग्रह है तो कदापि विचारणीय नहीं है, फिर भी यदि मन न माने तो महामृत्युंजय मंत्र, शिव-उपासना में सब निवारणीय है।

3- जन्मांग में जो भी ग्रह जिस भाव में जिस रूप में स्थित है, वह सब ईश्वर-अंश है, इस आशय से भगवच्चिन्तन करने से विषम परिस्थिति में बदलाव निश्चय होता है।

4- जब प्रारब्ध भोग का परिणाम यह शरीर है तो इस तरह मत काटो- **ज्ञानी काटे ज्ञान ते मूरख काटे रोय।**

फिर स्वामी रामतीर्थ की तरह काटो-

हर हाल में खुश हैं।
पूरे है वही मर्द जो हर हाल में खुश है।
गर माल दिया यार ने तो माल में खुश हैं।
गर खाल दी यार ने तो खाल में खुश हैं।
पूरे है वहीं मर्द जो हर हाल में खुश है।

दूध और खून

गुरू नानक लोगों को उपदेश देते हुए एक गांव में पहुंचे। वहां वे एक गरीब बढ़ई के घर पर ठहरे। उसका नाम 'लालो' था। उसी गांव में एक धनाढ्य व्यक्ति रहता था जिसका नाम 'मलिक भागो' था। उसने एक दिन गांव के सारे लोगों को भोजन के लिये निमंत्रित किया। सारे लोग खा चुकने पर उसने नौकरों से पूछा कि कहीं कोई आदमी गांव में उसके यहां बिना खाये तो नहीं है? इस पर नौकरों ने बताया कि लालो के घर में एक साधु आया है जो भोजन से वंचित रहा है। भागो ने गुरू नानक को बुलाया तथा उनसे पूछा-'आप मेरे यहां भोजन करने क्यों नहीं आये?' गुरू नानक ने कहा- 'अब आया हूं।' नौकरों ने उनके सामने तरह-तरह के पकवान लाकर रखे। तब गुरू नानक ने लालो से भी घर से भोजन लाने को कहा।

वह घर जाकर रोटियां ले आया। गुरू नानक ने भागो की रोटी लेकर उसे दबाया, तब उसमें से खून निकलने लगा। फिर लालो ने रोटी को दबाया, तो उसमें से दूध निकलने लगा। यह देख वहां उपस्थित लोग चकित हो गये। तब नानकजी ने बताया- 'भागो ने गरीबों को लूटा है, इसलिये इसकी रोटी में गरीबों का खून है, जबकि लालो की कमाई ईमानदारी की है, अतः उसकी रोटी से दूध निकला।' यह सुन भागो नानक के चरणों में गिर पड़ा और उनसे क्षमा मांगकर कहने लगा कि आगे से वह मेहनत की कमाई खाएगा तथा दूसरों को कष्ट न देगा।

शासन क्या है? उसकी प्रभावना कैसे होगी?

✻ पं. गुणसुंदर विजयजी गणी

सकल छोड़ने योग्य-सकल प्राप्त करने योग्य तथा सकल सिर्फ जानने योग्य पदार्थों-भावों को बतानेवाले सर्वज्ञ भगवंतों के वचन वही प्रवचन और वहीं श्री जिनशासन। धर्मी गृहस्थ को इस प्रवचन की अपनी शक्ति के अनुसार आराधना करनी होती है साथ ही उसे अपने सामर्थ्य के अनुसार उसकी उन्नति करनी चाहिये। प्रभावना करना भी जरूरी है, क्योंकि यह शासन प्रभावना तीर्थंकर नामकर्म के बंध कड्ड सफल कारण है। यह शासन प्रभावना किस तरह होगी?

✻ अच्छी तरह से न्याय-नीतिपूर्वक व्यवहार करना चाहिये।

✻ जिन जिनका लोगा का जितना-जितना विनय करना योग्य है उन-उन लोगों का उतना-उतना विनय करना चाहिये।

.✻ दीन अनाथ आदि का उद्धार करना चाहिये। अन्यत्र भी बताया गया है कि जिस व्यक्ति ने दीन-गरीब-दुःखियों का उद्धार किया नहीं उसका जन्म व्यर्थ गया है।

✻ जिनागम के अनुसार सम्यक चारित्रवाला साधु महाराज का विनय, बहुमान-सत्कार करना चाहिये।

✻ लिये हुए व्रत नियम आदि का शुद्धिपूर्वक पालन करना चाहिये।

✻ जिनेश्वर देव के मंदिरों का निर्माण करना चाहिये।

✻ विधिपूर्वक श्री तीर्थयात्रा-अष्टान्हिका यात्रा-स्नात्र पूजा-रथयात्रा-विविध प्रकार के उत्सव आदि करना चाहिये। इसमें ऐसा प्रतिदिन, उचितदान आदि देना जिसकी दर्शनवाले प्रशंसा करें। **(धर्मबिंदुका-67-200)**

✻ आचार्य महीधर तीर्थयात्रा पर थे। साथ शिष्यमंडली थी। रात्रि में वहीं जंगल में रूक गये। नींद में ही उन्हें करूण क्रंदन समीप से आता सुनाई पड्ड। देखा, आवाज एक अंधे कूप से आ रही है। वे पास पहुंचे, देखा, वहां पांच व्यक्ति औंधेमुंह पड़े बिलख रहे हैं। आचार्य ने उनसे पूछा कि आप कौन है और इस गर्त में क्यों गिरे हैं? क्यों इतना दुःख पा रहे हैं? उनमें से एक ने कहा- हम पाँचों प्रेत हैं। कर्मफल भोग रहे हैं। विधि के विधान को हम नहीं तोड़ सकते। तब आचार्य ने उनकी दुर्गति का कारण पूछा। पहले ने कहा- वह पूर्वजन्म में ब्राह्मण था। दक्षिणा बटोरकर विलासिता में खर्च करता था। कभी उपासना नहीं की। दूसरे ने कहा- वह क्षत्रिय था, पर दुखियों को पीड्ड देता, मांस-मद्य-वेश्यागमन आदि सभी कुकृत्यों में निरत रहा। तीसरा बोला- मैं वैश्य था, हमेशा नफे की सोचता, बिक्री में हेरा-फेरी करता, कभी भी दान नहीं दिया। चौथे ने कहा- मैं शूद्र था, अहंकारी-आलसी-दुर्व्यसनी। कभी जिम्मेदारी का पालन नहीं किया। पांचवां प्रेत बड्ड विचित्र था। वह किसी को भी अपना मुंह नहीं दिखाता था, निरंतर रोता जा रहा था। उससे बहुत पूछने पर बोला- मैं पूर्व जन्म में एक साहित्यकार था, पर अपनी कलम से मैंने अश्लीलता, कामुकता और फूहड़पन बढ्ढानेवाला साहित्य लिखा। मैंने वासना भड्काई और सारे समाज को भ्रष्ट किया। इसीलिए मुझे ब्रह्मराक्षस बनकर इस स्थिति में पहुंचाना पड्ड। पांचों प्रेतों ने आचार्य से प्रार्थना की कि उनकी दुर्गति का कारण सभी को बता दें, ताकि वे लोग ऐसी भूल न करें। शिष्यों के साथ सारा विवरण सुन रहे महीधर ने जन-जन तक इनका संदेश पहुंचाने का निश्चय किया और आज भी वे निरंतर कर रहे हैं, पर आदमी चेतता कहां है!

किसी चिड़िया ने चोंच में दबाकर पीपल का बीज नीम के तने में डाल दिया। थोड़ी मिट्टी, थोड़ी नमी पाकर बीज उग आया और धीरे-धीरे नीम का आश्रय लेकर बढ्ने लगा। परावलंबी होने के कारण उसकी जड़ें के विकास के लिए न स्थान मिल सका न डालें फैल सकीं। फलतः वह थोड्ड ही बढ्कर रह गया। एक दिन उसे गुस्सा आया। उसने नीम को डाँट लगा दी-दुष्ट! तू स्वयं तो आकाश छू रहा है और मुझे जरा भी बढ्ने नहीं देता। देख! मुझे भी बढ्ने दे, नहीं तो तेरा सत्यानाश कर दूंगा। नीम हंसा, बोला- मित्र! औरों की दया पर इतना ही विकास किया जा सकता है। इसमें ज्यादा करना है तो अपनी नींव आप बनाओ, अपने पैरों पर खड़े होओ। पीपल निरंतर नीम को कोसता रहा। एक दिन आंधी आई। नीम का वृक्ष तो थोड्ड ही हिला था, पर पीपल का पौधा धराशायी होकर मिट्टी चाटने लगा। एक राहगीर उधर से निकल रहा था दृश्य देखकर बोला- जो औरों के आश्रय में बढ्ने की आशा रखते हैं, उनकी गति अंत में यही होती है।

वर्ग पहेली क्रमांक-267

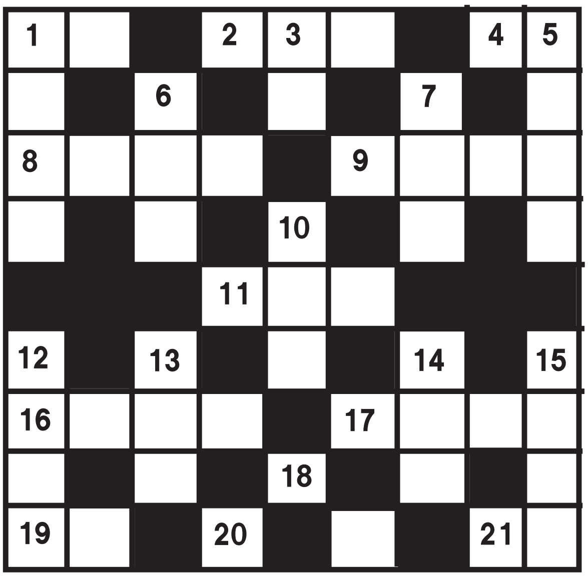

बांये से दांये :—

1- चित्त, हृदय, अंतःकरण (2)
2- अखंडित,पूर्ण, भगवान को चढ़ाने वाले चावल (3)
4- अष्ट द्रव्यों में, एक दीपक (2)
8- अर्हत् जिन, जिनेन्द्रिय (4)
9- प्रदक्षिणा, परिभ्रमण, चक्कर (4)
11-अभिनंदन, भगवान का चिन्ह (3)
16-परमात्मा, भगवान, विष्णु (4)
17-जैनियों के बारहवें तीर्थंकर (4)
19-प्रसिद्ध, ख्याति, कीर्ति नाम (4)
20-शिखर जलपात्र, घड़ा (3)
21-डर, त्रास, आंतक (2)

ऊपर से नीचे :—

1- जैनियों के चौबीसवें तीर्थंकर (4)
3- पल, घड़ी, लम्हा (2)
5- भगवान, ईश्वर, परमपिता (4)
6- हताशा, नाउम्मीदी, उत्साहहीनता (3)
7- महिमा, गौरव, महत्व (3)
10-अष्ट द्रव्यों में से एक (3)
12-देवालय, देवगृह, मंदिर (4)
13-आंख, चक्षु, नेत्र (3)
14-राक्षस, दैत्य, दानव (3)
15-पूजा-योग्य, आदरणीय, मानवीय (4)
18-अष्ट द्रव्यों में एक, पानी (2)

वर्ग पहेली क्रमांक-266 का परिणाम

1- कनक 2- कल्पक 3- कनक 4- कनकखल 5- कर्णिका 6- कुलिका 7- कृत्रिकापण 8- कालशौरीक 9- कालिका 10-कोणिका 11- कोशा श्राविका ।

✻ मनुष्य को अपने कर्म का फल भोगना ही पड़ता है। एकांत में किया हुआ भी नियंता की दृष्टि से छिपा नहीं रहता। वह कोई भी हो। अष्ट वसु एक बार सपत्नीक पृथ्वी लोक पर आए। तीर्थों का दर्शन कर वे वसिष्ठ ऋषि के आश्रम में पहुंचे। सपत्नीक सभी वसु आश्रम की यज्ञशाला, ध्यानकक्ष, स्नातकों के निवास आदि का अवलोकन करते रहे। इसी बीच वसु प्रभास व उनकी पत्नी उद्यान की ओर आए। प्रभास की पत्नी को नंदिनी गौ भा गई। वह अपने पति से बोली-स्वामी! नंदिनी ने मुझे विमोहित कर दिया है। इसे अपने साथ ले चलिए। बोले- देवि! औरों की वस्तु देखकर लोभ करना, अनाधिकार पाने की चेष्टा करना पाप है। उससे मनुष्य क्या, देवता भी नहीं बच सकते। यह सृष्टि कर्मानुसार ही रची गई है। पर उनकी पत्नी नहीं मानी। उसने कहा- हम देवता है, अतः पहले ही अमर है। नंदिनी का दूध तो अमरत्व के लिए ही है। उसकी आवश्यकता यहां क्या? पुनः समझाने पर भी वसु पत्नी नहीं मानी। प्रभास को पत्नी हठ के समक्ष नंदिनी चुरानी ही पड़ी। थोड़ी देर में वसिष्ठ आ गए। नंदिनी को न पाकर अपने दिव्य चक्षुओं से उन्हें वसुओं की करतूत पता चली। उन्होंने शाप दे दिया। सभी वसुदेव शरीर त्यागकर पृथ्वी पर जन्म लें। देवगुरू की प्रार्थना पर उन्होंने सात निरपराध वसुओं को तो तुरन्त मुक्त होने का वरदान दिया पर अंतिम वसु को चिरकाल तक कष्ट सहन करना ही पड़ा। महाराज शांतनु और गंगा के यहां आठों वसु जन्मे। सात की तत्काल मृत्यु हो गई, पर आठवें प्रभास को भीष्म पितामह के रूप में वर्षों जीवित रहना पड़ा- मानसिक व शारीरिक यातनाएं सहते हुए। कर्म गलती-पाप कर्म किसी का भी क्षमा नहीं करते।

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशःतीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रूपये 31/-, 21/-, 11/-एम.ओ.भेजें जावेंगे। सही उत्तर वाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-267

✻ पंन्यास प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.

हमें पहचानो तो जाने !

1- मैं दिखने में सुंदर हूं, खाने में अति मधुर हूं पर मुझे खानेवाला चिरनिद्रा में सो जाता है।

2- मेरे स्पर्श से अनेक जीव मोक्ष में गये है।

3- मैंने अपने पुत्र को मुर्गा बनाया था।

4- मैं वैश्या के हाथों बिकी, कारगृह में डाली गयी फिर भी मैं भगवान महावीर के शासन की साधन बनी।

5- मेरे पास अतुल वैभव था फिर भी मुझे नरक में जाना पड़ा।

6- मैंने स्वयं की लब्धि से प्राप्त आहार ग्रहण करने का अभिगृह किया था।

7- मैंने श्रीकृष्ण को कहा था कि मदिरापान एवं द्वेपाचन ऋषि के कारण द्वारिका का नशा होगा।

8- मैं एक हजार वर्ष तक संयम पालकर भी सातवीं नरक में गया।

9- हमारा अभिग्रह नहीं फला और संथारा करके मोक्ष में गये।

10-मैं अपने पुत्र के हत्यारे विजय चोर को अपना भोजन कराता था।

एक बार पांच असमर्थ और अपंग इकट्ठे हुए। अंधा बोला, मेरी आँखें होती तो जो कुछ अनुपयुक्त दिखाई देता, उसे ठीक करता। लंगड़ा बोला- मैं तो दौड़-दौड़कर लोगों की भलाई करता। निर्बल बोला, मेरे पास बल होता तो दीन-दुखियों की सेवा करता। निर्धन ने कहा- मैं धनी होता तो किसी को भूखा न रहने देता। मूर्ख बोला- मैं पंडित होता तो लोगों को सच्चा ज्ञान देता। वरूणदेव ने उनकी बातें सुनी तो दया आ गई। उनकी इच्छाएं उन्होंने पूरी कर दी। पर अब तो अंधा सौंदर्यदर्शन में ही लीन रहने लगा। लंगड़ा सैर-सपाटे के लिये निकल पड़ा। निर्धन धन के नशे में डूब गया। निर्बल दूसरों को सताने लगा और मूर्ख अपनी ही शेखी बघारने लगा। वरूणदेव ने यह देखा तो उन्हें बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने अपनी शक्तियाँ छीन ली। मनुष्य के लिये उचित है कि वह अपनी गरिमा के अनुसार सदैव उत्थान की ओर बढ़े। अन्यों को भी साथ ले। इस तथ्य को मनुष्य समझ नहीं पाता और अपनी ही रची नारकीय सृष्टि से दूर भागने का विफल प्रयास करता है।

वर्गपहेली क्रमांक-266 के विजेता

विजेता :-

1-श्रीमती सुधा धारीवाल, देवास (म.प्र.) - प्रथम
2-प्रियांशी जैन, नरवर झालाकि (म.प्र.) - द्वितीय
3-भारती जैन, देवास (म.प्र.) - तृतीय

इनके भी उत्तर सही थे-

जवाहरलाल जैन, उज्जैन, रोहितकुमार सकलेचा, नलखेड़ा, प्रिती हिंगड़, नरवर, श्रीमती प्रभा जैन, देवास, प्रीति जैन, रतलाम शान्ता पोरवाल, उज्जैन, कलाबेन जैन, रतलाम, चंदनबाला जैन, उज्जैन, श्रीमती विद्या संघवी, बदनावर, श्रीमती शांता बापना, इन्दौर, चेतनाबेन, सूरत।

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-266 के परिणाम

सही उत्तर-

1-वंकचूल, 2- देदाशा, 3- देवर्धिगण क्षमाश्रमण 4- वज्रस्वामी, 5-सामायिक, 6-रावण, 7- विमलशाह, 8- रेवती, 9- मेघकुमारमुनि, 10-मनोरमा।

विजेता :-

एक मात्र सही उत्तर देनेवाले :-
रोहितकुमार सकलेचा, नलखेड़ा (म.प्र.)

✻ अच्छे लोगों का हमारी जिंदगी में आना हमारी किस्मत होती है। और उन्हें संभाल कर रखना हमारा हुनर...!

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डाले।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-3-2017 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी।

- सम्पादक

जीवन और धर्म....

✻ केवलचन्द्र जैन

धर्म की व्याख्या नाना विध की जाती है, धर्म वह है जो आत्म शांति का हेतु है, जिस प्रकार थकावट के पश्चात विश्राम की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार जीवन में संसार की विविध विडम्बनाओं से गुजरने के पश्चात विश्रांति की आवश्यकता महसूस की जाती है, जो सभी जीव चाहते है, धर्म का मूल शान्ति में निहित है। शान्ति आत्मा का स्वभाव है, आकुलता-व्याकुलता विभावदशा (मोहदशा) की देन है। धर्म आत्मा से अलग नहीं, बल्कि आत्मा के अंतरंग सुख को प्रकट करनेवाला व आत्मा की अनुभूति करानेवाला परम सत्य स्वरूप आत्मधर्म ही आध्यात्मिक धर्म है।

धर्म की परिभाषा दो प्रकार से की जाती है-लौकिक धर्म जिसे व्यावहारिक धर्म भी कहते है, दूसरा आध्यात्मिक धर्म। लौकिक धर्म में विवेक व सद्‌बुद्धि युक्त व्यवहार, आचरण शुद्धि, नीति-न्याय एवं मौलिक कर्त्तव्य पालन की प्रेरणा दी जाती है, जो नेक व स्वच्छ जीवन के लिये आवश्यक है। दूसरा आध्यात्मिक धर्म, जो आत्म कल्याण व मोक्ष मार्ग का हेतु है। जो स्व एवं पर का भेद ज्ञान कराता है तथा अनादिकाल से संसार परिभ्रमण करते हुए जीवों को, जन्म-मरण व चारों गति के अनन्त दुःखों का परिचय कराता है व साथ ही भव दुःख निवारण का मार्ग प्रशस्त करता है, वही आध्यात्मिक धर्म है।

व्यावहारिक धर्म व आध्यात्मिक धर्म एक दूसरे के पूरक है, एक दूसरे से जुड़े हुए है, जैसे व्यवहारिक धर्म मकान का ग्राउण्ड फ्लोर व आध्यात्मिक धर्म ऊपरी मंजिल, धर्म की प्रथम भूमिका आचरण शुद्धि से प्रारंभ होती है, जो मंजिल की ओर आगे बढ़ने वाली पहली सीढ़ी है व आध्यात्मिक धर्म मंजिल तक पहुंचाने वाली अंतिम सीढ़ी है। जीवन जीने के लिये व्यावहारिक धर्म पालन की मर्यादाएं महापुरूषों द्वारा अनुभव के आधार पर निश्चित की गई है, जिससे संयमित जीवन का संतुलन बना रहे, जहां न कभी सूखा पड़े न कभी बाढ़ आये, सुख में न फूले न दुःख में घबराये, बल्कि समभाव से जीवन को हर्ष व शोक से बचाकर रखें, वहीं यथार्थ में अपना धर्म है। धर्म वह है जो अपने को धारण करें, गिरते हुए को बचावें व कभी साथ नहीं छोड़े जब तक कि अंतिम लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाये। जीवन का अंतिम लक्ष्य शून्य में जाना है, जहां न आकुलता है न व्याकुलता मात्र आत्मशांति है, जैसे समुद्र के मध्य बिन्दु में लहरे नहीं होती।

सच्चा धर्म ही तत्व प्रधान आध्यात्मिक मार्ग है जहां तर्क की अपेक्षा श्रद्धापूर्वक चिंतन करने की प्रेरणा दी जाती है। श्रद्धा साधना की प्रथम सीढ़ी है, सर्वज्ञ पर श्रद्धा होगी तो ही सर्वज्ञ के वचन समझ सकेंगे। जैसे व्यावहारिक क्षेत्र में अक्षर ज्ञान कराने वाले अध्यापक पर श्रद्धा करने से ही अक्षर ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है, वही अक्षरज्ञान अभ्यास में सहायक होता है तथा अभ्यास के माध्यम से अक्षर ज्ञान तक पहुंचाने का पुल बनाया जा सकता है। अतः महापुरूषों द्वारा प्ररूपित जिनेश्वर परमात्मा के धर्म को श्रद्धा पूर्वक स्वीकार कर, जीवन को धर्ममय बनाना हमारे जीवन का परम लक्ष्य होना चाहिये। व्यक्ति के अस्तित्व व धार्मिक होने का सीधा अर्थ जीवन को धर्ममय बनाना अथवा धर्मयुक्त जीवन जीना है।

कलयुगी बेटा

✻ एस.सी. कटारिया

कुलदीप अपने दफ्तर से घर आकर फ्रेश होकर सोफे पर बैठा ही था कि उसकी माँ ने पास आकर रूंधे हुए गले से कहा कि बेटा अब रहा न जाता और सहा भी नहीं जाता। क्यों क्या हुआ माँ। कुलदीप ने माँ की बात को गंभीरता से न लेते हुए पूछा? क्या बताऊ बेटा एक दिन की बात हो तो कहूं। माँ ने कहा। आज ही सुबह का खाना रमा ने दोपहर में तीन बजे मांगने पर दिया। नाश्ता भी उसने तथा बच्चों ने कर लिया, हमें पूछा तक नहीं। मैं तो ठीक लेकिन तेरे पापा तो बीमार है, डायबिटीज के लोगों को ज्यादा देर तक भूखा नहीं रहना होता है, लेकिन इसका भी उसे कुछ भी मलाल नहीं है। यह सब नहीं देखा जाता। माँ-बेटे का वार्तालाप सुनकर बहु रमा ने आकर जमती बहस में मोर्चा ले लिया। कुलदीप ने अपनी पत्नी की तरफदारी करते हुए कहा कि माँ आपका तो काम हमेशा विवाद ही करना होता है। हमारे साथ रहना हो तो रहो नहीं तो निकल जाओ। कहां निकल जाए बेटा तू ही तो हमारा एक आसरा और सहारा है। तुझे मैंने 9 माह पेट में रखा और तू अब हमें निकाल रहा है। यह मत कह कुलदीप ने अपनी माँ को पलटवार करते हुए कहा, ऐसा करके तुने मुझ पर कोई एहसान नहीं किया है, यदि तुने मुझे 9 माह अपने पेट में रखा है तो मैंने भी शादी होने के बाद से अभी तक रख लिया। आक्रोशित कुलदीप यह कहकर अपनी माँ को बिन देखे घर से बाहर चला गया। रमा अपनी फेके पांसे की गोटी को उलझा कर मन ही मन अन्दर से मुस्कुरा रही थी।

✻ अनु दीपक जैन, जयपुर, मो.नं. 9782499999

आगमोध्दारक भविष्य फल मार्च-2017

मेष :- आपके लिये यह माह सामान्यतः शुभ रहेगा, व्यापार से अच्छे लाभ की संभावना रहेगी, अधिकारी वर्ग का बेहतर सहयोग मिलेगा, पारिवारिक वातावरण रहेगा।

महत्वपूर्ण तिथि- 1,8,9,10,15,20,27 ।

वृषभ :- आपके लिये यह माह मिश्रित फलदायक रहेगा, कार्य क्षेत्र में बेहतर परिणाम हेतु परिश्रम करना होगा, कोई रूका हुआ धन प्राप्त हो सकता है।

महत्वपूर्ण तिथि-2,7,14,18,25,31 ।

मिथुनः-आपके लिये यह माह मिश्रित फलदायक रहेगा, व्यापारिक लाभ में वृद्धि होगी परन्तु विरोधी हानि देने का प्रयास कर सकते है, परिवार में किसी प्रकार का उत्सव संभावित है।

महत्वपूर्ण तिथि- 3,9,16,22,28 ।

कर्कः- आपके लिये यह माह सामान्यतः शुभ रहेगा, संचित धन में वृद्धि होगी और कार्य विस्तार की योजना बनेगी, इस समय दूर स्थानों से बेहतर लाभ मिल सकता है।

महत्वपूर्ण तिथि-1,5,8,10,15,27 ।

सिंहः-आपके लिये यह माह सामान्य रहेगा, कार्य में लाभ प्राप्ति हेतु परिश्रम करना होगा, क्रोध की अधिकता बनते कार्य बिगाड़ सकती है, व्यय की अधिकता रहेगी।

महत्वपूर्ण तिथि- 4,7,8,12,17,26।

कन्याः-आपके लिये यह माह शुभ रहेगा, कार्य क्षेत्र में वर्चस्व वृद्धि होंगे, सामाजिक धार्मिक कार्यों में रूचि रहेगी, यात्रादि का योग बन सकता है।

महवपूर्ण तिथि- 4,5,12,18,24,31 ।

तुलाः-आपके लिये यह माह मिश्रित फलदायक रहेगा, व्यापारिक लाभ में वृद्धि होगी परन्तु विलासिता संबंधी व्ययों की भी अधिकता रहेगी। महत्वपूर्ण निर्णय संभावित है।

महत्वपूर्ण तिथि- 3,9,15,21,27,30 ।

वृश्चिकः- आपके लिये यह माह मिश्रित फलदायक रहेगा, व्यापारिक गतिविधियों में लाभ तो रहेगा परन्तु बाधा आदि आने की संभावना रह सकती है, इस समय स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें।

महत्वपूर्ण तिथि- 1,6,14,20,28,30 ।

धनुः-आपके लिये यह माह सामान्य रहेगा, व्यापार से सामान्य लाभ रहेगा परन्तु कोई आकस्मिक धन प्राप्त हो सकता है, क्रोध पर नियंत्रण रखें अन्यथा कोई बनता कार्य बिगड़ सकता है।

महत्वपूर्ण तिथि-4,7,13,21,27 ।

मकरः-आपके लिये माह मिश्रित फलदायक रहेगा, निवेष की बेहतर योजनाएं बन सकती है, दूर स्थानों से लाभ की प्राप्ति संभावित है, समय का सदुपयोग करें।

महत्वपूर्ण तिथि- 3,9,12,17,24,29 ।

कुम्भ :- आपके लिये माह शुभ रहेगा, व्यापार में अच्छा खासा लाभ रहेगा, संचित धन में वृद्धि होगी एवं निवेष की योजना बनेगी, इस समय महत्वपूर्ण निर्णय संभावित है।

महत्वपूर्ण तिथि- 5,7,13,18,22,30।

मीनः-आपके लिये यह माह शुभ रहेगा, कार्य क्षेत्र में विस्तार होगा, सहयोगियों का बेहतर सहयोग मनोबल वृद्धि करेगी, परिवार में किसी प्रकार का उत्सव आदि की संभावना रहेगी।

महत्वपूर्ण तिथि- 4,8,15,19,22,27,31 ।

श्री जीरावला पार्श्वनाथ दादा की ऐतिहासिक प्राण प्रतिष्ठा सम्पन्न

✻ समारोह का इतिहास स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा।

अविनाशी अविकार परमरस धाम है,
समाधान सरवंग सहज अभिराम है,
सुद्ध बुद्ध अविरूद्ध अनादि अनंत है,
जगत शिरोमणि सिद्ध जयवंत है।

श्री जीरावला पार्श्वनाथ विश्व के एक मात्र जीवित पार्श्वनाथ भगवान है, जिनकी प्राण प्रतिष्ठा प्रभु पार्श्वनाथ के प्रथम गणधर श्री शुभस्वामी के वरद हस्ते से 2800 वर्ष पूर्व हुई थी जिनके अधिष्ठायक देव श्री धरणेन्द्र देव और श्री पद्‌मावतीजी माता कलिकाल में हाजराहजूर है। समग्र विश्व में जहां कहीं भी किसी भी भगवान की प्रतिष्ठा हो, विघ्न विनाशक श्री जीराउला पार्श्वनाथ दादा का मंत्र रक्षा मंत्र अवश्य लिखा जाता है, ऐसे सर्व मंत्र-तंत्र-यंत्रमय प्रकट प्रभावी पुरूषादनीय श्री जीरावला पार्श्व नाथ दादा कलिकाल में जीवंत कल्पवृक्ष समान है जिसकी महिमा जग जयवंत है।

पार्श्व पारस जैसा, नहीं देव कोई ऐसा। चिंतामणी कहाया, तोरी अपार माय जो संसार में कर्म भ्रमरूप अंधकार को दूर करने के लिये सूर्य के समान है, जिनके चरणों में साँप का चिन्ह है, जो मोक्ष का मार्ग दिखाने वाले है जिनके दर्शन से भव्य जीवों के नेत्रों से आनंद के आंसू बह निकलते है और अनेक भव्य रूपी सरोवर प्रसन्न हो जाते है जिन्होंने कामदेव को युद्ध में हरा दिया है, जिनका मुकुट सात फण का है, जो कमठ के जीवों को असुर पर्याय में परास्त करनेवाले हैं। कमठ की वायु के समक्ष मेरू के समान है, कमठ के जीव की तेज आंधी के उपसर्ग से जो नहीं डिंगनेवाले होकर निर्विकार सिद्ध पद में रमण करते हैं। अत्यंत बलवान कामदेव के वन को जलाने के लिये रूद्र की अग्नि के समान है, जो जीवों को निडर बनाने वाले हैं।

जो नित्य और निर्विकार है, उत्कृष्ट सुख के समान है, साहजिक शांति से सर्वांग सुन्दर होकर जिनका प्रत्येक आत्मप्रदेश विलक्षण शांति से भरपूर है। निर्दोष है, पूर्ण ज्ञानी है, विरोध रहित है, अनादि अनंत है। ऐसे लोक के शिखामणी सिद्ध भगवान पार्श्वनाथ दादा जयवंत होवें।

श्री तीर्थंकर देव गणधरादि गुरू भगवंतों की परम कृपा से एवं जीराउला दादा के अधिष्ठायक देव देवियों की सहाय से श्री जीरावला महातीर्थ जिनबिम्ब प्रवेशोत्सव, साधनासंकुल लोकार्पण उत्सव, जाजम चढ़वे एवं अंजनशलाओं का प्राण प्रतिष्ठा महामहोत्सव निर्विघ्न सानन्द सम्पन्न हुआ। नूतन जिनालय श्री जीरावला पार्श्वनाथादि सर्व सिद्धि, ऋद्धि, समृद्धि के साथ 2 फरवरी को विराजमान हुए और दादा की यश कीर्ति प्रतिष्ठा विश्व के कौने-कौने में गूंज भव्यातिभव्य ऐतिहासिक समारोह के साथ सम्पन्न प्रतिष्ठा महोत्सव स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा।

- शांतिलाल सागरावत, मंदसौर

मुनि विरक्तसागरजी म.सा.की निश्रा में भक्तिमय रजत महोत्सव मनाया गया

मुंबई- पूज्य आचार्य श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी म.सा.के शिष्यरत्न प्रखर प्रवचनकार मुनि श्री विरक्तसागरजी म.सा. ठाणा-2 एवं साध्वी धर्मरत्ना श्रीजी ठाणा-3 की पावन निश्रा में श्री आदेश्वर जैन मंदिर पायधुनी मुंबई में श्री नाकोड़ा भैरव मंडल पायधुनी द्वारा नाकोड़ा भैरव मंडल की स्थापना के 25 वर्ष पूर्ण होने पर भव्यातिभव्य रजत महोत्सव मनाया गया। तद्‌नुसार 25 फरवरी को पूज्य गुरू भगवंतों का भव्य प्रवेश हुआ व 26 फरवरी को श्री नाकोड़ा भैरवदेव को रत्नजड़ित आंगी अर्पण की गई एवं सरस्वती माता अंबिकादेवी एवं लक्ष्मीजी को रजत तोरण अर्पण किया गया तथा भव्य वरघोड़ा, महाहवन, स्तवन बुक विमोचन, सीडी विमोचन आदि कार्यक्रम किये गये तत्पश्चात सकल संघ का स्वामि वात्सल्य किया गया।

चैन्नई में प्रतिष्ठा महोत्सव मना

चैन्नई-यहां के नुंगमबाड़कम क्षेत्र के आदि अपार्टमेंट में श्री वल्लभसूरी समुदायवर्ती आचार्यदेव श्री नित्यानंद विजय सूरीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजित किया गया। परम तारक परमात्मा श्री श्रेयांसनाथ प्रभु, श्री नाकोड़ा भैरवजी, श्री पद्‌मावतीदेवी आदि बिम्ब की प्रतिष्ठा महोत्सव 10 से 18 फरवरी तक मनाया गया। प्रतिष्ठा 17 फरवरी को सम्पन्न हुई। अंतर्राष्ट्रीय जैन विधि-कारक भाई श्री मनोजकुमार बाबूमलजी हरण के मार्गदर्शन प्रेरणा में सम्पन्न कार्यक्रम 18 फरवरी को सत्तरभेदी पूजन के साथ सम्पूर्ण हुआ।

शासन समाचार

जैनं जयति शासनम्

शंखोश्वर महातीर्थ में दीक्षा-जीरावला महातीर्थ में प्रतिष्ठा और सिरोही में दीक्षा के बाद युवा जैनाचार्य का मालवा में प्रवेश हुआ

- ✻ शंखेश्वर तीर्थ में पंकजभाई-पद्मरत्नसागरजी एवं बालभाई संयम बने रम्यरत्नसागरजी
- ✻ जीरावला से सागर समुदाय का प्रतिनिधित्व किया।
- ✻ भाई मुकेशजी सिरोही में लब्धिरत्नसागरजी हुए।
- ✻ 19 फरवरी को नीमच से मालवा में प्रवेश हुआ।
- ✻ 27 फरवरी को बड़ोद में महामांगलिक हुई।
- ✻ कु.टीना 1 मार्च को बड़ोद में दीक्षित होगी।
- ✻ आगामी चार्तुमास मंदसौर होने की संभावना।
- ✻ पूज्यपाद गुरूदेव मालव भूषणश्री का जन्मदिन 15 मार्च को उज्जैन में मनेगा।

-: एक रिपोर्ट:-

श्री शंखेश्वर महातीर्थ में यशस्वी चार्तुमास उपधान तप के तुरन्त बाद जग जयवंत जीरावला पार्श्वनाथ महातीर्थ में जाजम में सादर निश्रा प्रदान कर पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागरसूरीजी म.सा. अपने गुरूभाई शिष्य-प्रशिष्य के साथ पुनः श्री शंखेश्वर महातीर्थ पधारे, यहां मुंबई के श्री पंकजभाई (मुनिश्री पद्म रत्नसागरजी) एवं बालभाई संयम (बाल मुनि रम्यरत्नसागरजी म.सा.) का भव्य दीक्षा महोत्सव 18 फरवरी को आयोजित हुआ। यह दीक्षा महोत्सव पूर्ण हेतु ही पुनः विहार श्री जग जयवंत जीरावला महातीर्थ के लिये हुआ जहां इस शताब्दी का सर्वाधिक धर्मिष्ठों की उपस्थितिवाला प्रतिष्ठा महोत्सव 2 फरवरी को सम्पन्न हुआ जहां विदेश और देश के लगभग हर प्रांत से धर्मिष्ठों की उपस्थिति रही। यहां से आपश्री पुनः विहार कर सिरोही अर्ध शत्रुंजय तीर्थ पधारे। यहां 9 फरवरी को भाई मुकेश लुंकड़ने परमात्मा श्री महावीर प्रभु का श्रमणत्व स्वीकार कर मुनिश्री लब्धिरत्नसागरजी नाम पाया। इस त्रि दिवसीय महोत्सव में बड़ी संख्या में धर्मिष्ठ उपस्थिति रही। साध्वीवर्या श्री शशिप्रभा श्रीजी, पूर्णयशाश्रीजी, कल्प ज्योतिश्रीजी स्वर्णज्योतिश्रीजी, मुक्ति निलया श्रीजी की भी मंगल निश्रा रही।

आपश्री ने मालवा से दो वर्ष दूर रहने के बाद यहां से मालवा के लिये विहार किया। 19 फरवरी को नीमच जैन श्रीसंघ में आपका मंगल प्रवेश हुआ। यहां से आपश्री बड़ोद पधारे। यहां से 27 फरवरी को विद्यालय के लोकार्पण कार्यक्रम में निश्रा प्रदान की एवं महामांगलिक हुई। 1 मार्च को बहन टीना की प्रवज्या का महोत्सव श्री विमलनाथ जिनालय के प्रांगण में हुआ। आपश्री यहां से शासन प्रभावना करते हुए उज्जैन पधारेंगे। 15 मार्च को पूज्यपाद गुरूदेव मालव भूषण आचार्यश्री नवरत्नसागर सूरीजी का जन्म दिन मनाया जावेगा फिर इन्दौर की ओर विहार की संभावना है। **आगामी चार्तुमास मन्दसौर में होने की संभावना है।**

✻ अरिहंत पद की आराधना जो लोग अहं के पोषण हेतु करते है, वे ज्ञानियों की दृष्टि में आत्मा का अवमूल्यन करते हैं।

ढ़कगिरी तीर्थ में ऋषभकुट तथा शांतिस्नात्र जिनालय की प्रतिष्ठा सागर गच्छाधिपति ने करवाई

✻ सोरठदेश का शाश्वत गिरीराज है, ढ़कगिरी।
✻ साध्वीश्री चारूव्रताश्रीजी का प्रयास सफल रहा।

पाटणवाव- त्रैलोक्य भूषण स्वरूप सोरठ देश के शाश्वत गिरीराज के समान ढ़कगिरीराज पर निर्मित ऋषभकुट तथा शांतिस्नात्रयुक्त भव्य जिनालय की अंजन-प्रतिष्ठा का महोत्सव उत्साह से सम्पन्न हुआ। 24 फरवरी से 2 मार्च तक सम्पन्न हुए अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव में 75 वर्ष संयम जीवन के आराधक सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति जिनागम सेवी आचार्य देवेश श्री दौलत सागर सूरीजी महाराजा, आचार्यश्री नंदी वर्धनसागरसूरीजी म.सा.,आचार्यश्री दौलतसागरसूरीजी महाराजा के साथ अनेक साधु-साध्वीवृंद तथा ढ़कगिरी तीर्थ की संस्थापना का सुन्दर स्वप्न संजोनेवाली साध्वीवर्या चारूवृत्ता श्रीजी शिष्य-प्रशिष्य परिवार के साथ पावन निश्रा प्रदाता रही। महोत्सव में अनेक महापूजन पढ़ाई गई। परमात्मा के पंच कल्याणक का आयोजन हुआ। प्रतिष्ठा 1 मार्च को शुभ लग्नांशवेला में सम्पन्न हुई। श्री वृहत शांतिस्नात्र महापूजन पढ़ाई गई। 2 मार्च को द्वारोद्‌घाटन हुआ बाद में सत्तरभेदी पूजन हुई।

राई प्रतिक्रमण मंडल की स्थापना का कीर्तिमान

मुंबई- आ.श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी के शिष्यरत्न 50 राई प्रतिक्रमण मंडल एवं शत्रुंजय महातीर्थ की भावयात्रा मात्र 5 मिनिट में के प्रेरक प्रखर प्रवचनकार मुनि विरक्तसागरजी,मंगलसागरजी (ठाणा-2) द्वारा श्री श्रेयस्कर श्री जैन संघ अंधेरी इर्जा में 50 वें आदिजिन सामुहिक राई प्रतिक्रमण की स्थापना की गई। राई प्रतिक्रमण को लेकर श्री संघ में बहुत उत्साह है। संघ के प्रमुख ट्रस्टी श्री बकुलभाई को संरक्षक बनाया गया है।

स्मरणीय है कि पुज्य मुनिश्री विरक्त सागरजी द्वारा सन् 2009 के कांदिवली चार्तुमास में श्री वासुपूज्य स्वामी राई प्रतिक्रमण मंडल की सर्व प्रथम स्थापना की गई थी तत्पश्चात पूज्यश्री ने चैन्नई, अहमदाबाद,सूरत,बड़ोदा,म.प्र.के बड़नगर, बदनावर, आगर, डग, झाबुआ एवं मुंबई के उपनगरों में 50 राई प्रतिक्रमण मंडलों की स्थापना का कीर्तिमान बनाया है इनमें सैकड़ें भाग्यशाली नियमित रूप से प्रतिक्रमण कर रहे है। इसी प्रकार शत्रुंजय महातीर्थ की भावयात्रा की 70 हजार से अधिक कापियां वितरित की जा चुकी है। विश्व के कई देशों में भेजी गई है एवं हजारों भाग्यशाली प्रतिदिन नियमित रूप से दादा की भाव यात्रा करके दादा के आर्शीवाद प्राप्त कर रहे हैं।

चूंकि प्रतिक्रमण करना परमात्मा की आवश्यक आज्ञा है जिसे जैन धर्म के चारों पक्ष मानते है इसलिये पूज्यश्री अपने प्रवचन में प्रतिक्रमण पर विशेष जोर देते है, कारण प्रतिक्रमण मोक्ष का द्वार है, प्रतिक्रमण मोक्ष जाने का राजमार्ग है जो व्यक्ति प्रतिक्रमण से जितना दूर मोक्ष से उतना ही दूर है। अतः मोक्षार्थी को प्रतिक्रमण करना अत्यन्त आवश्यक है।

पूज्यश्री द्वारा 51 वें श्री शीतलनाथ राई प्रतिक्रमण मंडल की ज्ञान मंदिर दादर में स्थापना की है एवं आगे प्रयास चालू है।

मुनिश्री विरक्तसागरजी चैत्री ओली की आराधना लेजेण्ड पेलेस (वालकेश्वर) मुंबई में करायेंगे

मुंबई- आ.श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी के शिष्य रत्न 51 राई प्रतिक्रमण मंडल के प्रेरक पुखर प्रवचनकार मुनि श्री विरक्त सागरजी ठाणा-2 ने, लेजेण्ड पेलेस वालकेश्वर-मुंबई श्री संघ की चैत्री मास की शाश्वत ओलीजी कराने की विनंती स्वीकार की है। तद्‌नुसार 3 अप्रेल से 11 अप्रेल तक पुण्य श्री चैत्री ओलीजी की आराधना केजेण्ड पेलेस संघ में करवायेंगे। प्रातः आराधना की क्रिया, प्रवचन, सामुहिक आयंबिल, प्रतिक्रमण कराये जावेंगे। प्रवचन में पूज्यश्री श्रीपाप के रास के साथ प्रतिदिन के पद का विस्तृत विवेचन अपनी रौचक शैली में करेंगे। 12 अप्रेल को समस्त तपस्वियों का पारणा एवं बहुमान किया जावेगा। पूज्यश्री की स्वीकृति से संघ में हर्ष व्याप्त है।

ध्वजारोहण पर जिनेन्द्र भक्ति महोत्सव मना

तिरूप्पुर- श्री पार्श्व कुशत जैन सेवा ट्रस्ट के संयोजन में श्री शंखेश्वर पार्श्व नाथ जिनालय एवं जिनकुशल दादावाड़ी की द्वितीय वर्षगांठ पर ध्वजारोहण पर जिनेन्द्र भक्ति महोत्सव का आयोजन किया गया। 3 फरवरी को आयोजित कार्यक्रम में 18 अभिषेक का आयोजन 2 फरवरी को किया गया। 3 फरवरी को ध्वजा का वरघोड़ा निकला इसके बाद ध्वजारोहण हुआ। दादा गुरू की महापूजन भी पढ़ाई गई। अंतर्राष्ट्रीय जैन विधिकारक भाई मनोजकुमार बाबूमलजी हरण के मार्गदर्शन प्रेरणा से कार्यक्रम हुआ।

मणी लक्ष्मी तीर्थ का अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव भव्य रूप से मनाया गया

माणेज- तारापुर चौकड़ी के पास नवनिर्मित मणी लक्ष्मी तीर्थ का अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव भव्य रूप से विगत दिनों मनाया गया। पूज्य आचार्यश्री पुण्यानंद सूरीजी म.सा.,पू.आचार्य श्री युगभूषण विजयजी म.सा.आदि साधु-साध्वी भगवंतों की पावन निश्रा में आयोजित अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव 9 से 23 फरवरी तक मनाया गया। .

इस अवसर पर परमात्मा के पंच कल्याणक की जोरदार मंचीय प्रस्तुतियां भी हुई। परमात्मा की प्रतिष्ठा 24 फरवरी को हुई। परमात्मा निर्वाण कल्याणक पर 208 अभिषेक का आयोजन किया गया। विजय मुहूर्त पर वृहत्त 108 अष्टोत्री शांतिस्नात्र महापूजन पढ़ाई गई। 25 फरवरी को द्वारोद्‌घाटन के बाद सत्तर भेदी पूजन पढ़ाई गई।

बनकोड़ा में आचार्यश्री विमल प्रद्युम्नसूरीजी ने अजितनाथ जिनालय की प्रतिष्ठा करवाई

बनकोड़ा- डूंगरपुर जिले के इस धर्मिष्ठ नगर में नवनिर्मित श्री अजितनाथ परमात्मा के जिनालय का प्रतिष्ठा महोत्सव आ. श्री विमल प्रद्युम्नसूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में सम्पन्न हुई। प्रतिष्ठा महोत्सव विगत दिनों 25 फरवरी से 1 मार्च तक मनाया गया। इस अवसर पर विविध धार्मिक कार्यक्रमों के साथ महापूजन पढ़ाई गई एवं संध्या भक्ति का आयोजन भी किया गया। 1 मार्च को धूमधाम के साथ प्रतिष्ठा की क्रियाविधि आचार्यश्री ने पूर्ण करवाई। 2 मार्च को प्रातः द्वारोद्‌घाटन तथा सत्तरभेदी पूजन का आयोजन किया गया।

मादोल में दादाश्री सुमतिनाथ जिनालय की प्रतिष्ठा जैनाचार्य श्री रविशेखरसूरीजी ने करवाई

मादोल- आबुरोड़ राजस्थान के करीब मादोल नगर में दादा श्री सुमति नाथ प्रभु जिनालय का प्रतिष्ठा महोत्सव जैनाचार्य श्री रविशेखरसूरीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में सम्पन्न हुई। 12 से 18 फरवरी तक आयोजित कार्यक्रम में अयोध्यानगरी तथा भारत चक्रवर्ती भोजन मंडप बनाये गये थे। 12 फरवरी को कु. दीपिका का प्रवज्या महोत्सव भी सम्पन्न हुआ। विविध धार्मिक कार्यक्रम, महापूजन आदि के साथ प्रतिष्ठा महोत्सव में भव्य रथयात्रा का आयोजन 16 फरवरी को किया गया। मांगलिक प्रतिष्ठा 17 फरवरी को शुभ लग्नांश वेला में पूज्य जैनाचार्यश्री के द्वारा कराये गये विधि विधान के साथ सम्पन्न हुई। 18 फरवरी को द्वारोद्‌घाटन हुआ। सत्तरभेदी पूजन पढ़ाई गई।

गुमास्तानगर मंदिरजी में ध्वजारोहण हुआ

इंदौर-श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ श्वेतांबर मंदिर की 18 वीं ध्वजारोहण का आयोजन 3 फरवरी को किया गया। इस अवसर पर ध्वजा का जुलुस निकाला गया इसके बाद ध्वजा चढ़ाई गई। श्री पार्श्व पंच कल्याणक पूजन भी पढ़ाई गई।

पंन्यास श्री वैराग्यसागरजी का केरल विहार

व्हाटस्अप से- पूज्यपाद आचार्य देवेश मालव भूषण गुरूदेव श्री नवरत्न सागर सूरीश्वरजी म.सा.के सुशिष्य पंन्यास श्री वैराग्यसागरजी म. का बैंगलोर में सफल चार्तुमास कर शेषकाल में धर्म प्रभावना के लिये केरल प्रांत में विहार कर रहे है। आपश्री ने स्थान-स्थान पर शासन प्रभावना का डंका बजाया। आपश्री का आगामी चार्तुमास कर्नाटक प्रांत में होने की संभावना है।

आचार्यश्री हैदराबाद पहुंचे

हैदराबाद- पूज्यपाद मालव भूषण गुरूदेव आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराज के पट्‌टधर सुशिष्य मालव विभूति आचार्यदेव श्री अपूर्वमंगल रत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा आदि ठाणा एवं पूज्य साध्वी श्री सुरेखाश्री म.सा. आदि ठाणा का विहार शातापूर्वक चल रहा है। आपश्री फरवरी के प्रथम सप्ताह में हैदराबाद पहुंचे, यहां से आपश्री नागपुर होते हुए मालवा पधारेंगे। आपश्री का आगामी चार्तुमास मालवा में ही होने की संभावना है।

260 अजैन बच्चों को गिरिराज यात्रा करवाई

पालीताना- पूज्य पंन्यास प्रवर श्री विरागसागरजी म.सा.की पावन निश्रा में श्री महावीर जैन सोश्यल ग्रुप-सूरत के द्वारा 260 अजैन बच्चों अब दृढ़ता से जैनत्व का पालन कर रहे है, ऐसे सभी बच्चों को एक साथ श्री शत्रुंजय महातीर्थ की पावन यात्रा करवाई गई इसके साथ ही पालीताना में विराजित सुविशालसागर समुदाय के गच्छाधिपति जिनागम सेवी आचार्य भगवंत पूज्यपाद दौलतसागर सूरीश्वरजी महाराजा के दर्शन वंदन का लाभ भी बच्चों ने प्राप्त किया।

आगम मंदिर-पालीताना में 130 जिनालय की अंजन-प्रतिष्ठा सागर गच्छाधिपति की निश्रा में हुई

- ❊ **75 वर्ष संयम के आराधक है गच्छाधिपतिजी।**
- ❊ **महोत्सव-25 फरवरी से 7 फरवरी तक चला।**
- ❊ **13 आचार्य भगवंतों की उपस्थिति रही।**
- ❊ **आगम मंदिर आगमोद्धारकश्री के हस्ते स्थापित है।**
- ❊ **पंच कल्याणक की अच्छी प्रस्तुति हुई।**
- ❊ **पंन्यास श्री विवेकचंद्रसागरजी भी आचार्य बनाये गये।**
- ❊ **भाविका बहन ने संयम ग्रहण किया।**

पालीताना-आगम मंदिर पालीताना में 13 आचार्य भगवंतों और सैकड़ें साधु-साध्वी भगवंतों की पावन निश्रा में 130 जिनबिंबों की मंगल प्रतिष्ठा उत्साह से वातावरण में सम्पन्न हुई। सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति की पावन निश्रा में सम्पन्न हुए इस भव्य अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव में आचार्य पद प्रदान-दीक्षा और अनेक चार्तुमास की घोषणा भी हुई। 25 जनवरी से आरंभ हुए अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव में परमात्मा के पंच कल्याणक की जोरदार मंचीय प्रस्तुति हुई। 5 फरवरी को दीक्षा कल्याणक पर भव्य रथयात्रा का आयोजन किया गया। प्रतिष्ठा 6 फरवरी को धूमधामपूर्वक सम्पन्न हुई। 7 फरवरी को द्वारोद्घाटन हुआ एवं सत्तरभेदी पूजन पढ़ाई गई। प्रतिष्ठा के उपरांत श्री अष्टोतरी शांति स्नात्र महापूजन पढ़ाई गई।

निश्रादाता आचार्यश्री के नाम

पवित्रता के महासागर-76 वर्षीय सुदीर्घ संयम पर्यायी जिनागम सेवी वर्तमान गच्छाधिपति पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी महाराज प्रशांतमूर्ति अज्ञातशत्रु पूज्यपाद आचार्य देव श्रीनंदिवर्धनसागर सूरीश्वरजी महाराज, सरल स्वालंबी वयनसिद्ध पूरूष पूज्यपाद आचार्यदेव श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराज, सिंहगर्भनाना स्वामी जंबुद्वीप संरचना मार्गदर्शक पूज्यपाद आचार्यदेव श्री अशोकसागर सूरीश्वरजी महाराज, भक्तियोगाचार्य पूज्यपाद आचार्यदेव श्री जिनचंद्रसागर सूरीश्वरजी महाराज, प्रवचन प्रभावक पूज्यपाद आचार्यदेव श्री हेमचन्द्रसागर सूरीश्वरजी महाराज, सराकन्नति हितचिंतक पूज्य पाद आचार्यदेव श्री चन्द्रशेखरसागर सूरीश्वरजी महाराज, शासन प्रभावक पूज्यपाद आचार्यदेव श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी महाराज, तपस्वी रत्न पूज्य पाद आचार्यदेव श्री जयरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराज, वाणी के जादूगर पूज्यपाद आचार्यदेव श्री श्रुतरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराज, विद्धर्य पूज्यपाद आचार्यदेव श्री अक्षयचन्द्रसागर सूरीश्वर जी महाराज, कार्यकुशल पूज्यपाद आचार्यदेव श्री सौम्यरत्नसागर सूरीश्वर जी महाराज, व्यवहारकुशल पूज्यपाद आचार्यदेव श्री मतिचन्द्रसागर सूरीश्वरजी महाराज आदि के साथ परम पूज्य पंन्यास गणि भगवंतों, गणिवरों, मुनिवरों तथा साध्वीजी ने पावन निश्रा प्रदान की।

श्री पार्श्वमणी तीर्थ से ध्वजारोहण हुआ

पेद्दतुम्बालम्- ओदीनी के समीप स्थित सुप्रसिद्ध तीर्थ श्री पार्श्वमणी में श्री पार्श्वमणि दादा के जिनालय का 9 वां ध्वजारोहण महोत्सव पूज्य साध्वी सुलोचना श्री म.सा.आदि ठाणा की पावन निश्रा में 21 फरवरी को मनाया गया। शासनरत्न श्री मनोजकुमार बाबूमलजी हरण के मार्गदर्शन-प्रेरणा से सम्पन्न इस कार्यक्रम श्री रखबदासजी पूनमचंद्रजी संघवी परिवार ने लिया। 26 फरवरी को यहां दादा गुरू मेला भव्य रूप से आयोजित किया गया। 29 अप्रेल को वर्षीतप पारणा का आयोजन भी होने जा रहा है।

देव-देवी गुरू मंदिर का भूमिपूजन हुआ

अइसीकेरे-श्री संकटमोचन पार्श्व भैरवधाम में देवी पद्मावती, नाकोड़ा भैरव एवं योगीराज श्री शांतिसूरीजी महाराज के मंदिर निर्माण के लिये भूमि-पूजन, खनन मुहूर्त के अवसर पर 999 जोड़ें के साथ श्री नाकोड़ा पार्श्वभैरव महा पूजन का आयोजन किया गया। 13 मार्च को विजय मुहूर्त में महापूजन पढ़ाई गई एवं संध्या भक्ति का आयोजन हुआ। 14 मार्च को मंदिरजी का भूमिपूजन तथा खनन मुहूर्त हुआ। शासनरत्न श्री मनोज कुमार बाबुमलजी हरण के मार्गदर्शन प्रेरणा से सम्पन्न हुए। इस आयोजन में आपने विधि विधान के साथ जोरदार रूप महापूजन पढ़ाई गई।

अनुयोगाचार्य श्री वीररत्नविजयजी का 64 वां जन्मोत्सव जिनभक्ति के साथ मनाया गया

चौमेहला- मालवा में प्रभावी जिन शासन प्रभावना करनेवाले पूज्य अनुयोगा चार्य श्री वीररत्नविजयजी म.सा. का 64 वां जन्मोत्सव जिनभक्ति के साथ चौमेहला में बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया। 1 मार्च को आयोजित भव्य समारोह में 27 फरवरी को श्री उवसंग्गहरम् महा पूजन पढ़ाई गई। 28 फरवरी को श्री गौतम स्वामी महापूजन हुई। रात्री में भक्ति संध्या का आयोजन किया गया। 1 मार्च को जन्म दिन समारोह पर भव्य रथयात्रा निकाली गई। विशाल धर्मसभा और कामली अर्पण की गई। 2 मार्च को चौमहला में श्री नागेश्वर तीर्थ का छःरि पालित संघ का आयोजन कटारिया परिवार ने किया।

पूज्यश्री के आगामी कार्यक्रमः-

✻ 17 अप्रेल से 21 अप्रेल को श्री शिवपुर (मातमौर) महातीर्थ में श्री वीरमणि नागेश्वर पार्श्वनाथ परमात्मा की (84 इंच) अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव होगा

✻ 29 अप्रेल (अक्षय तृतीया) को श्री शिवपुर (मातमोर) महातीर्थ में साध्वीजी श्री अमिझराश्रीजी म.सा. तथा साध्वीजी श्री स्नेहझरा श्रीजी म.सा. का वर्षीतप का पारणा होगा।

✻ 30 अप्रेल को श्री शिवपुर (मातमोर) महातीर्थ में श्री त्रिभुवनभानु पार्श्वनाथ जिनालय का ध्वजारोहण होगा।

✻ 1 मई को श्री हाटपिपल्या नगर में मूलनायक परमात्मा के परिकर की भव्य प्रतिष्ठा अनुयोगाचार्य श्री वीररत्न विजयजी म.सा. की आराधना धाम का पावन उद्घाटन किया जावेगा।

✻17 मई को श्री डबलचींकी नगर में श्री नमीनाथ जिनालय का ध्वजारोहण डाँगी आराधना भवन तथा अनुयोगाचार्य प्रवर श्री वीररत्न विजयजी व्याख्यान हॉल का उद्घाटन किया जावेगा।

श्री उवंसग्गहरम् तीर्थ मंदिरजी वर्षगांठ एवं संयम जीवन की 51 वीं वर्षगांठ महोत्सव

वेजलपुर- श्री उवसंग्गहरम् तीर्थ की वर्षगांठ एवं आचार्य श्री निरंजनसागर सूरीजी म.सा.के संयम जीवन के 51 वर्ष प्रवेश पर श्री द्वादशान्हिका महोत्सव का आयोजन किया गया। महोत्सव में नौ महापूजन पढ़ाई गई। पूज्य आचार्यश्री अशोकसागर सूरीश्वरजी म.सा.की पावन निश्रा में यह आयोजन सम्पन्न हुआ। 17 फरवरी से आरंभ हुआ महोत्सव 1 मार्च को पूर्ण हुआ। आचार्यश्री के संयम जीवन के 51 वें वर्ष में प्रवेश पर 18 फरवरी को श्री गौतमस्वामीजी महापूजन पढ़ाई गई। महोत्सव के अंतर्गत श्री मणिभद्र महापूजन, हवन, संयम उपकरण वंदना वली, सिद्धचक्र महापूजन, श्री भक्तामर महापूजन पढ़ाई गई। 1 मार्च को श्री उवसंग्गहरम् पार्श्वनाथ तीर्थ की 14 वीं वर्षगांठ पर ध्वजा वरघोड़ा निकाला गया। महोत्सव में प्रतिदिन परमात्मा की भव्य आंगी हुई साथ ही रंगोली, 45 आगम प्रदर्शनी आदि आयोजन भी हुए।

गणि से पंन्यास पद पहुंचे उदयरत्नविजयजी

सूरत- पूज्य गच्छाधिपति आचार्य देव श्री अभयदेवसूरीजी म.सा.,आचार्य श्री रत्नचंद्रसूरीजी म.सा. के शिष्य श्री उदयरत्नविजयजी की गणि से पंन्यास पद पर आरूढ़ किया गया।

श्री अयोध्यापुरम् में ध्वजारोहण हुआ

अयोध्यापुरम्- आचार्य श्री जिनचंद्र सागर सूरीजी, गणिवर्य श्री आनंदचंद सागरजी, पद्मचंद्रसागरजी, प्रसन्नचंद्र सागरजी म.सा.आदि ठाणा के साथ 17 फरवरी को तीर्थ की ध्वजा चढ़ाई गई। वर्षभर के अष्टप्रकार की पूजन के चढ़वे भी हुए। ध्वजा सेठ चंदुलाल केशवजी वोरा परिवार ने चढ़ाई।

ॐकार तीर्थ में ध्वजारोहण हुआ

पद्मला- बड़ोदा जिले में स्थित ॐकार तीर्थ की 14 वीं ध्वजारोहण का कार्यक्रम 13 फरवरी को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रातः 18 अभिषेक पूजन भी हुई। 10 मार्च को पूज्य आचार्यश्री पुण्यानंदसूरीजी महाराजा की निश्रा में ॐकारतीर्थ में फागण फेरी का आयोजन भी किया गया। चैत्र मास की ओली आराधना का आयोजन भी होगा।

केवल्यधाम में जिनेन्द्र भक्ति महोत्सव मना

कुम्हारी- श्री आदिनाथ जैन श्वेतांबर तीर्थ केवल्यधाम में 9 वीं वर्षगांठ पर जिनेन्द्र भक्ति महोत्सव का आयोजन दिनांक 20 एवं 21 फरवरी को किया गया। 20 फरवरी को 18 अभिषेक का आयोजन किया। 21 फरवरी को सत्तरभेदी पूजन के बाद सभी मंदिरों पर ध्वजा चढ़ाई गई। पू. आचार्यश्री पूर्णानंद सागरसूरीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में कार्यक्रम हुआ। 21 मार्च को प्रभुश्री आदिनाथ दादा का जन्म एवं दीक्षा कल्याणक महोत्सव मनाया जायेगा। 29 अप्रेल को वर्षीतप के पारणे भी होंगे।

हमारे तीज-त्यौहार

1-फाल्गुन सुदी-3	बुधवार	1-3-2017	श्री सिमंधर स्वामी आदि का दीक्षा कल्याणक
2-फाल्गुन सुदी-6	शनिवार	4-3-2017	अट्ठाई आरंभ
3-फाल्गुन सुदी-8	रविवार	5-3-2017	रोहिणी होलाष्टक आरंभ
4-फाल्गुन सुदी-13	शुक्रवार	10-3-2017	श्री सिद्धचल की छः गांव की प्रदक्षिणा
5-फाल्गुन सुदी-14	शनिवार	11-3-2017	चौमासा चवदस
6-फाल्गुन सुदी-15	रविवार	12-3-2017	शिखरजी में भौमलियाजी महाराज का उत्सव
7-चैत्र वदी-2	मंगलवार	14-3-2017	मीर्नाक कुमुहर्ता
8-चैत्र वदी-3	बुधवार	15-3-2017	पूज्यपाद मालव भूषण गुरूदेव आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा का जन्मदिन
9-चैत्र वदी-8	मंगलवार	21-3-2017	श्रीऋषभदेव प्रभु का जन्मदीक्षा कल्याणक वर्षीतप आरंभ

पुष्प नक्षत्र- आरंभ-फाल्गुन सुदी-11 बुधवार, दिनांक 8/3/2017 समयः- 17.40 बजे
समाप्त-फाल्गुन सुदी-12 गुरूवार, दिनांक 9 /3/2017 समयः- 17.13 बजे

श्री भवानीमण्डी में ध्वजारोहण हुआ

भवानीमंडी- श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ जिनालय की 75 वीं ध्वजा पर पंचान्हिका महोत्सव का आयोजन 2 से 7 मार्च तक किया गया। पूज्य ज्योतिर्विध आचार्य श्री जिनरत्नसागर सूरीश्वरजी ओली आराधक आचार्य श्री चन्द्ररत्नसागर सूरीजी, साध्वी श्री गुणरत्ना श्रीजी आदि ठाणा के साथ में साध्वी नम्रव्रताश्रीजी आदि ठाणा के पावन निश्रा में आयोजित कार्यक्रम में 18 अभिषेक श्री अष्टोत्तरी शांति स्नात्र महापूजन, उवसग्गहरमं महापूजन के आयोजन किये गये। 7 मार्च को परमात्मा ध्वजा की रथयात्रा निकाली गई एवं ध्वजारोहण किया गया। इस अवसर पर सकल जैन श्री संघ का सधार्मिक वात्सल्य किया गया। महोत्सव में बड़ी संख्या में धर्मिष्ठों ने भाग लिया।

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

''आगमोद्धारक'' अप्रेल माह का अंक ''श्री महावीर जन्म कल्याणक'' विशेषांक होगा, आप अपनी रचनाएं संपादकीय कार्यालय भेजिये।

सादर आमंत्रण

✻पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चातुर्मास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें। ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सके।

✻आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

✻पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव,मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

✻अंक आपके तक नियमित रूप से नवीन स्वरूप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक